# मिथिलाक संक्षिप्त राजनैतिक इतिहास

( प्राचीन कालसँ अद्यपर्यन्त )

प्रोफेसर श्री राधाकृष्ण चौधरी
एम. ए., एफ. आर. ए. एस. ( लंदन )
अध्यक्ष
गणेशदत्त कालेज, बेगूसराय

वैदेही-समिति
दरभंगा

सूची

# मिथिला



हिमालय
बगहा
रक्सौल
बेतिया
संयुक्त प्रदेश
चम्पारन
मोतिहारी
जनकपुर
जयनगर
नेपाल
सिलीगुड़ी
दार्जिलिंग
गोपालगंज
मधुबनी
दरभंगा
फारबिसगंज
किसनगंज
सिवान
सारन
सुपौल
मुजफ्फरपुर
समस्तीपुर
सहरसा
पूर्णिया
छपरा
बलिया
मधेपुरा
कटिहार
बेगूसराय
मुंगेर
आरा
दानापुर
पटना
बक्सर
गंगा नदी
जमालपुर
भागलपुर
बिहार
पिपरी
शाहाबाद
जहानाबाद
गया
ससराम
नवादा
औरंगाबाद
संथाल परगना
मधुपुर
दुमका
गिरिडीह
बरही
चतरा
हजारीबाग
साहबगंज
राजमहल
मालदह
गोड्डा
डाल्टेनगंज

# प्रस्तावना

मित्रवर श्रीकृष्णकान्तमिश्रजीक आग्रह भेल जे हम एकटा मिथिलाक इतिहास अपन मातृभाषामे लिखी। मिथिलाक सर्वांगीय इतिहास लिखब साधारण विषय नहि, तथापि हम जे दुस्साहस कएल से केवल अपन मित्रक आग्रहक सम्मान करबा लेल। मिथिलाक इतिहास एखनो धरि पूर्णरूपेण सर्वाङ्गीन दृष्टिकोणसँ नहि लिखल गेल अछि। मिथिलाक इतिहासक स्वरूप केहन होमक चाही तकर बिशद् विश्लेषण हम प्रथम अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलनमे अपन अध्यक्षीय भाषणमे कएने छी। जा धरि ओहि रूपेँ मिथिलाक इतिहास मातृभाषामे लिखल नहि जाएत ताधरि हम अपन विचारकेँ दिवा स्वप्ने मात्र बुझब। मिथिलामे विद्वानक अभाव नहि, अभाव अछि मात्र यथेष्ट प्रयत्नक। एखन धरि मिथिलाक इतिहासपर मात्र तीन-चारि गोट पुस्तक अछि :

(१) श्रीउपेन्द्रठाकुरक 'हिस्ट्री ऑफ मिथिला' जकर दोसर भाग अप्रकाशित अछि;

(२) एस० एन० सिंह : हिस्ट्री ऑफ तिरहुत।

(३) श्रीकृष्णकान्तमिश्र : मिथिलाक इतिहास।

(४) हमर 'हिस्ट्री ऑफ बिहार' मे मिथिलाकेँ यथोचित स्थान देल गेल छैक आओर तकर अतिरिक्त प्रायः ५० टा लेख मिथिलाक इतिहास आओर संस्कृतिपर भारतवर्षक विभिन्न शोध-पत्रिकामे छपल अछि।

(५) हमर 'हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत' आओर;

(६) मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास शीघ्रे प्रकाशित होमएवाला अछि;

(७) महामहोपाध्याय डा० श्रीउमेशमिश्र : मैथिल संस्कृति आओर सभ्यता; बड़ सुन्दर सामाजिक ग्रन्थ छपल अछि।

(८) डा० श्रीलक्ष्मणझाक इतिहास एखन धरि अप्रकाशिते अछि। मैथिली साहित्यक सम्बन्धमे डा० श्रीसुभद्रझाक 'फारमेशन ऑफ दी मैथिली लैंग्वेज' डा० श्रीजयकान्तमिश्रक 'मैथिली लिट्रेचर' आर प्रोफेसरश्रीकृष्णकान्तमिश्रक 'मैथिली साहित्यक इतिहास' स्तुत्य ग्रन्थ भेल अछि। मिथिलाक बिशाल सांस्कृतिक परम्पराकेँ ध्यानमे रखला उत्तर ई सब ग्रन्थ समुद्रमे एकाध ठोप मात्र बुझना जाइत अछि।

प्रस्तुत ग्रन्थमे मिथिलाक संक्षिप्त राजनीतिक इतिहास मात्र भेटत। एहि थोड़ेक पृष्ठमे सम्पूर्ण मिथिलाक राजनीतिक इतिहास प्रस्तुत करबाक दुस्साहस हम कएल अछि। शोधकर्त्ताक हेतु फुटनोटमे यथासम्भव साधन सबहिक उल्लेख कएल गेल अछि। गुणग्राही लोकनिक कृपाक अपेक्षा कामना करितहि ई साधारण ग्रन्थ हम विद्वान लोकनिक समक्ष प्रस्तुत करबाक प्रयोजन बुझल। त्रुटिक लेल एकमात्र दोषी हम स्वयं आर एकरामे जँ कोनो नीक बात होइ तेँ ओकर श्रेय ओहि महाजन लोकनिकेँ जनिका चरणमे हम वैसि हम कहिओ एको आखर ज्ञान प्राप्त कएल। पुस्तक हमरा सन अहदी व्यक्तिसँ लिखाए लेबाक श्रेय कृष्णकान्तबाबूकेँ, तैँ हुनका प्रति हम कृतज्ञ छी। आभारी छी आर रहब हम अपन अनुज सदृश श्रीविनोदक जे अपन कष्टकेँ आनन्द बूझि एकर पाण्डुलिपि तैयार कए हमरा कृतार्थ कएलैन्हि। नतमस्तक छी ओहि महारथी लोकनिकेँ जे एहिसँ पूर्व एहि क्षेत्रमे बहुतो काज कए चुकल छथि। पाठक लग क्षमा-याचनाक हेतु प्रार्थी छी।

आरदरा

१९६०

विनीत

राधाकृष्णचौधरी

# मिथिलाक संक्षिप्त राजनीतिक इतिहास

## ( प्राचीन कालसँ अद्यपर्यन्त )

प्रोफेसर श्री राधाकृष्ण चौधरी

वैदिके युगसँ मिथिला आर्य संस्कृति एवं सभ्यताक केन्द्र रहल अछि। प्राच्यमे वैदिक सभ्यताक प्रसार सर्वप्रथम एहीठाम भेल छल। पुराणे सभसँ एकर प्राचीन इतिहास ज्ञात होइत छैक। इतिहासपर प्रकाश देबासँ पूर्व मिथिलाक सीमा निर्धारित कए लेब उचित होएत। एकर सीमा उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा, पूर्वमे कौशिकी आओर पश्चिममे गण्डकी धरि विस्तृत छलैक[1]। नदीक प्रधानता हैबाक कारणहि मिथिलाकेँ तीरभुक्ति सेहो कहल गेल छैक[2]। प्राचीन मिथिलामे आधुनिक दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मोतिहारी, उत्तर भागलपुर, पूर्णिया, उत्तर मुङ्गेर, एवं नेपालक दक्षिण भाग सम्मिलित छलैक। तीरभुक्ति नाम होएबाक निम्नलिखित कारण वर्णित छैक[3]।

---

१. बृहद्विष्णुपुराण ( मिथिला-खण्ड ) :

गंगा हिमवतोर्मध्ये नदी पञ्च दशान्तरे।
तैरभुक्तिरिति ख्यातो देशः परम पावनः ॥
कौशिकीन्तु समारभ्य, गण्डकीमधिगम्यवैं।
योजनानि चतुर्विंशत् व्यायामः परिकीर्तित्तः ॥

आओर देखू—मैथिलकवि चन्दाझाक :

गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिशि, पूर्व कौशिकी धारा।
पश्चिम बहथि गंडकी, उत्तर हिमवत बल विस्तारा ॥

आओर देखू—डा॰श्रीउपेन्द्रठाकुरक History of Mithila

२. गंगानन्द-भृङ्गदूत—गंगातीरावधिरधिगता यद्भुवो भृङ्गभुक्तिर्नाम्ना सैव त्रिभुवनतले विश्रुता तीरभुक्तिः।

एवं देखू—शक्तिसंगम् तंत्र—गण्डकीतीरमारभ्य चम्पाख्यान्तकं
शिवे विदेहभूः समाख्याता तीरभुक्तिभिधो मनुः ॥

३. रास बिहारी दास—मिथिला-दर्पण पृ॰ ७।

(क) शाम्भकी, सुवर्ण कानन एवं तपोवनसँ भुक्तमान होएबाक कारण ई तीरभुक्ति कहाओल।

(ख) कौशिकी, गंगा आओर गण्डकीक तीर धरि एकर सीमा छलैक, अतः एकरा तीरभुक्ति कहल गेलैक।

(ग) ऋक्, यजु आओर साम तीनहुक वेद सभसँ आहुति देबऽवला ब्राह्मण समूहक निवाससँ त्रि-आहुति[४] अर्थात् तिरहुतक नामसँ प्रसिद्ध भेल।

ऐतिहासिक दृष्टिकोणसँ 'भुक्ति' शब्दक प्रयोग तेँ विशेष कए गुप्तयुगसँ प्रारम्भ भेल अछि। 'भुक्ति' शब्दसँ प्रान्तक बोध होइत छलैक। प्राचीन वैशाली (बसाढ़) क उत्खननमे ब्लौच[५] साहेबकेँ गुप्त-युगक अनेक किछु सामग्री प्राप्त भेलैन्ह, जाहिसँ तत्कालीन इतिहास एवं 'तीरभुक्ति' नामपर वेश प्रकाश पड़लैक अछि। गुप्त-साम्राज्यक समयमे मिथिला 'तीरभुक्ति' प्रान्तक नामसँ प्रसिद्ध छल। प्राचीन कालमे मिथिलाक राजधानी जनकपुर छलैक। प्राचीन कालमे मिथिला सएह नाम छलैक। बाल्मीकि रामायण एवं अन्य प्राचीन ग्रन्थ सभमे तीरभुक्ति नाम नहि पाओल जाइत छैक। प्राचीन समयसँ तीरभुक्ति वा मिथिलासँ सम्पूर्ण उत्तर बिहार बुझल जाइत छलैक।

वैदिक युगमे निम्नलिखित प्रधान आर्य-केन्द्र छल—काशी, कोशल आओर विदेह। मगध आओर अङ्ग आर्य-संस्कृतिसँ फराक छलैक आओर ओहिठामक निवासी व्रात्य बुझल जाइत छलैक। व्रात्य[६]क अर्थ होइत छैक पतित। प्राच्यक सबटा आर्य-केन्द्र सबमे विदेह सर्व प्रधान छल। शतपथ-ब्राह्मणमे विदेहक कथा छैक जाहिसँ ई ज्ञात होइत छैक जे कोन प्रकारेँ

---

४. लामा तारानाथक उल्लेखमे 'तिराहुति' शब्द भेटैत अछि—प्रायः ओकरा कालधरि त्रि-आहुति 'तिराहुति' भऽ गेल हेतैक।

५. Annual report of the Archaeological Survey of India, 1903–4 p. 101–2; Ibid 1913-14, p. 125, 137, 150, 153.

६. J. C. Hauer, Der Vrātyas, (Germany) 1927; आओर देखू-हमर पुस्तक The Vrātyas in Ancient India आओर History of Bihar.

प्राच्यमे आर्य-संस्कृतिक विस्तार भेल। एहि घटना-विवरण सभमे ऐतिहासिक तथ्य कतेक छैक, ई कहब कठिन। राजा इक्ष्वाकुकें पुरंजय एवं निमि नामक दुइ गोट पुत्र छलथिन्ह। पुरंजय अयोध्याक आओर निमि मिथिलाक राज्य ग्रहण कएलैन्ह। एक बेर निमि महाराजकें यज्ञ करबाक उत्कट इच्छा भेलैन्ह आओर ओ गुरू वशिष्ठकें यज्ञ करबाक हेतु निमन्त्रण देलथिन्ह। ओहि समय इन्द्रसं यज्ञ कराबक हेतु वशिष्ठ इन्द्रपुरीक हेतु विदा भऽ गेल छलाह, अतएव निमिक ओतए उपस्थित नहि भऽ सकलाह। तखन अन्य ब्राह्मण सबकें बजा-बजा निमि मोक्षार्थी-यज्ञ प्रारम्भ कएलैन। घुरला उत्तर वशिष्ठ निमिकें एहि हेतु श्राप देलथिन, किन्तु पश्चात् दयार्द्र भऽ ई विचारए लगलाह जे निमिकें अपुत्र मरब नीक नहि हेतनि अतः पुनः ओकरा जीवित करैबाक प्रयास करए लगलाह। गौतम, याज्ञवल्क्य, भृगु, वामदेव, कण्व, अगस्त्य, भार्गव, भारद्वाज इत्यादि ऋषिगण एकत्र भेलाह[७] आओर निमिकें जीवित करैबाक प्रयत्न करए लगलाह। मन्थनसँ जीवित होएबाक कारण, ओकर नाम मिथि राखल गेलैक आओर ओकर नामपर विदेह 'मिथिला' भेल[८]। ओहिठामक राजा 'जनक' आओर 'वैदेह' पदवीसँ विभूषित भेला।

उपनिषद्-कालमे मिथिलाक बौद्धिक प्रतिभा जगलैक आओर एकर प्रसिद्धि खूब बढ़लैक। एक बेर जनक वैदेह अश्वमेध-यज्ञक आयोजन कएलैन जाहिमे कुरु, पांचाल इत्यादि देशसँ अनेक ब्राह्मण आएल छलाह। महाराज जनक सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानीकें अन्वेषण करऽ चाहैत छलाह। जखन केओ नहि

---

७. वृहद्विष्णु-पुराण ( मिथिला-खण्ड ) :

गौतमो याज्ञवल्क्यश्च विश्वामित्रो भृगुस्तथा।

× × ×

शरीरं मन्थनार्थाय सर्वे तत्र समागताः।

८. भागवत-स्कन्ध ९, अध्याय १३३ :

जन्मना जनकः सोऽभूद्वैदेहस्तु विदेहजः।

मिथिलो मथनाज्जातो मिथिलायेन निर्मिता॥

निमि आओर राजा विशालक हेतु देखू हमर लेख—Early History of Vaiśāli, in the Journal of Oriental Studies Vol I Pt. 2 आओर Early History of Mithila in the J B R S, 1952.

भेटलैन्ह तखन याज्ञवल्क्य अपन शिष्य सामश्रवाकें सबटा गाय (जे दान देबाक हेतु छलन्हि) हाँकि लए जेबा लेल कहलथिन्ह। याज्ञवल्क्य तर्कमे सबगोटेकें परास्त कऽ देलथिन। तकर पश्चात् जनक याज्ञवल्क्य सँ ब्रह्म-विद्याक उपदेश पओलनि। आओर तखनसँ याज्ञवल्क्य जनकक राजगुरु बनलाह[९] आओर मिथिलामे ब्रह्मविद्याक केन्द्र स्थापित भेल।[१०] एहि वंशक बाइसम राजा सीरध्वज जनक बड़े प्रतापी भेलाह। अनावृष्टिक कारण हुनका समयमे एक बेर अकाल पड़लैक। ओ एक गोट विशाल यज्ञ कएलैन्ह, जाहिमे हुनका सोनाक हरसँ पृथ्वीकें जोतए पड़लैन। ओही कालमे सीताक आविर्भाव भेलन्हि। सीताक विवाह अयोध्याक राजा दशरथ-पुत्र श्रीरामचन्द्रसँ भेलन्हि। एहि प्रकारक दुनू राष्ट्र मध्य वैवाहिक संधि भेल आओर मिथिलाक प्रभाव अयोध्या धरि बढ़ल। महाभारत युद्धक समयमे मिथिलाक प्रधानता छलैक ई महाभारतसँ ज्ञात होइत छैक। महाभारतमे मिथिलाक राजा क्षेमधूर्तिक उल्लेख छैक।[११] क्षेमधूर्ति दुर्योधनक पक्षमे छला, कियैक तँ पाण्डु एक बेर मिथिलापर आक्रमण कएने छला।[१२] दुर्योधनक सङ्ग देबाक दोसर कारण ई छलन्हि जे भीम सेहो मिथिलामे किछु अन्याय कएने छला।[१३] तेसर कारण ई छलन्हि जे बलभद्र जखन श्रीकृष्णसँ फराक भए मिथिलामे बसि गेल छलाह, तखन दुर्योधन हुनका ओहिठाम गदा सीखबाक हेतु मिथिला आएल छला आओर तहियेसँ मिथिलेश आओर दुर्योधनमे बेश मित्रता भऽ गेल छलन्हि। महाभारत-युद्धक समयमे मिथिलामे विराट[१४]

---

९. सोहं भगवते विदेहान्ददामि, मां चापि दास्यायेति (वृहदारण्यक)

१०. कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।

११. महाभारत (कर्ण-पर्व, अध्याय ५)—तथैव रथिनां श्रेष्ठः क्षेमधूर्तिर्विशाम्पते। स्मरण राखक चाही जे 'विष्णुपुराण' मे मिथिलाक राजा 'क्षेमारी' कहल गेल छथि आर हुनकहि प्रायः भागवतक नवम स्कंधमे 'क्षेमधि' कहल गेल छनि।

१२. ऐजन, आदिपर्व, ११३ अध्याय।

१३. ऐजन, सभापर्व, ३० अध्याय।

१४. दरभङ्गा जिलामे बराटपुर आओर मधेपुरा सबडिभिजनमे (?) बराँटपुर एकर स्थान मानल जाइत छैक। बराँटपुरसँ किछु साबिकक वस्तु सेहो पाओल गेल छैक। एकटा शिलालेख सेहो—देखू हमर Inscriptions of Bihar S. V. 'Mithila Inscriptions'

नेपाल इलाकामे सेहो एकटा विराट नगर छैक।

नामक एकगोट राजा छला । कहल जाइत छैक जे युधिष्ठिर हिनकहि ओतए अज्ञातवास बितौने छला । एही वंशमे कराल जनक नामक एक गोट राजा भेल छला । ओ बड़ अत्याचारी छला, अतः प्रजा हुनका गद्दीसँ हेट कऽ देलकन्हि आओर ओहि दिनसँ ओतए राजतंत्रक अन्त भऽ गेल । कौटिल्यक अर्थ-शास्त्रमे प्रसंगवश ई कहल गेल छैक जे कराल नामक जनक काम-वश ब्राह्मण कन्याकें अभिमनन कएलाक कारणें बन्धु-बान्धव सहित विनष्ट भऽ गेला । पालि-ग्रंथ सभमे एहि अंतिम जनकक नाम कलार लिखल छैक । अश्वघोषक बुद्धचरित[१५] मे सेहो एहि घटनाक उल्लेख अछि । एहि प्रकारेँ विदेहमे प्रजातंत्र स्थापित भेल ।

ताहि समय विदेहक पश्चिम वैशालीमे लिच्छवी नामक जाति बसैत छल । विदेहक राज्यक्रान्तिक पश्चात् बज्जि विदेह संघक राजधानी मिथिलामे नहि भऽ कै वैशालीमे स्थापित भेलैक । विदेह आओर वैशाली राष्ट्रक सीमा प्रायः वाग्मती नदी छलैक । बाग्मती आओर गंडकक मध्यक प्रदेश एखनहु बसारा कहबैत छै ! बसारा मुगलकाल मे एक गोट परगना छलैक ।[१६] वैशालीक लिच्छिवी सभहिक नेतृत्वमे बज्जी संघराज्य पूर्णरूपेण समृद्ध छल । वैशाली ताहि समय समृद्धतम नगर सभमे स्थान रखने छल । ओकर चारू दिशि तेबर घेरा छलैक, जाहि मे स्थान-स्थान पर फट्टक आओर गोपुर (बुर्ज) बनल छलै । बज्जी सबहिक प्रत्येक गामक सरदार राजा कहबैत छल आओर एहि प्रकारक ७७०७ राजा तथा हुनक उपराजा, सेनापति, कोषाध्यक्ष आदिक उल्लेख पाओल जाइत छैक ।

हिनक एक गोट परिषद् छलन्हि, जकर चुनल प्रधान वज्जि-संघक राजा वा राष्ट्रपति होइत छलाह[१७] । अभिषेकक हेतु ओतए 'अभिषेक-मंगल-पुष्करिणी' छलैक । मनुस्मृतिमे लिच्छिवी, विदेह एवं मल्ल जाति सबकेँ व्रात्य कहल गेल छैक, जेकर कारण ई छियैक जे ई सब वैदिक कर्मकाण्डक

---

१५. अश्वघोष–बुद्धचरित ४/८० ।

१६. S. N. Singh–History of Tirhut p. 20.

१७. हमर पूर्वोल्लिखित लेख; एवं देखू Jayaswal, Hindu Polity एवं Vaiśali Abhinandan Granth.

कोनो परवाहि नहि करैत छल। वज्जी संघक प्रधान विदेह-पुत्र चेटक छलैक। ओकर बहिन त्रिशला वैशाली लग कुण्ड-ग्रामक बज्जी सबहिक ज्ञात्रिक[१८] कुशल राज सिद्धार्थसँ ब्याहल गेलि।

त्रिशला आओर सिद्धार्थ पार्श्वक अनुयायी छलाह। हुनका दुइटा पुत्र नन्दिवर्धन आओर वर्धमान छलथिन तथा एक गोट कन्या छलथिन। वर्धमानक रुचि धार्मिक जीवन एवं तत्वचिन्तन दिशि छलैन। तीस बर्षक अवस्थामे ओ घर-वार छोड़ि जंगलक बाट धएलनि। बारह वर्षक कठिन तपश्चरणक पश्चात् वर्धमान केँ ऋजुपालिका नदीक उत्तरी तट पर कैवल्य प्राप्त भेलैन्ह आओर तखन ओ अर्हत् ( पूज्य ), जिन ( विजेता ), निग्रन्थ ( बन्धनहीन ) आओर महावीर कहाओल गेलाह। अर्हत भेलाक पश्चात् वर्धमान कोशल, मगध, विदेह इत्यादि देश सबहिक भ्रमण कए अपन धर्मक उपदेश दैत रहलथिन। मगधक राजा बिम्बसारक रानी चेलना महावीरक बहिन छलथिन। जैन-ग्रन्थ सभमे कहल गेल छैक जे मिथिलामे सेहो वर्धमान अनेक समय बितौलैन। बौद्धो धर्मक प्रभाव एहि क्षेत्रपर पड़लैक। सप्तरी, भाला परगना, बुद्धग्रामं, रत्नपुर-ब्रह्मपुर, विसारा, बेतिया, चम्पारण आर वैशालीमे एहि धर्मक बेश प्रभाव पड़लैक। महात्मा बुद्धक छियालिसम बर्षा-वास वैशालीक निकट एक गोट गाममे वितलन्हि। वैशालीक सम्बन्धेमे बुद्ध राष्ट्रिय उन्नतिक सातटा सिद्धान्तकेँ प्रतिपादन कएलनि। कहल जाइत छैक जे अजातशत्रु आओर लिच्छिवीक सीमारर हिमालयसँ व्यापारी सवहिक कोनो मार्ग अवैत छलैक[१९]। ओत्तहि चुंगीक हेतु दूनू शक्तिमे अनेक वैमनस्य

---

१८. पृथ्वीसिंह मेहता आओर जयचन्द्र विद्यालंकारक मत छन्हि जे आधुनिक विहारक जैथरिया भूमिहार प्रायः ओहि कुलक छथि। राहुल सांकृत्यायनक सेहो एहने मत छन्हि। एहिठाम ई स्मरण रखबाक होएत जे जैन सभ वैशालीकेँ अपन पवित्र स्थान मानैत छथि, परन्तु एखन हालमे श्रीनरेशचन्द्रमिश्रजी अपन लेख सब द्वारा ई सिद्ध करबाक चेष्टा कएलैन अछि जे 'महावीर'क जन्म स्थान 'लछुआड़' छलैन्ह। हुनकहि लेख सवहिक आधारपर प्रस्तुत लेखक प्राच्य महाविद्या सम्मेलन, अहमदाबाद ( १९५३ ) क बैसकमे एकटा लेख लिखलनि अछि। विद्वान सबहिक ध्यान एहि दिशि आकृष्ट होएबाक चाही, कियैक तँ जैनी सबहिक मध्य एखनहु ई समस्या छैक।

१९. बुद्धचर्या–पृ० ५२० ( रा० सांकृत्यायन )

रहैत छलैक आओर अजातशत्रु ( मगधराज ) ओहिमे बेशी हिस्सा लेमय चाहैत छलैक। प्रयत्न कएलो उत्तर जखन अजातशत्रु सफल नहि भेल, तखन ओ आक्रमण करबाक विचार कएलक। जखन बस्सकार बुद्धलग राय लेबाक हेतु गेलै तखन बुद्ध राष्ट्रिय उन्नतिक सात गोट निदान एहि प्रकार देखौलथिन :

(क) वज्जी सबहिक सन्निपात बेर बेर होएब।

(ख) एक भावसँ सभामे एकत्र होएब, मिलिकए उद्यम करब आओर कार्य करब।

(ग) बाकायदा कानून बनौने बिना कोनो आज्ञा लागू नहि करब।

(घ) बनल कानून केँ नहि उल्लंघन करब।

(ङ) यथाविहित पुरान राष्ट्रिय नियमक अनुसार चलब।

(च) बृढ़-बुढ़ानुसक आदर सत्कार करब आओर हुनक सुनबाक योग्य विषयकेँ मानब।

(छ) जातीय मन्दिर सभ ( चैत्य सभ ) क आदर सत्कार करब[२०]।

अजातशत्रु कूटनीतिसँ काज बनौलक आओर वैशालीपर आक्रमण कऽ देलकै। अजातशत्रु वैशालीके ध्वंस कऽ देलकै आओर पश्चात् सम्पूर्ण मिथिला अजातशत्रुक अधीन भऽ गेलनि। अजातशत्रु पाटलिपुत्र सँ वैशाली होइत गंडकक कात-कात कुशीनारा धरि एक गोट सड़क तथा यात्री सबहिक सुविधाक हेतु आराम-गृह बनौलनि[२१]।

मिथिलावासी ताहि समयमे सुवर्णभूमि आओर पूर्वी द्वीप सभ सँ घनिष्ठ एवं सजीव सम्बन्ध रखैत छलाह। ई जातक - कथा सभसँ ज्ञात होइत छैक। एतए मात्र एक गोट कथासँ एकर पुष्टि कएल जा सकैत अछि।

---

२०. बौद्ध-साहित्यमे एहि नियम सबकेँ 'सत्त अपरिहाणि धम्म' कहल गेल छैक। लिच्छिवी सबहिक विषयमे एक बेर बुद्ध कहने छलथिन—ओ भिक्षु सब, तोहरामे जे तावतिंस देवताकेँ नहि देखने होइक लिच्छवी सबहिक एहि परिषद्सँ देखह, लिच्छवी सबहिक एहि परिषद्क आलोचना करह, आओर लिच्छवीक एहि परिषद्सँ तावतिंस देवता सबहिक परिषद्क अनुमान करह। —सर्वप्रथम स्व० जायसवालजी बुद्धक एहि महत्वपूर्ण उपदेश दिशि ध्यान आकृष्ट कएलथिन अछि।

२१. Indian Antiquary Vol. 42, p. 14.

ई कथा विदेहक एक गोट राजकुमार महाजनकक छियैक। विदेहक गद्दीक हेतु दूनू भाइमे संघर्ष भेलनि आओर एकटा भाइ मारल गेला। ओकर गर्भवती विधवा पड़ाए गेलि आओर चम्पा (भागलपुर)मे एक गोट ब्राह्मणक घरमे शरण पओलक। ओहि विधवाक पुत्र महाजनक जखन पैघ भेलैक तखन ओकरा ज्ञात भेलैक जे ओकर पिताकें मारि कें राज-पाट छीनि लेल गेल छैक। ओ अपन राज वापस लेबाक निश्चित केलक किन्तु ताहि हेतु धन चाहैत छल। तें किछु धन माय सँ लऽ क ओ धन कमेबाक हेतु सुवर्णभूमि गेल। कहल जाइत छैक जे बंगालक खाढ़ीमे ओकर जहाज टूटि गेलैक तखन खाड़ीक अधिष्ठात्री देवी मणिमेखला ओकरा अपन कोरमे उठायकें मिथिला पहुँचाए देलकै[२२]।

ऊपर कहल जा चुकल अछि जे अजातशत्रु लिच्छिवी सभहिक ध्वंश कऽ देलकै, किन्तु ओ सब दशक आओर उदयीक समय धरि अपन स्वतन्त्रता संग्रामकें जीवित राखलकै। इएह कारण छलैक जे उदयी अपन पुरान राजधानी राजगृह छाड़ि पाटलिपुत्र नगर बसौलन्हि जाहिसँ गंगापारक लिच्छिवी देश आओर विदेहकें अधिकृत रखबामे सुविधा हो। ओकर उत्तराधिकारी अनिरुद्धक राज्य लिच्छिवी सबहिक सामन्ताकें सोझराबैमे

---

२२. मनु वैशाली विदेहक निवासीकें व्रात्य कहलखिन्ह अछि। विदेहमे सेहो बौद्ध धर्मक बेश प्रचार भेलैक एहिमे सन्देह नहि, कियैक तँ तकर अवशेष जनजीवनमे देखल जा सकैत अछि। बौद्ध-कालमे मिथिला एक गोट प्रसिद्ध व्यापार–केन्द्र छल आओर एहिठामक लोक सब दूर-दूर देश सबमे व्यापारक हेतु जाइत छला। डाक्टर रमेशचन्द्र मजुमदार अपन पुस्तक कम्बुजदेश ( पृ० ६ ) मे ई लिखलैन अछि जे प्राचीनकालमे चीनक यूनान प्रान्त विदेह राज्य कहबैत छलैक आओर ओकर राजधानीक नाम मिथिला छलैक। कखनो-कखनो एकरा मिथिला राष्ट्र सेहो कहल जाइत छलै। चीनी परम्परामे जेकरा नानचाओ कहल गेल छैक, ओकरे थाइ परम्परामे मिथिला राष्ट्र कहल गेल छै [ ऐजन पृ० १०२ ] एहि सँ ई सिद्ध होइत छैक जे प्राचीन मिथिलाक लोक सब यूनान जाकए अपन उपनिवेश बसौने छल। वैशाली, विदेह, मल्ल इत्यादि पैघ - पैघ राज्य सबहिक अतिरिक्त, अंगुतराय नामक सेहो एक गोट जनपद छलैक, जतए गौतमबुद्ध गेल छला आओर किछु दिन धरि थम्हलो छला। [ देखू–बुद्धचर्या ] अंगुत्तराय उत्तर विहारमे छलै यद्यपि एकर ठीक-ठीक ठेकान नहि लागल छै।

बितलैक। नन्दवंशक समयमे सम्पूर्ण मिथिला नन्द राज्यक अधीन छलैक। कहल जाइत छैक जे वैशालीमे सेहो ओकर दोसर राजधानी स्थापित भेलैक। प्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनी राजानन्दक दरबार पाटलिपुत्रमे आयल छलाह[२३]। ओहि समय तक्षशिला एकगोट बहुत पैघ शिक्षाकेन्द्र छल आर वैशालीक निवासी ओतय शिक्षा ग्रहण करबाक हेतु जाइत छलाह। नन्दवंशक पश्चात् मौर्य-वंशक उत्थान भेल। बौद्ध - धर्मक प्रभाव वैशालीमे बेश छलैक आओर ईसा पूर्व चतुर्थ शताब्दमे ओतए दोसर बौद्ध-संगीति भेल छलैक, जाहिमे बौद्ध-धर्म सम्बन्धी अनेक प्रश्नपर विचार-विमर्श भेल छलैक[२४]। मौर्य-युगमे सेहो मिथिला मौर्य साम्राज्यक अधीन छलैक। कौटिल्य लिच्छवी सभकें 'राजशब्दोपजीविनः गणराजानः' कहलन्हि अछि[२५]।

मौर्य-युगमे सेहो वैशाली एकटा प्रधान नगर छल। ई पटना आओर हिमालयक बाटमे पड़ैत छल। अशोक वैशालीमे एकगोट स्तम्भ बनौने छला। बौद्ध-केन्द्रक दृष्टिकोणसँ वैशालीक महत्व अशोकक समय धरि खूब छलैक, एहिमे सन्देह नहि। अशोक एकरा आओर महत्वपूर्ण बनौलक। मौर्य-युगमे सम्पूर्ण मिथिला पाटलिपुत्रक अधीन छल। एकर कतेको प्रमाण भेटैत अछि। उत्तर विहारक पूर्णिया, बनगाम माहिसी; पट्टआहा, बहेड़ा, हाजीपुर, वैशाली आदि क्षेत्र सभसँ 'पंचमार्क्ड' मुद्रा (Punchmarked) बेश मात्रामे पाओल गेल छैक आओर मौर्य-युगीन माटिक खेलौना नौलागढ़ (मुंगेर जिला), बाऊर

---

२३. राजशेखर–काव्य-मीमांसा, पृ० ५५।

२४. विस्तृत विवरणक हेतु देखू हमर पुस्तक 'सिद्धार्थ' :

एखन हालहिमे वैशालीक उत्खनन सँ बुद्धक छाउड़क किछु अवशेष पाओल गेल छैक। वैशालीमे एकर भेटब यथार्थो छैक किएक तँ अशोकक समय धरि वैशाली बुद्ध-धर्मक प्रधान, केन्द्र छलैक। वैशाली व्यापारोक प्रधान केन्द्र छल। मिथिलाक सम्बन्ध नेपालसँ सेहो बनल छलैक यद्यपि ओकर स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त भ गेल छलै। उत्तरी पूर्वी तराइमे किरात संस्कृतिक प्रभाव एखन धरि बनल छलैक। तराइक किछु क्षेत्र नेपाल सीमामे अपन अधिकार बढा रहल छल। आओर देखू Kern, Manual of Buddhism, pp. 103-109. Beal Buddhist records of the Western World आर लेखकक–Bihar, the homeland of Buddhism (Patna 1956) Vol. 2.

२५. Kautilya's Arthaśāstra—Shamasatry, p. 455.

( दरभंगा जिला ), महिसी आओर वैशाली क्षेत्रसँ प्राप्त भेल अछि। मौर्य-युगक अनेक सामग्री सभ मिथिलाक विभिन्न क्षेत्र सभसँ पाओल गेल छैक। नौलागढ़, जयमंगलागढ़ आओर वैशालीसँ प्रचुर मात्रामे 'नार्दन ब्लैक पालिस्ड वेयर्स' (N.B.P.) भेटल छैक। अशोकक समयमे तिरहुतसँ अनेक लोकसभ बौद्ध-धर्मक प्रचारक हेतु सेहो गेल छलाह। अशोक द्वारा निर्मित स्तम्भ एखनहुधरि स्थान - स्थानपर पाओल जाइत छैक। अशोकक पश्चात् मिथिलाक इतिहासक विषयमे कोनो विशेष विषय नहि ज्ञात अछि। मौर्य-साम्राज्यक पतनक पश्चात् शुंग-कण्व युगमे सेहो सम्भवतः मिथिला आओर वैशाली पाटलिपुत्रक अधीने छल, एहन प्रतीत होइत अछि। लिच्छवी सभहिक आन्तरिक स्वतन्त्रता बनल रहलैक आओर ओ अपन नियमेपर चलैत रहला। एते दिन धरि राजतंत्रक अधीन रहलाक कारण वैशालीक राजनैतिक संगठनपर सेहो किछु प्रभाव पड़ल हो, सेहो कोनो भारी विषय नहि। अप्रत्यक्ष रूपसँ तत्कालीन सबटा घटना सबहिक प्रभाव तँ एहि क्षेत्रपर पड़ले होएतैक। पतंजलि सेहो जन-पदक रूपमे मिथिलाक उल्लेख कएलैन अछि। वैशालीसँ शकक्षत्रप रूद्रसेनक बहिन महादेवी प्रभुदामाक एकगोट मोहर पाओल गेल छैक जाहिसँ ई अनुमान लगाओल जा सकैत अछि जे शकक्षत्रप सबहक सङ्ग ताहि समय एहि क्षेत्रक सम्पर्क छलैक एहि सम्बन्धक वास्तविक स्वरूपक ठेकान लागब कठिन छैक। दरभंगाक राजकीय चन्द्रधारी म्युजियममे किछु क्षत्रप आओर कुषाण मुद्रा अछि। वैशाली, चम्पारण आओर नेपालसँ सेहो किछु कुषाण मुद्रा पाओल गेल छैक। एकर आधारपर ई कहल जा सकैत अछि जे एहि क्षेत्रपर कुषाण सबहिक सेहो शासन छल हेतै[२६]। जयमंगलागढ़सँ एकगोट उत्तर शूंगकालीन खेलौना सेहो भेटलैक अछि। कुषाण लेख सब सेहो एहि क्षेत्रसँ पाओल गेल छैक। कनिष्क बौद्ध छला, किन्तु ओकर राज्य सीमा अखनधरि प्रामाणिक रूपमे निश्चित् नहि भऽ

---

२६. देखू हमर निबंध—Extent of Kusāna rule in North Bihar in he Journal of Oriental Institute, Baroda ( 1959 ).

सकल छैक। कहल जाइत छैक जे कनिष्क वैशालीसँ बुद्धक भिक्षाटनवाला बाटी (begging bowl)उठाकए गान्धार लऽ गेल छलाह[२७]।

कुषाण सबहिक अतिरिक्त आओरो कतेको वंश उत्तर बिहारमे एहि समय छल। भूगोल-वेत्ता टालेमी अपन पुस्तकमे ई कहलनि अछि जे गण्डकसँ महानन्दा नदी धरि 'मरुण्डाई' नामक एकगोट जातिक आधिपत्य छलैक। ई स्वाभाविके छैक जे एहि क्षेत्रमे हुनक सबहिक प्रभाव हेबेटा करत। टालेमी निश्चये कोनो ग्रन्थक आधारपर एहि प्रकार लिखने हेता जे ग्रन्थ आब अपना सभकेँ उपलब्ध नहि अछि। 'मरुण्डाई'क अतिरिक्त आओरो एक गोट जाति छलैक जेकर राज्य उत्तरी बिहारमे छलै। ओकरा अपना सभ 'भर' जातिक नामसँ जनैत छियैक। हिनक सबहिक अवशेष सेहो सहरसा आओर बेगूसराय क्षेत्रमे देखल जा सकैत अछि। सिंहेश्वरस्थानमे 'रायभीर' नामक स्थान छैक जेकरा 'भर' सबहिक राजधानी कहै छै। बेगूसरायमे तप्पा सरौजा सेहो 'भर' सबहिक प्रधान केन्द्र

२७. Report of the Archaeological Survey of India, Vol. I-pp. 64–74.

प्राचीन कालीन मिथिलाक राजनीतिक स्थितिक सम्बन्धमे अपना सबहिक ज्ञान एते अल्प अछि जे ओहिपर किछु निश्चित रूपसँ नहि कहल जा सकैत छैक। ओना तँ रामायण, महाभारत, पुराण भागवत आओर बौद्ध-ग्रन्थ सबमे एकर उल्लेख पाओल जाइत छैक, परन्तु ओहि सबमे एकटा गप्पकेँ एते बेर दोहराओल गेल छैक जे ओहिमे सँ सत्य बहार करब कठिंन छैक। जनक राजवंशसँ लऽ कए कर्णाट-वंश धरि मिथिलाक इतिहास अन्धकारमय कहल जा सकैत अछि, किएक तँ राजनीतिक इतिहासक सम्पूर्ण विवरण एखन धरि अपना सबकेँ नहि भेटल अछि। सांस्कृतिक दृष्टिकोणसँ ई काल महत्वपूर्ण छैक, एहिमे सन्देह नहि। एहि अल्पज्ञानक एक गोट मुख्य कारण ई छैक जे मिथिलामे एखनहु पुरातत्वीय ढङ्गक उत्खनन नहि भेल छैक। कनिष्क वैशाली धरि आएल छल वा नहि, एहि सम्बन्धमे किछु कहब कठिन अछि परन्तु ई सत्य छैक जे विहारक अनेक भाग सबमे ओकर मुद्रा पाओल जाइत अछि; जाहिसँ ई सिद्ध होइत छैक जे बिहार प्रान्त पर सेहो ओकर राज्य छल होएतैक। बौद्ध होएबाक कारण यदि वैशालीपर कब्जा कएलकै तँ ई निश्चितरूपेण कहल जा सकैछ जे मिथिला सेहो ओकर अधीनमे छल हेतै। डा०उपेन्द्रठाकुरक History of Mithila मे सेहो जे किछु विवरण छैक ओकरो अपना सभ संक्षिप्ते कहि सकै छियैक। एहि कालक क्रमबद्ध इतिहास एखन धरि संदिग्धे अछि।

मानल जाइत छैक । 'भर' सबहिक विश्वास छैक जे ओ सभ 'भार शिवनाग' वंशेक उत्तराधिकारी छियैक आओर यदि ई मान्य भऽ जाय तँ एहन मानल जा सकैत छैक जे 'भार शिवनाग वंश'क आधिपत्य सेहो मिथिला पर छलैक । 'भर' सबहिक अनेक किम्वदन्ती सब एखनहु मधेपुरा सबडिभिजनमे पाओल जाइत छैक[२८] । मरुण्डाइ, भर, किरात आदि जाति सबहिक प्रभुत्व मिथिलाक किछु खास-खास अंशेपर रहल हेतैक । एहन अनुमान लगाओल जाइत छैक जे मौर्य सबहिक पतनक बाद लिच्छिवी सब पुनि अपन अस्तित्व दृढ़ कएलैन आओर वैशालीपर शासन करब आरम्भ कएलैन किन्तु तत्कालीन राजनैतिक स्थिति एहन छलैक जे स्थायी रूपसँ शासन करब सम्भव नहि छलैक । कुषाण सबहिक प्रभाव बढ़लासँ लिच्छिवी सब अबल भऽ गेला आओर ओ ओतएसँ हटिकए नेपाल चलि गेला तखन सँ लगभग सात सौ वर्ष धरि ओ सब नेपालपर शासन कएलैन। लिच्छिवीक इतिहासक सामग्री 'कौमुदी-महोत्सव'ग्रन्थसँ सेहो लगैत छैक। परन्तु इतिहासकार एकरा एखन धरि प्रामाणिक ग्रन्थ नहि मोजर दैत छथिन्ह । लिच्छिवीक एक गोट नेपाली शिलालेखसँ ई ज्ञात होइत छैक जे 'सुपुष्प लिच्छवी' क जन्म पाटलिपुत्रमे भेल छलै । परम्परामे इहो सुरक्षित छैक जे लिच्छिवी सब पाटलिपुत्रपर सेहो शासन कएने छलै ।

तिरहुत वा तीरभुक्तिक प्रधानता पुनि भेलै । चन्द्रगुप्त वैशालीक लिच्छिवी कुमारि कुमारदेवीसँ विवाह केलकै आओर लिच्छवी सबहिक सहायतासँ पाटलिपुत्रपर आधिपत्य जमौलक । सम्भवतः कुमारदेवी दिशिसँ ओकरा वैशालीक राज्य भेटलैक । एहि प्रकार गुप्त साम्राज्यक स्थापना भेलैक आओर तिरहुत सेहो गुप्त साम्राज्यक एक गोट प्रमुख प्रान्त बनलैक। गुप्त लेख सभमे तिरहुतकेँ तीरभुक्ति कहल गेल छैक । अजातशत्रुक आक्रमण आओर गुप्त साम्राज्यक स्थापनाक मध्यक अवधि धरि प्रायः नेपालमे अपन एकटा वंश स्थापित भऽ चुकल छलै आओर ओतए एक गोट सम्वत्

---

२८. देखू हमर निबन्ध– Maroundae of Ptolemy and North Bihar in the L. S. College, Diamond Jublee Volume.

सेहो चलाओल गेल छलै[२९]। कुमार देवीक विवाह आओर तत्कालीन लिच्छिवी सबहिक प्रभावसँ ईहो ज्ञात होइत छैक जे ओहि समय धरि लिच्छिवीगण पुनः अपन राजधानीमे एक गोट शक्तिशाली राष्ट्र[३०] क रूप मे स्थापित भऽ चुकल छलाह। एहि सम्भावनाक मोजर सेहो छैक। मौर्य-साम्राज्यक पतनक पश्चात् प्रायः लिच्छिवी सभ पाटलिपुत्रक दुर्बलतासँ लाभ उठाकए अपनाकेँ स्वतन्त्र आओर दृढ़ कऽ लेलन्हि। यदि ओ सभ शक्तिशाली नहि होइतथि तँ चन्द्रगुप्त हुनक सहायतासँ साम्राज्यक स्थापना नहि कऽ सकितथि। चन्द्रगुप्त अपन रानीक नामसँ सिक्का बनबौलकै। उत्खननसँ सेहो तीरभुक्तिक विषयमे अनेक सामग्री प्राप्त भेल छैक। वैशालीक उत्खननसँ गुप्तकालीन तिरहुतक शासन-व्यवस्थापर बेश प्रकाश पड़ैत छैक। प्रान्तीय शासनक ई एकटा मुख्य केन्द्र छलैक जे तीरभुक्ति कहबैत छलैक। ओहिठामक प्राप्त वस्तु सभसँ ओतुक्का तत्कालीन शासन-पद्धति एवं समाज-व्यवस्थाक सम्बन्धमे अपना सभकेँ अनेक विषय प्राप्त होइत अछि।

(१) उपरिक (२) कुमारामात्य (३) महाप्रतिहार (४) स्थानीय अध्यक्ष (५) महादण्ड नायक (६) विनय स्थिति स्थापक (७) भटास्वपति (८) युवराज पादीय कुमारामात्याधिकरण (९) रणभाण्डागार अधिकरण, (१०) दण्डपाशाधिकरण, (११) बलाधिकरण, (१२) तिरभुक्त्युपरिकाधिकरण, (तिरहुतक गवर्नर) (१३) तिरभुक्तौ विनयस्थिति स्थापकाधिकरण, (१४) वैशाल्याधिस्थानाधिकरण आओर (१५) श्री परमभट्टारकपादीय कुमारामात्याधिकरण। प्रामाणिक आधारसँ वैशालीमे प्राप्त अवशेष सबहिक आधार पर, ई कहल जा सकैत अछि जे गुप्त-युगमे तीरभुक्ति केवल शासनेटा क नहि वरन् व्यापारक सेहो एकगोट प्रमुख केन्द्र छलैक, कियैक तँ ओतुक्का मोहर सभपर 'कुलिक-सार्थवाह निगम' इत्यादि शब्द सबहिक सेहो उल्लेख पाओल जाइत छैक। प्रान्तीय शासन विभागक अतिरिक्त

२९. Levi—Nepal i, i, 14; ii, 153.

३०. Indian Antiquary, 1911, p. 111; Beal's 'Siyuki', i, introduction XV.

स्थानीय शासन सेहो संगठित छलैक, जेना कि उपर्युक्त सूचीसँ ज्ञात होइत छैक। वैशालीमे सेहो फराक नगर शासन-व्यवस्था छलैक। गुप्त-युगमे प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियानक शुभागमन भेल छलैक। वैशालीकें बौद्ध-केन्द्र होएबाक कारण, ओ ओतऽ सेहो आयल छल। फाहियानक यात्रा-विवरणसँ वैशालीक महत्व ज्ञात होइत छैक। षष्ठम शताब्दमे दोसर चीनी यात्री वांगहुयेन-सी दुइ बेर वैशाली आएल आओर ओ अपन दोसर यात्रामे बौद्ध महात्मा सबकें ओढन-पहिरन दानमे देने छलैक। ओही शताब्दमे तेसर चीनी यात्री सुंग-युंग आएल। ओकर वर्णनमे ४० गोट देश सबहिक उल्लेख छैक जाहिमे टीएल-लो ( Tiel—lo ) नामक एक स्थान छलैक जाहिपर हूण सबहिक आधिपत्य कहल गेल छैक। किछु लोक सब एकरा आधुनिक तिरहुत कहइत छथि[३१]। सातम शताब्दमे प्रसिद्ध विद्वान चीनी यात्री ह्येन-सांग तिरहुत आएल छल। ओ अशोक द्वारा निर्मित स्तूपक उल्लेख कएलक अछि। ह्येन-सांगक समयमे तिरहुत हर्षवर्धनक राज्यमे छलैक[३२] आओर अर्जुन एहिठामक गवर्नर छल। सातमे शताब्दमे इत्सींग नामक चीनी यात्री सेहो तिरहुतक भ्रमण कएलक।

एहि चीनी यात्री सबहिक लेखसँ ई ज्ञात होइत छैक जे एहि क्षेत्रमे बौद्ध-धर्म पतनोन्मुख भऽ चुकल छल। वैशालीक प्राचीन गौरव लुप्त भऽ चुकल छलै। उत्तर गुप्तकालक एक गोट ताम्रलेख एखन हालहि मे श्रीसोहनी साहेबकें मुजफ्फरपुर जिलासँ प्राप्त भेल छन्हि। एहि ताम्रलेखसँ ई ज्ञात होइत छैक जे ओहि युगमे तीरभुक्ति शासनक एक गोट प्रधान केन्द्र छलैक आओर अनेक विषय ( जिला ) सबमे बाँटल छलै। एहि लेखसँ चामुण्डा 'विषय' ज्ञात होइत छैक। चामुण्डा विषयक पूर्वोत्तर ग्राममे कोनो व्यक्तिकें किछु जमीन दानमे देल गेल छलैक। ई ताम्रलेख एखन अप्रकाशित छैक।

---

३१. Tiel–lo सँ तिरहुत बूझब सन्देहात्मक छैक। कारण तिरहुतपर हूण साम्राज्यक प्रभावक कोनो टा प्रमाण एखन धरि नहि छैक। दोसर बात ई जे एकर समर्थन एखन धरि आओर कोनो दोसर साधनसँ नहि भऽ सकल अछि।

३२. Rhys Davids—Travel of Yuan Chwang. Vol. II p. 63-80.

हर्षवर्धनक पूर्व महासेन गुप्त मिथिलाकें जीति अपन राज्यमे वृद्धि कएने छला। ओम्हर कामरुपक वर्धनवंशक शासक कतेको पुस्त-पुस्तैनसँ पुर्णिया धरिक इलाकापर शासन कऽ रहल छला। हर्षवर्धन मिथिलाकें अपन राज्यमे मिलौलक। मिथिलापर शशांकक सेहो किछु दिन धरि आधिपत्य बनल रहलै।

हर्षवर्धनक मरबाक पश्चात् अराजकता पसरि गेलै। ह्येन-सांगक समयमे वैशाली, मुंगेर, भागलपुर, आओर पूर्णिया समृद्ध नगर छल—वैशाली आओर उत्तर बिहारमे बौद्ध-धर्मक प्रभाव बहुत कम छलैक। हर्षवर्धनक मरबाक पश्चात् ओकर कोनो उत्तराधिकारी नहि छलैक। अपन मृत्युक पूर्व ओ अपन दूतकेँ चीन पठौने छल, जेकर बदलामे चीनी सम्राट्क दूत ओकर मृत्युक पश्चात् भारत पहुँचलै। उत्तरी बिहारक शासक अर्जुन ओकरा सतौलकै तँ ओ पड़ाए कै नेपालक शरण गेलै। नेपाल आर तिब्बतक राजा सभ चीनी दूतक मदति केलकै आओर एक पैघ सेना सङ्ग तिरहुत पर आक्रमण केलकै आओर अर्जुनसँ बदला लेलकै। ई घटना ६४८ ई०क पश्चात् भेलै आओर तखनसँ प्रायः तिब्बतक प्रभाव उत्तर बिहारपर ७० वर्ष धरि रहलक। कहल जाइत छैक जे चीनी दूत अर्जुनकें गिरफ्तार कऽकेँ चीन लऽ गेलै। तिरहुत एवं नेपालक इतिहासमें ई एक गोट महत्वपूर्ण घटना छैक[३३]।

७०३ ई० से तिरहुत आओर नेपाल तिब्बती प्रभावसँ मुक्त भेलैक[३४] ओकर बाद सँ पुनि तिरहुतक इतिहास अंधकारमय छैक। सम्पूर्ण पूर्वी

---

३३. Buddhism of Tibet or Lamaism–(Waddell) pp. 20-41; J. A. S. B. Vol. I, ( Pt 1. pp. 217-22 )

ई अनुमान लगाओल जाइत छैक जे शशांक आओर भास्करवर्मन सेहो तिरहुतपर राज्य कएलक। भास्करवर्मनक राज्यक प्रमाणमे निधनपुर शिला - लेखक उल्लेख कएल जाइत छैक।

३४. E. H. Parker–The Journal of thc Manchester Oriental Society 1911, pp. 129-52 ( Conclusions based on the history of Tang Dynasty of China )

देखू—हमर History of Bihar आओर डा०श्री उपेन्द्रठाकुरक History of Mithila. एहि सम्बन्धमे हमर विस्तृत लेख K. P. Jaiswal Institute Patna सँ प्रकाशित होबऽबला Comprehensive History of Bihar मे देखू एवं V. A. Smith–JBROS Vol III Pt. 4 p. 555-6

हिन्दुस्तानेक इतिहास एहिकालमे अन्धकारमय कहल जाए सकैत छैक, किन्तु तैयो तिरहुतकें छाड़ि बिहारक आन सब भागक इतिहास किछु ने किछु उपलब्ध छैक। उपर्युक्त, ताम्रलेखक आधारपर ई कहल जा सकैत छैक जे उत्तर गुप्त वंशक शासन उत्तर विहारपर सेहो छल हेतैक। लामा तारानाथक अनुसार मिथिलामे चन्द्रवंशक शासन छलै जेकर सम्बन्ध पश्चिममे राजा भ्रातृहरिसँ छलैक। चन्द्रवंशक राज्य बर्मा आओर पूर्वी बंगालमे सेहो छलैक। बर्मामे चन्द्रवंशक लोक सब "वेथाली" (वैशालीक अनुकरण) नामक एक गोट शहर बसौलक। चन्द्रवंशक अन्त होइतहि मिथिलामे पाल-वंशक आधिपत्य भऽ गेलैक। एखनधरि पाटलिपुत्र राजनीतिक महत्व घटि चुकल छलैक आओर कन्नौजक प्रधानता भऽ गेल छलै। काश्मीर अपन प्रभाव दक्षिण दिशि बढ़ा रहल छलै आओर पूर्वमे सेहो ओकर बढोतरीक प्रभाव दृष्टिगोचर होमए लागल छलै। ७०३सँ तिरहुतक इतिहासक विषयमे जानकारी प्राप्त करबाक कोनो साधन सेहो नहि छैक। सम्भवतः तिरहुत ओहि समय प्रायः स्वतंत्ररूपसँ अपन शासन चलवैत होएत आओर अर्जुनक पश्चात् कोनो खास वंशक राज्य ओतए रहल हेतै। एकर किछु आभास लामा तारानाथ[३५]क लेख सबसँ भेटैत छैक, किन्तु ओकर वास्तविकतापर विश्वास करब एखन अनुचित होएत।

हर्षवर्धनक मृत्युक पश्चात् उत्तरी भारतमे विभिन्न राज्यक उत्थान भेलैक। कन्नौजपर आधिपत्य जमेबाक हेतु एकटा विशाल संघर्ष शुरू भेलैक। केन्द्रीय-सत्ता चलि गेल छलै। प्रत्येक राष्ट्र अपन आधिपत्य जमेबाक प्रयत्न करए लगलैक आओर उत्तरी भारतमे लड़ाइ सबहिक क्रम लागि गेलैक। नवम शताब्दमे पाल, प्रतिहार आओर राष्ट्रकूट वंश सबहिक मध्य लड़ाइ प्रारम्भ भऽ चुकल छलै आओर एकर प्रधान क्षेत्र सेहो बिहार सएह छलैक। मुंगेरमे ओहि समय उत्तर भारतवर्षक भाग्यक निर्णय भऽ रहल छलैक। तीन प्रमुख राज्यमे संघर्ष भऽ रहल छलैक ओहिसँ मिथिला बाँचल नहिए रहल हेतै। दिघवा दुबौली ताम्रलेखसँ ई सिद्ध होइत छैक जे प्रतिहार सभ उत्तर बिहारक किछु हिस्सामे जीति कए अपने राज्यमे मिला

३५. Taranath–History of Buddhism.

लेने छलैक। किछु इतिहासकारक मत छैन्ह जे दशम शताब्दक प्रारम्भमे जेजाभुक्तिक चन्देल सब मिथिलापर आक्रमण कएने छलैक[३६]। ई प्रश्न विवादास्पद छैक। ओहि समय दक्षिणी बिहारमे पाल साम्राज्यक स्थापना भऽ चुकल छलैक। मगधमे गुप्त राज्यक अस्तक सङ्गहि सिन्धमे अरब राज्यक स्थापना भऽ चुकल छलैक। पश्चिममे प्रतिहार आओर दक्षिणमे राष्ट्रकूट वंशक उदय सेहो भऽ चुकल छलैक। प्रतिहार वंशक राजा मिहिर भोज बड्ड प्रतापी छला। पूबमे मिहिर भोजक राज्य सीमा विहार धरि छलैक[३७]। नवम शताब्दक उत्तरार्द्ध आओर दशम शताब्दक पूर्वार्द्धमे गन्डक आओर सोन नदी सब प्रतिहार आओर पाल राज्यक सीमा छलैक। जाहि समय प्रतिहार भोज आओर महेन्द्रपाल प्रायः तिरहुतपर आक्रमण कएने छलैक ओहि समय तिरहुतपर पाल राजा सबहिक कोनो अधिकार छलैक वा नहि ई कहब अत्यन्त कठिन छैक, किन्तु नारायण पालक भागलपुर लेख[३८] सँ ज्ञात होइत छैक जे पाल राजा तिरहुतमे किछु गाम शिव-मन्दिर केँ चलेबाक हेतु देने छलैक। जे किछु हो, ई सब किछु नारायण पालक राज्यक सत्रहम वर्ष धरि भेल हेतै, किंयैक तँ ई लेख ओही वर्षक छियैक। दशम शताब्दक

---

३६. S. N. Singh – History of Tirhut. p. 54
देखू—All India Maithili Writers' Conference, Darbhanga Selected Papers Vol. I मे डा०दीक्षितक निबंध।

३७. K. K. Dutta – Introduction to Bihar, p. 13.
उत्तरी पूर्वी भारतक विभिन्न राज्यक तत्कालीन कोनो इतिहास नहि छैक। ओना तँ एम्हर एखने किछु कार्य भेलैक अछि परन्तु मिथिलामे साधनक अभावें एहि कालक इतिहास पूर्णरुपेण अन्धकारमय छैक। लामा तारानाथक अनुसार ई कहल जा सकैत छैक जे एहि समय एतए चन्द्रवंशक राज्य छलैक, परन्तु ई प्रश्न एखन धरि विवादास्पद छैक अतः जखन धरि दोसर आन कोनो प्रमाण प्राप्त नहि होइत छैक तखन धरि किछु कहब अथवा लिखब असम्भव छैक। देखू हमर लेख–Political History of Mithila (C. 7th–11th Cent. A. D.) in the JIH, Travancore, 1954.

३८. Epigraphica Indica XVII p. 310–27. एहि शिलालेखसँ ई ज्ञात होइत छैक जे तीरभुक्ति मे 'कक्ष' विषय छलै। एहि विषयक एखन धरि पता नहि छैक। देखू–Inscriptions of Bihar.

पूर्वार्द्धमे यशोवर्मा चन्देल मिथिलापर आक्रमण केलकै आओर प्रायः पुराणया धरि अपन आधिपत्य बढ़ौलक। मैथिल परम्पराक अनुसार ओहि समय परमार भोजक सेहो प्रभाव पड़लैक। मैथिल अनुश्रुति सभमे परमार भोज कें विक्रमादित्य कहल गेल छैक। दशम शताब्दमे एक बेरि बौद्ध-संघ आओर मैथिल सबहिक मध्य हरिहर क्षेत्रमे शास्त्रार्थ भेलैक, जाहिमे मथिल सबहिक अपमान भेलैक। मैथिलसभ तखन विक्रमादित्यकें अपना ओहिठाम बजौलथिन[३९]। हुनक सङ्गहि रजिपूत सबहिक प्रवेश मिथिलामे भेलैक।

चन्देल सबहिक शक्ति मद्धिम पड़बाक पश्चात् पुनः दोसर शक्ति सब सुगबुगाए लागल। महिपाल प्रथमक नेतृत्वमे पाल-वंशक पुनरुत्थान भऽ रहल छलैक। चन्देलवंशक पश्चात् भऽ सकैत छैक जे मिथिला स्वतन्त्र भऽ गेल होइक। रामायणक एकगोट नेपाली हस्तलिखित प्रतिक अनुसार सम्वत् १०७६ मे तीरभुक्तिमे एकटा सोमवंशोद्भव महाराजाधिराज गांगेय देवक शासनक बात कहल जाइत छैक। ओहि रामायणक किष्किन्धाकाण्डक अन्तमे एहि प्रकार लिखल छैक[४०]—'सम्वत् १०७६ आषाढ़ बदी ४ महाराजाधिराज पुण्यावलोक सोमवंशोद्भव गौड़ध्वज श्रीमद् गंगेय देव भूज्यमान तीरभुक्तौ कल्यान विजय राज्ये नेपाल देशीय श्री भंजु-शालिक श्री आनन्दास्य पाटकावस्थित (कायस्थ) पण्डित श्री कुरस्यात्मज गोपतिना लेखिदम्'—१९४० ई॰मे एकर दोसर प्रतिलिपि म॰ म॰ मीराशोकें लाहौरमे भेटलन्हि। दुनूमे पाठ भेद छैक आओर लाहौर प्रतिलिपिमे 'गौड़ध्वज'क स्थान पर 'गरुड़ध्वज' छैक। १९४०क पूर्व धरि लोक ओकरा कालाचुरी गांगेयदेव मानैत छलैक, किन्तु १९४२मे महामहोपाध्याय मिराशी[४१] बतौल-

---

३९. परमेश्वरझा—मिथिलातत्वविमर्श पृ॰ ६५–६६। एकर आओर कोनो दोसर प्रमाण हमरा नहि भेटैत अछि।

४०. Bendall's History of Nepal & Surrounding Kingdoms, (Catalogue of Nepal Manuscripts --H. P. Sastri)

४१. Mm. Mirashi- Gangeyadeva of Tirbhukti in Silver Jubilee Volume of the Annals of Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona देखू एकर जबाव–हमर निबन्ध Journal of the Ganganatha Jha Research Institute (Alld.)

अल्तेकर साहेब हमरा कहने छलाह जे राष्ट्रकूट सबहिक कहिओ तिरहुत पर अधिकार नहि छलै।

थिन जे प्रायः राष्ट्रकूट वंशक किछु प्रभाव मिथिलामे छल हो। किन्तु हुनक निर्णयकें एखनधरि स्थिर नहि बूझल जाइत छैन्ह कियैक तँ कोनो कालाचुरी लेखमे मिथिला अथवा तिरहुतक उल्लेख नहि भेटैत छैक। सम्वत् १०७६कें विक्रम मानबाक अपेक्षा शक सम्वत् माननासँ एकर निराकरण भऽ सकैत छैक। तेसर बात ई जे जतए कालाचुरी लेख सबमे तिरहुतक कोनो उल्लेख नहि पाओल जाइत छैक, ओतहि पाल-लेख सबसँ ई ज्ञात होइत छैक जे महिपाल प्रथमक ४८म वर्षधरि तिरहुत ओकर अधीन छलैक[४२]। ओकर पश्चात् प्रायः पाल राजा सबहिक आधिपत्य तिरहुत पर रहलै जेकर प्रमाण अपना सभकें, नौलागढ़ शिलालेख[४३] सँ भेटैत अछि। नौलागढ़ शिलालेख

---

४२. इमादपुर ( मुजफ्फरपुर ) शिलालेख—श्रीमान् महिपालदेव राज संवत् ४८ ज्येष्ठ दिन शुक्ल पक्ष।

आओर देखू R. C. Mazumdar : Indian Historical Quarterly, Vol. 7 p. 681.

आओर JASB ( Letters ) of 1951.

R. K. Choudhary—The Karnātās of Mithila in the ABORI, 1954.

४३. R. K. Choudhary—Naulāgarh Inscription, published in G. D. College, Begusarai Bulletin No. 1

ओं श्रीविग्रहपालदेव राज्ये सम्वत् २४ क्रिमीलया सौन्डिक महामति दुहित्रा धाम्मजिय पत्न्यानोअनोकया ( आलोक ) कारिता......एकर अतिरिक्त एकटा दोसर शिलालेख सेहो नौलागढ़सँ प्राप्त भेल छैक, जेकर आधारपर ई अनुमान लगाओल जा सकैत छै जे ओतऽ एकटा बौद्ध विहार सेहो छलैक। ओना तँ ओहि लेखमे राजा अथवा सम्वत्क नाम नहि देल गेल छै, परन्तु गामवला सभ हमरा कहलक जे एहि शिलालेख पर विग्रहपालक नाम छलै आओर राज्य सम्वत् १७ देल छलै। शिलालेख किछु टूटल छै। मिथिलामे पालवंशक राज्य होएबाक आओरो एकटा प्रमाण छैक, वनगाम ( सहरसा ) ताम्रलेख, जेकर सम्पादन डा० दिनेशचन्द्र सरकार कएलनि अछि। उक्त शिलालेखसँ सामाजिक इतिहास पर प्रकाश पड़ैत छैक। आओर देखू G. D. College Bulletin No. 2; हमर Inscriptions of Bihar.

एहिकाल पर हमर विस्तृत लेख–K. P. Jaiswal Institute Patna सँ प्रकाशित होबऽबला–Comprehensive History of Bihar मे सेहो देखू।

पैघ महत्वपूर्ण साधन मानल जा सकैत छैक, कियैक तँ एहिसँ ई सिद्ध होइत छैक जे उत्तरी बिहारमे सेहो 'क्रिमिला' विषय ( जिला ) छलै। नौलागढ़सँ प्राप्त लेख आओर मुद्रासँ ई सिद्ध होइत अछि जे एतए पाल राजा तृतीय विग्रहपालक शासन छलै। नौलागढसँ दोसर शिलालेख सेहो पाओल गेल छैक जाहिमे बौद्ध बिहारक होएबाक उल्लेख पाओल जाइत छैक। एहूसँ महत्वपूर्ण ताम्रलेख ओही राजाक समयक बनगाम ( सहर्षा )सँ पाओल गेल छैक। ई शिलालेख कतेको दृष्टिकोणसँ महत्वपूर्ण छैक। एहिसँ ई सिद्ध होइत छैक जे तीरभुक्तिमे काँचनपुर नामक स्थान सेहो पाल-वंशक एकटा प्रसिद्ध जयस्कंधावार छलैक। तीरभुक्तिक अन्दर एकगोट नव विषय सेहो एहिसँ ज्ञात होइत अछि; ओहि विषयक नाम 'हौद्रेय विषय' (आधुनिक हरदी गाम) छलै। बनगाम ओहि समय पाल-वंशक एकटा प्रधान शासन-केन्द्र छलै। एहि शिलालेखसँ ई सिद्ध होइत छैक जे जखन कालाचूरी वंशक राजा सब पालवंशी सबकें दबौलकै तखन पालवंशक राजा सब तिरहुतमे अपन राजधानी बनौलकै आओर ओहिठामसँ शासन करब आरम्भ कैलकै। 'प्राकृत पैंगलम्' आओर अन्य साधन सबसँ ई ज्ञात होइत छैक जे गण्डक क्षेत्रधरि कालाचूरी वंशक लोक अपन आधिपत्य बढ़ाए चुकल छलाह आओर पाल सबसँ हुनक संघर्ष बढ़ि रहल छलैन। एकर विवरण अपना सबकें 'संध्याकर नन्दी'क 'रामचरित' सँ पाओल जाइत अछि। ई जानले छैक जे विक्रमशिलाक महंथ दीपंकर श्री ज्ञानपाल आओर कालाचूरी वंश सबहिक बीच संधि करबौने छलै। बनगाम शिलालेख उत्तर बिहारमे पाल सबहिक इतिहासक दृष्टिकोणसँ बड्ड महत्वपूर्ण छै आओर,एहिसँ सामाजिक इतिहासक सेहो ज्ञान होइत छैक। एखन हालहिमे वीरपुर ( बेगूसराय ) ग्रामस अनेक पाल कालीन मूर्तिसभ उपलब्ध भेल छैक। एकर विवरण सेहो विहार रिसर्च सोसायटीक पत्रिकामे छपि चुकल छैक। किन्तु विग्रहपालक समयमे पालवंशक सूर्यास्त भऽ रहल छलैक आओर दक्षिणक षष्ठम् विक्रमादित्यक आक्रमणक फलस्वरूप कर्णाट वंशक अभ्युत्थान बंगाल आओर मिथिलामे भऽ रहल छलै।

विक्रमांक चालुक्यक आक्रमणक समयसँ ओकर सेनाक अनेक कर्णाट सिपाही बंगाल आओर मिथिलामे बसि गेल छलाह। नान्यदेव

मिथिलामे कर्णाट-वंशक राज्य काएम केलनि। एतए स्मरण राखक चाही जे एहि वंशक तत्त्वावधानमे सम्पूर्ण पूर्वीय हिन्दुस्तानमे मिथिले एकगोट एहन प्रान्त छलै, जाहिमे २२७ वर्ष धरि ( १०९७–१३२४ ) मुसलमान सबहिक प्रभाव नहि पड़ि सकलै। राजनीतिक दृष्टिकोणसँ मिथिलाक इतिहासमे एकरा स्वर्ण-युग कहल जाइत छैक, कियैकतँ एहि युगमे मिथिलामे संगठित राज्य एवं शासन प्रणालीक स्थापना भेलै आओर कला, साहित्य आओर मैथिली भाषाक विकास भेलै। मुसलमानक आक्रमणसँ तबाह भऽ केँ बौद्ध सब मिथिला आओर नेपाल अएलाह आओर सब देशक मूल्यवान ग्रंथ एही दुइ देशमे राखल गेलै। सामाजिक नियमकेँ सुदृढ़ करबाक हेतु पंजी-प्रथाक व्यवस्था करए पड़लै। ओहि समयक राजनीतिक परिस्थिति सबहिक अध्ययनहिसँ अपना सब नान्यदेवक मूल्यांकन कऽ सकैत छी। बंगालमे सेन वंशक स्थापना भऽ चुकल छलै आओर कन्नौजमे गढवाल राज्य सेहो स्थापित भऽ गेल छलै। ओम्हर जखन पाल, सेन आओर गढवाल अपने-अपनेमे बाझल छला, तखन नान्यदेव मिथिलासँ नेपाल पर आक्रमण केलनि आओर ओकरा अपन राज्यमे मिलाए लेलनि। सेन सबकेँ हरेबाक हेतु नान्यदेव गढ़वाल सबसँ नीक सम्बन्ध रखैत छला। विजय सेनक देवपाड़ा शिलालेखसँ ई ज्ञात होइत छैक जे नान्यदेव आओर विजयसेनक बीच लड़ाइ भेल छलै, जाहिमे नान्यदेव परास्त भेल छल[४४] अपन दीर्घ राज्यकालमे ओ पाल, कालाचुरी सेन आओर गढ़वालक पारस्परिक संघर्ष मध्य अपन दूरदर्शिता, नीति कुशलता आओर बहादुरीसँ अपन राज्यके स्थापित केलक आओर उत्तरोत्तर शक्तिशाली बनौलकै[४५]।

---

४४. देवपाड़ा शिलालेख—त्वं नान्यवीर विजयीतिगिरः कवीनां श्रुत्वाऽन्यथा मनन रूढ़ निगूढ़ शेषः।

४५. Jayaswal, JBORS Vol. IX, for details see my article Nanyadeva and his contemporaries published in the proceedings of the Jaipur session of Indian Historical Congress.

दुखक सङ्ग लिखए पड़ैत अछि जे हालहि मे प्रकाशित 'रोमा नियोगी' क पुस्तक The Gahadwalas मे कर्णाट वंश अथवा नान्यदेवक कतउ कोनो उल्लेख नहि छैक।

देखू हमर History of Bihar आओर डा० श्रीउपेन्द्र ठाकुरक History of Mithila.

नान्यदेव स्वयं बहुत पैघ विद्वान छला आओर भरतक नाट्यशास्त्र पर एकगोट टिप्पणी ओ लिखने छला। भरतक भाष्य एकटा प्रसिद्ध ग्रंथ छक जाहिसँ ई ज्ञात होइत छैक जे ओ अनेक पदवी सभसँ विभूषित छला। हिनक वंशक विषयमे नेपालक शिलालेखसँ सेहो ज्ञात होइत छैक[४६]। किछु दिन धरि प्रसिद्ध विद्वान एवं सदुक्ति कर्णामृतक लेखक श्रीधरदास सेहो नान्यदेवक मंत्री छलाह[४७]। हिनक पिता बटुदास सेन-वंशक महासामन्त छलाह आओर श्रीधरदासकेँ सेहो महामाण्डलिक पदवी छलन्हि। नान्यदेवक राजधानी सिमराँव छल। सिमराँवमे सेहो नान्यदेवक एकगोट शिलालेख छन्हि। नान्यदेव मिथिलामे कर्णाट - वंशक मात्र स्थापने टा नहि केलनि अपितु एकरा दृढ़ सेहो केलनि। ओ समस्त मिथिलापर अपन एक छत्र शासन काएम केलनि आओर गंडकसँ लऽ केँ पूर्वमे कौशिकी धरि अपन राज्य बढौलनि। उत्तरमे नेपालकेँ सेहो ओ अधीनमे केलनि। मिथिलाक इतिहासमे एकर तेहने स्थान छै जेहन स्थान भारतीय इतिहासमे चन्द्रगुप्त

---

४६. Inscription of Pratap Malla of Nepal (1648 A. D.)
आसीत् श्रीसूर्यवंशे रघुकुल नृपजो रामचन्द्रो नृपेशः तद्वंशो नान्यदेवोऽवनिपतिर भवत्तसुतः गंगदेवः।तत्पुत्रोऽभून्नृसिंहो नरपतिरतुलस्तस्तुतो रामसिंहः तज्जः श्रीशक्ति-संहोधरणिपतिरभत् भूपभूपालसिंह तस्मात्कर्णाट चूड़ामणिविहरियुत्सिंह देवोस्यवंशे।

४७. अन्धराठाढ़ी (दरभंगा) ग्राममे श्रीधरदासक एक गोट शिलालेख छन्हि :

ऊँ श्री मान्नान्य पतिर्जेता गुणरत्न महार्णवः
यत्कीर्त्यां जनितम् विश्वं द्वितीय क्षीरसागर
मंत्रिणातस्यनान्यस्य क्षत्र वशाब्ज भानुना (विवादास्पद पाठ्य)
दवोय कारित श्रीधरः श्रीधरेण च
यस्याय वाल्मीकेर विजयो प्रबन्ध जलधौ
व्यासस्य चात्यद् भुते वाद्यैरण वद्य गद्य
चतुरैन्यैश्च विस्तारिते अस्माकम् क्वपुंनग्गिरामवसरः
कोवा कारोत्यादर यद्वालबचोप्य।

मौर्यक छलनि । जनक वंशक पश्चात् मिथिलामे इएह टा प्रथम ऐतिहासिक राजवंश कहल जाए सकैत छैक । ओहि समय मिथिलाक जे राजनीतिक स्थिति छलैक ताहिमे नान्यदेव एहिसँ बेसी किछु नहि कऽ सकैत छला। राज्यक स्थापनाक संग ओकरा सुदृढ़ बनेवाक हेतु ओ संगठित शासन विधानक जन्म देलनि । भारतीय इतिहासक दृष्टिकोणसँ एखनहु नान्यदेवक मूल्यांकन नहि भेलनि अछि । नान्यदेवक समय एहि निबंधक लेखकक पूर्वज रत्नदेव नान्यदेवक सङ्ग आएल छला ।[४८]

नान्यदेवक पश्चात् ओकर पुत्र गंगदेव[४९] गद्दी पर बैसला । नान्यदेवकेँ दुइ गोट पुत्र छलैनि—गंगदेव आओर मल्लदेव । विद्यापति द्वारा लिखित 'पुरुषपरीक्षा' सँ ज्ञात होइत छैक जे मल्लदेव बड वीर आओर साहसी छलाह । ओ किछु दिन धरि कनौजमे जयचन्द्रक ओहिठाम छला आओर पश्चात् चिक्कौर राजा ओतए सेहो । मैथिल अनुश्रुति सबसँ ई ज्ञात होइत छैक जे मल्लदेव आओर गंगदेवमे नहि पटैत छलनि । जखन गंगदेव नेपाल आओर गौड़ देश सङ्ग बाझल छलाह, तखन मल्लदेव ओकर सहायता नहि केलनि ।

मधेपुरा आओर सुपौल सबडिवीजनमे मलडीहा आओर मल्हनी गोपाल परगना, कहल जाइत छैक, मल्लदेवेक नामपर बसल छलैक । १९४६ मे हम जखन भीठ भगवानपुर गेल छलहुँ तँ ओहिठाम मल्लदेवक एकगोट शिला-

---

एवं देखू :

नन्देन्दु विन्दु विधु सम्मितशाक वर्षे
सच्छ्रावणे शितदले मुनिसिद्धि तिथ्याम्
स्वाती तौ शनैश्चर दिने करिवरै लग्ने
श्री नान्यदेव नृपति व्यदधातु वास्तुम्

आर देखू हमर Inscriptions of Bihar.

४८. नान्यदेवक समयसँ आइधरिक वंश सूची लेखककें प्राप्त छैन्ह । रत्नदेव नान्यदेवक सहायक छलाह ।

४९. देखू हमर पूर्वोल्लिखित लेख ।

लेख पाओल जाहिमे लिखल छैक—'ओम् श्री मल्लदेवस्य'[५०]। एहिसँ ई सिद्ध होइत छैक जे कोनो-ने-कोनो प्रकारक आधिपत्य ओतऽ मल्लदेवक अवश्ये छल हेतै। ओतऽ जनश्रुति सबहिक आधारपर हमरा ई ज्ञात भेल जे भीठ भगवानपुर मल्लदेवक राजधानी छलै। जनश्रुतिमे ऐतिहासिक तथ्य छैक, तेँ एतए देब आवश्यक बूझि पड़ैत अछि। परमार भोजक समयमे दुइ गोट रजिपूत नेता 'लखेस' आओर 'परवेस' मिथिलामें आबि कए बसि गेल छलाह आओर गंधवारि नामक स्थान पर ओ अपन डीह स्थापित कएने छलाह। इएह सब पश्चात् गंधवरिया रजिपूत कहल गेलाह। लखेसक पुत्र छलाह 'मल्लदेव'। यदि उत्खनन हो तँ ओहिठाम अनेक ऐतिहासिक सामग्री पाओल जाएत। जनश्रुतिक अनुसार ते ई 'मल्लदेव' गन्धवरिया रजिपूतक पूर्वज कहल जाइत छथि, किन्तु हम अपन निवन्धमे ओकरा नान्यदेवक पुत्र 'मल्लदेव' सिद्ध कएने छियैक। हमर ई अनुमान अछि जे नान्यदेवक पश्चात् मिथिलाक राज्यक विभाजन भेलै आओर पूर्वीभाग पर मल्लदेवक आधिपत्य भेलैक। पश्चात् मल्लदेवक वंशज सेहो एहि क्षेत्रपर शासन कएलक[५०(क)]।

---

५०. गन्धवरिया रजिपूत वंशवृत्तमे मल्लदेवक नाम नहि देखल जाइत छैक। मिथिलामें जते रजिपूत जमीन्दार छथि, ओ सब केओ प्रायः नान्यदेव वा ओकर पुत्र मल्लदेवकें अपन पूर्वज मानैत छथि। मिथिलामे रजिपूत वंश सबहिक इतिहास एखनधरि नहि लिखल गेल छैक। रजिपूत सबहिक इतिहासक बिना मिथिलाक इतिहास अपूर्ण रहत। देखू 'भागलपुर दर्पण' पृ० २८२-२६१।

५०(क). १९५४ ई०क बहेड़ाक उत्खननसँ मिथिलाक इतिहास सम्बन्धी बहुत किछु वस्तु प्राप्त भेल अछि। ओहि उत्खननक सम्पूर्ण श्रेय डा० व्रजकिशोर वर्माकें छैन्ह। उत्खननक जे वैज्ञानिक पद्धति छैक तकर सर्वथा ओहिठाम अवहेलना भेल अछि तथापि ओहिठाम सँ जे किछु बहराएल अछि तकर ऐतिहासिक महत्व कोनो हालते कम नहि कहल जा सकैये। ओही ठामक सबसँ महत्वपूर्ण आविष्कार अछि एकगोट मन्दिरक भग्नावशेष। उत्तर विहारक उत्खननमे आइधरि कतउ मन्दिर नहि भेटल छल ताहि दृष्टिएँ एकरा अपूर्व आविष्कार कहल जा सकैये। प्राचीन भारतीय मन्दिर कला शैलीक जे मापदण्ड अछि, ठीक तकरे अनुरूप ई मन्दिर बनल अछि तेँ ई कहबामे कनेको असौकर्य नहि जे कर्णाट लोकनि भारतीय परम्पराकें निबाहैत मिथिलाक कलाक अभिवृद्धिमे अपन योगदान देलनि अछि। ओहिठाम सँ किछु मूर्ति आदि सेहो भेटल अछि।

विशेष विवरणक हेतु देखू—लेखकक 'Some Recent Discoveries in North Bihar' (JBRS 1957).

एकर प्रमाण अप्रत्यक्ष रूपमे पाओल जा सकैत अछि। इएह कारण छियैक जे नान्यदेवक पश्चात् अपना सब कर्णाट राज्यक विस्तार नहि देखैत छियैक। पश्चातो जखन ई सब बढ़लाह तँ मात्र नेपाले दिसि। किछु हो, एतेधरि निश्चित छैक जे शिलालेख बारहम शताब्दक सएह छियैक आओर कला-कौशल सँ इएह ज्ञातो होइत छैक। विशेष खोज आओर ओहि स्थानक उत्खननसँ तिरहुतक इतिहासपर बेश प्रकाश पड़तै, एहिमे सन्देह नहि। १२१३-१२२७क मध्य कोनो अरिमल्लदेव नामक कर्णाट राजा तिरहुतमे नहि छलाह जेना कि डाक्टर कानूनगो महोदयक कथन छियैन्ह। हुनक निम्नलिखित निर्णय मात्र सन्देहात्मके नहि, बल्कि असत्य ज्ञात होइत अछि :

The old Karnatak Kingdom of Mithila was about this time (1213-1227) breaking into fragments after the death of Arimalladeva, and these Princes, in despair of holding their possessions in the plains, hemmed in between the muslim provinces of Oudh on one side and the territory of Lakhanavati on the other, were seeking compensation in the valley of Nepal. The ruler of Eastern Tirhut could not but come within the sphere of Lakhanavati—(K. R. Qanungo in 'History of Bengal', Vol. 2, p. 22-23, Edited by Sir Jadunath Sarkar and Published by the University of Dacca). मिथिलाक कर्णाट वंशमे अरिमल्लदेव नामक राजा नहि भेलाह। एहि शंकाक समाधानक हेतु हम प्रो॰ कानूनगो साहेबकें लिखलिअनि आओर हुनकहि आदेशानुसार डा॰ रमेशचन्द्र मजुमदारकें सेहो। श्रीमजुमदार साहेब ई लिखलैन जे कर्णाट वंशमे अरिमल्लदेव नामक कोनो शासक नहि भेला, जेकर राज्य मिथिलामे छल हो। ई प्रश्न सब इतिहासकारक हेतु छैन्ह। मिथिलाक इतिहास एखनहु पूर्णरूपेण प्राप्त नहि भऽ सकलैक अछि; किन्तु एहि प्रकारक भ्रामक बात सबकें स्थान नहि भेटबाक चाही[५१]। सम्भवतः कानूनगो महोदय मल्लदेवेकें अरिमल्लदेव बूझि गेल छथिन।

५१. मिथिलाक इतिहासक हेतु देखू—JASB (N.S.) XI.

गंगदेव अपन मंत्री श्रीधरदासक सहायताहँ उत्तमोत्तम रीतिसँ अपन राजकार्य चलबैत छलाह। ओकरा समयमे शासन प्रणालीकें दृढ़ बनाओल गेलैक। राजस्वकर ओसूलबाक विचारसँ ओ अपन राजकें परगनामे विभाजित केलकै। प्रत्येक परगनामे मुखिआ वा प्रधान नियुक्त कएल गेलैक जे चौधरीक नामसँ प्रसिद्ध भेल। न्याय दानक हेतु पंचायतक व्यवस्था कएल गेलैक। गंगदेव आओर मल्लदेवक समय धरि तिरहुत आओर नेपालक सम्बन्ध नीक छलैक, एहिमे सन्देह नहि। गंगदेवक पश्चात् नरसिंहदेव राजा भेलैक। ओकरा समयमे मिथिला आओर नेपाल मध्य किछु खटपट भेलै। नरसिंहदेव अपन पित्ती मल्लदेव सङ्ग कन्नौज गेल करैत छल। 'पुरुष-परीक्षा'मे नरसिंहदेवक विषयमे ई कहल गेल छैक। ओकर पश्चात् रामसिंहदेव राजा भेला। ओ विद्या आओर धर्मक स्नेही छल। ओकर समयमे वेदक टीका सब लिखल गेलैक, सामाजिक आओर धार्मिक नियम सबकें प्रतिपादन कएल गेलै आओर शासन-विधानमे बेश सुधार भेलैक। प्रत्येक गामक हेतु कोतबाल नियुक्त कएल गेलै। गामक प्रत्येक समाचार कोतवाल चौधरीकें दैत छलैक। ओकरे समयमे पटवारी सबहिक प्रथा आरम्भ भेलैक ओ बड्ड पैघ विद्या-प्रेमी छल आओर ओकरे समयमे श्रीधर आचार्य अमरकोषक टिप्पणी लिखलनि। देवादित्य ठाकुर ओकर सन्धि-विग्रहिक छला। रामसिंहदेवक समय प्रसिद्ध तिब्बती यात्री धर्मस्वामी तिरहुत आएल छला। ओ रामसिंहदेव सङ्ग किछु दिन रहल सेहो छला। रामसिंहदेवक प्रति मुसलमान सबहिक प्रकोप बढ़ले जाइत छलै। एकर उल्लेख सेहो धर्मस्वामी अपन विवरणमे कएने छथि। नेपालस तिरहुत पहुँचबामे धर्मस्वामीकें तीन मास लागल छलनि। १२३६मे बोधगयासँ घुरैतकाल धर्मस्वामी तिरहुत पहुँचला आओर 'प–त–' नामक नगरमे वास केलनि। डा० अल्तेकर एकरा सिमराँव कहलथिन अछि परन्तु ई सन्देहास्पद छैक। ई नगर उत्तरमे छलैक। एतए पहुँचलापर ओ ज्वरसँ पीड़ित भेला। एहिकालमे हुनका तिब्बतक एकगोट तांत्रिकसँ भेंट भेलनि। ज्वरस आराम भेलापर ओ मिथिलाक राजा रामसिंहसँ भेंट केलनि। रामसिंह हुनका बहुत किछु उपहारमे देलकनि आओर हुनका किछु दिन आओर रहबा लेल कहलकनि। रामसिंह हुनका प्रधान पुरोहित बनाकए रहबाक आग्रह केलकनि परन्तु धर्मस्वामी एकरा अस्वीकार कऽ देलथिन्ह

आओर अक्टूबर १२३६मे नेपाल[५२]क हेतु विदा भऽ गेल। धर्मस्वामीक विवरणसँ इहो ज्ञात होइत छैक जे मुसलमान सबहिक आक्रमण बढ़ि रहल छलैक आओर एहि दुआरे रामसिंह किलाबन्दी पर बेसी जोर देने छलै। रामसिंहक भवन सात गोट भीत आओर २१ गोट खाधिसँ घेरल छलै। ओकर विवरणसँ इहो ज्ञात होइत छैक जे वैशालीमे एकटा ताराक मूर्ति छलै। वैशाली निवासी हड़कम्पित छल। कियैकतँ तुरूक सबहिक आक्रमणक शंका बढ़िते जाइत छलैक। किछु संस्कृत पाण्डुलिपिक पुष्पिकासँ सेहो एहि बातक पुष्टि होइत छैक जे रामसिंहकें मुसलमान सबसँ लड़ए पड़ल छलै। ओकर पश्चात् शक्तिसिंह[५३] राजा भेला। ओ बड़ु अत्याचारी शासक छला। ओकर निरंकुश शासनकें रोकबाक हेतु वृद्ध सब सातटा वृद्धक एकगोट परिषद् बनौलक। ओकर पश्चात् हरिसिंहदेव राजा भेला। १९५५मे बेगूसराय अंचल सँ गण्डकक कात रूकनूद्दीन कैकसक एकगोट शिलालेख भेटलैक अछि जे १२९१ ई०क छियैक। ई कतेको दृष्टिकोणसँ महत्वपूर्ण छैक। ई लेख महेशवारा बस्तीसँ भेटलैक अछि। रूकनूद्दीन कैकसक एकगोट मुद्रा १२९१क पूर्वकालक बंगालमे भेटल छलै किन्तु पुनि एकर राजा होएबा पर लोक सबकें सन्देह छलै। एकर एकगोट लेख मुंगेरक लक्खीसराय इलाकामे

---

५२. Life of Dharmaswami by G. Roerich (Moscow) published by the K. P. Jayaswal Institute, Patna (1959); आओर देखू: R. K. Choudhary–G. D. College Bulletin No. 4 ओहीमे डा० अल्तेरक निबन्ध। इटलीक सुप्रसिद्ध इतिहासकार Luciano Petech अपन पुस्तक Medieval History of Nepalमें रामसिंहक तिथिक सम्बन्धमे हमर मतक खण्डन कएलनि अछि। परन्तु एतए ई कहब सत्य होएत जे धर्मस्वामीक जीवनीक अध्ययनसँ रामसिंहक काल ठीक बुझना जाइत अछि आओर डा० अल्तेकर सेहो एकरा मानैत छथिन।

देखू हमर पुस्तक History of Muslim rule in Tirhut (शीघ्रे प्रकाशित होएत)।

५३. परमेश्वरझाक अनुसार 'शक्रसिंह'—मिथिला-तत्व-विमर्श पृ० ११८। नेपाल शिलालेखमे ओकर नाम शक्तिसिंह सएह छैक।

सेहो प्राओल गेल छलै परंतु तखनहु एकरा सम्बन्धमे पूर्ण जानकारी नहि छलैक। महेशवारा लेख पूर्वी भारतमे प्राप्त अरबी शिलालेख सबमे महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत छैक। एहिसँ ई सिद्ध होइत छैक जे गण्डक क्षेत्रधरि रुकनुद्दीन कैकसक प्रभाव बढ़ि गेल छलै आओर कर्णाट सब बंगाल सुल्तानक दबावसँ तबाह भऽ रहल छला। मुल्ला तकिआ एहि दिशि संकेत कएने छै यद्यपि एकर विशेष उल्लेख ओ नहि कएने छैक[५४]। गण्डक क्षेत्रमे, एहि शिलालेखक प्राप्ति भेलासँ एक्के बातक सम्भावना छै जे ओहि कालतक अबैत-अबैत कर्णाट सबहिक शक्ति दक्षिणमे क्षीण भऽ रहल छलैन्ह। हरिसिंहदेव कर्णाट वंशक सबसँ प्रतापी राजा छलै। ओ "कर्णाट वंशोद्भव शत्रुजेता हरिसिंहदेव महाराज" कहाओल जाइत छला। देवादित्य ओकर सन्धिविग्रहिक छलैक। ओकर पश्चात् वीरेश्वर ओकर मंत्री भेला। हरिसिंहदेवक मंत्री चन्देश्वर ठाकुर[५५] सेहो छला। एकर समयमे नेपालपर आक्रमण भेलै। चन्देश्वर वाग्मती नदीक तटपर स्वर्णतुला पुरुष महादान कएलनि। नाबालिक होएबाक कारण हरिसिंहदेवकें अनेक दिनधरि मंत्री सबहिक अधीने रहए पड़लनि। हरिसिंहेक कालमे पंजी निर्णय भेल छल। १३२३-२४ ई०मे गियासुद्दीन

५४. विशेष देखू हमर निबंध—'Maheswar Inscription of Rukmuddin Kaikus' in ABORI XXXVI.

५५. 'राजनीति रत्नाकर'क प्रसिद्ध रचयिता—प्राकृत-पैङ्गलम्सँ ज्ञात होइत अछि जे चण्डेश्वरक अधीन एकटा सामन्त छला जेकर नाम हरिब्रह्म छल। ई एकटा सुप्रसिद्ध कवि छलाह। हिनक रचना एखनहु प्राकृत-पैङ्गलम् सुरक्षित अछि।—

देखू: प्राकृत-पैङ्गलम् (Published by the Asiatic Society of Bengal, Calcutta 1901 A. D.)

चन्डेश्वरक राजनीति-रत्नाकर भारतीय राजनीति-शास्त्रक एकटा अपूर्व ग्रंथ मानल जाइत अछि। एहिसँ तत्कालीन शासन-प्रणालीक ज्ञान होइत अछि। चण्डेश्वर सातटा रत्नाकरक रचना कएने छलाह जाहिसँ तत्कालीन मिथिलाक सामाजिक इतिहासक ज्ञान सेहो होइत अछि।

तुगलक मिथिला पर आक्रमण केलक[५६]। हरिसिंहदेव ओतऽ सँ भागिकेँ नेपाल गेला आओर ओहिठाम अपन राज्य स्थापित केलनि। ई प्रश्न एखनधरि विवादास्पद छैक। तहिआसँ ओकर वंशज १७६४ ई० धरि राज्य करैत रहलनि[५७]। नेपालमे ओकर वंशक सम्बन्ध चीनक सम्राटसँ छल आओर चीनसँ सदिखन हुनका सबहिक हेतु उपहार अबैत छल। मिथिलामे सेहो ओकर वंशज सबहिक प्रभाव कतहु-कतहु छल आओर एहि प्रकार १३७५ ई० धरि एहि वंशक राज्य मिथिलामे छल। मिथिलामे एकर वंशज सब मुसलमान सबहिक विरुद्ध आन्दोलन कएने रहल आओर अनेक दिनधरि अपन राज्य बनौने रहल। तुगलक मिथिलाकें दिल्ली सल्तनतमे मिलाए लेलक आओर

५६. Ferista : 'As the king was passing near the hills of Tirhut, the Raja appeared in arms but was pursued into the woods.'

आगे—Tarikhi - Firozshahi (Elliot) Vol. 3 p. 234

ज्योतिरीश्वर ठाकुर सेहो अपन 'धूर्त्तसमागम'मे एकर प्रहसन एहि प्रकार कएलनि अछि :

नानायोधनिरुद्धनिर्जितसुरत्राणात्र सद्वाहिनी
नृत्यद्भीमकबन्धमेलकदलतभूमिभ्रमद्भुधरः ॥
अस्ति श्रीहरिसिंहदेव नृपतिः कर्णाट चूड़ामणिः
दृप्यत्पार्थिव सार्थमौलिमुकुटन्यस्तांघ्रि पंकेरुहः ॥

एहि सम्बन्धमे डा० रमेश मजुमदारक एकटा लेख JBRS (1957) मे छपल छैक। हुनक मतक खण्डनक हेतु देखू डा० श्री उपेन्द्र ठाकुरक King Harisimha of Mithila (a re-assessment of facts) डा० मजुमदारक लेख भारतीय विद्याभवनसँ प्रकाशित History and culture of the Indian People Vol. VIमे सेहो छपल छैक।

एहि विषयक वर्णन फारसी पुस्तक 'वसातिनुलउन्स'मे छैक जेकर प्रतिलिपि ब्रिटिश म्युजिअम लन्दनमे एखनहु सुरक्षित छैक। किछु पृष्ठ सबहिक फोटो प्रतिलिपि हमरहु लग अछि।

५७. Oldfield—Sketches from Nepal, Vol. I

सुगौनाक कामेश्वर ठाकुरकें मिथिलाक शासक बनौलक। किन्तु आन राष्ट्रसब जेकाँ मिथिलामे मुसलमान सबहिक आधिपत्य नहि भऽ सकलै। दिल्लीकें मात्र 'कर'सँ सम्बन्ध छलै। एकर अतिरिक्त मिथिलाक स्वतंत्रता सुरक्षित छलैक। मुहम्मद तुगलक तिरहुतसँ अपन मुद्रा निकाललक। ओहि मुद्रा सबमे दुइगोट एखनहु उपलब्ध छैक आओर ओहिसबपर साल सेहो अंकित छैक जे अंग्रेजी सालक हिसाबें १३३०-३१ होइत छैक। ई मुद्रा इन्डिअन म्युजिअममे छैक। कर्णाट वंशक समयमे संस्कृत-साहित्य चरमोत्कर्ष पर छलैक। मिथिला स्मृतिक प्रसिद्ध केन्द्र छलैक। एहि वंशक समयेमे मैथिली भाषाक सर्वप्रथम पुस्तक 'वर्ण - रत्नाकर' लिखल गेल छलै। एकर लेखक छलाह श्रीज्योतिरीश्वर ठाकुर। न्याय आओर तर्कक शिक्षाक हेतु मिथिला बड्ड प्रसिद्ध छल आओर एहीठाम पढिकए विद्वान् सब नदिया[५८] जाइत छला। कन्नौज, मगध आओर गौडक तुर्क सब द्वारा जीति लेल गेलापर ओतुका ब्राह्मण आओर श्रमणसब पड़ाएकए तिरहुत, नेपाल आओर तिब्बतमे आश्रय लेलनि। तिरहुत हिन्दू-संस्कृति आओर विद्याक आश्रय-स्थान आओर केन्द्र छल। ओहि युगमे धर्मशास्त्र पर अनेक निबंध लिखल गेलै।

किछु दिन पूर्व लहेरिआसरायक समीप पंचोभ ग्राममे मांडलिक राजा संग्रामदेव गुप्तक एकटा अभिलेख पाओल गेल छैक[५९]। लिपिक आधारपर एकरा १३म शताब्दीक कहल जाए सकैत छैक। एहिमे छः राजा सबहिक उल्लेख छैक :

(१) यज्ञेश गुप्त
(२) दामोदर गुप्त
(३) देव गुप्त

---

५८. The civilisation of Bengal, the new learning specially that of logic, which made the Tols of Nadia famous throughout India, came from Mithilā when Magadha had ceased to give light to eastern India. (D. C. Sen—History of Bengali Language and Literature)

५९. Panchobh Copper plate of Sangrām Gupta—JBROS Vol. V 582ff.

(४) राजादित्य गुप्त
(५) कृष्ण गुप्त
(६) संग्राम गुप्त

ओहिमे उपर्युक्त तीनटाकेँ मात्र राजा कहल गेल छैक। संग्राम गुप्त "परम भट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर आओर महामाण्डलिक' पदवी सँ विभूषित छलैक। ई सब गुप्त नामसँ प्रसिद्ध छथि आओर ई सब अपनाकेँ कोनो सोमवंशी अर्जुनक वंशज बुझैत छथि। भऽ सकैत छै ई सम्राट् हर्षवर्द्धनक प्रतिनिधि अर्जुनेक वंशज होथु। एहि वंशक प्रधान नगर जयपुर कहल जाइ छैक। किछु इतिहासकार एकरा मुंगेर जिलाक जयनगर बुझैत छथि [६०]। आओर ई कहऽ चाहै छथि जे सब पाल वा सेन वंशक महा-माण्डलिक रहल होएता। किन्तु ई निर्णय तथ्यपूर्ण नहि लगैत अछि, कियैक तँ ओहि कालमे मिथिलामे कर्णाट वंशक राज्य छलैक। दोसर बात ई जे दरभंगा जिलामे जयनगर नामक एकटा प्रसिद्ध स्थान छैक। संग्रामदेव अवश्ये एहि कर्णाट सबहक महामाण्डलिक छल हेतै।

कर्णाट वंशक अन्त भेलो पर मिथिलाक किछु क्षेत्र सबमे कर्णाट सबहिक शासन विद्यमान छलै आओर एकर प्रमाण सेहो पाओल जाइत छैक। श्रीवल्लभाचार्य कर्णाट राजवंशक उल्लेख कएलनि अछि [६१]। श्री बल्लभ अपन राजाकेँ नृपति कहलथिन अछि। हिनक काल बारहम शताब्दिक लगभग छलैन। एहि सम्बन्धमे सबसँ महत्वपूर्ण मधुसूदन ठाकुरक 'कण्टकोद्धार' पुस्तकक पुष्पिका बड़े महत्वपूर्ण छैक। तैन्जोर कैटलॉगक जे प्रतिलिपि छैक (pp. 453-457) ओहिमे ई कहल गेल छैक जे मधु-

६०. History of Bengal, Vol. I R. C. Mazumdar, (Published by the University of Dacca) p. 261.

जयनगर नामक अनेक गाम मिथिलामे छैक। विशेष विवरणक हेतु देखू हमर Inscriptions of Bihar. हालमे डा० उपेन्द्र ठाकुर एही ताम्रलेखपर एक गोट लेख प्रकाशित कएलैन अछि (IHQ, 1958) ओहिमे ओहो किछु दोष कएने छथिन जे कालक ध्यान नहि रखने छथि।

६१. यदि च गगनमात्मा वान्यधर्मेणान्य वच्छिन्द्यात् काश्मीरवर्तिना कुङ्कुमरागेण कार्णाट् चक्रवर्ति (ललना) कर कमलवच्छिन्द्यात्। दिवाकर उपाध्यायक रचनामे सेहो कोनो मिथिलेश्वरक उल्लेख आएल छैक परन्तु नाम नहि भेटैत छैक।

सूदन ठाकुर एकरा कर्णाट चक्रवर्ति महाराजाधिराज रामराजक अधीन एकरा लिखलकै। मधुसूदन ठाकुर सोलहम शताब्दमे भेल छलाह। एकर एक गोट प्रतिलिपि राज दरभंगा पुस्तकालयमे छैक आओर ओहि पुस्तकक पुष्पिकामे कहल गेल छै :

'इति महाराजाधिराज कर्णाट चक्रवर्ति भुजबल भीम समस्त दिग्विजयार्जित सम्मत्सन्तोष निखिल भूमण्डल श्री रामराज कारितायां महामहोपाध्याय सठक्कुर श्री मधुसूदन कृता वनुमानालोक कण्टको द्वारः सम्पूर्ण मिति ॥ ल० सं० ५२६ फाल्गुन शुक्लाष्टम्या मध्ययन शालिना श्री भवदेव शर्मणा भौर ग्रामेऽपूरीयमिति ॥' ई कर्णाट शासक निश्चये नान्यदेवक वंशक छल हेतै। नान्यदेवक वंशक पतनक पश्चात् ओइनवार सबहिक शासन भेलै आओर पुनि हुनक शासनान्त होएबाक पश्चात् सम्भवतः ई कर्णाट अपन शक्ति मिथिलामे कोनो स्थानमे बढ़ौने होएता। रामरोज एहने कर्णाट वंशक शासक छल हेतै। भऽ सकैत छैक जे ई नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवक वंशज छल हो आओर उत्तरी पूर्वी मिथिलामे हिनक आधिपत्य तखन धरि बनल हो।

कर्णाट वंशक अन्त भेलापर सुगाँव ( वा ओइनवार ) वंशक राज्य मिथिलामे आरम्भ भेलैक। एहि वंशक संस्थापक छला कामेश्वर [६२]। गियासुद्दीन तुगलक कामेश्वरकेँ मिथिलाक राजा बनौने छलैक। वर्धमानक 'गंगकृत्य विवेक' मे सेहो एकर उल्लेख एहि प्रकार छैक—'कामेशो मिथिलामासत'। ओ १३२५ ई० मे मिथिलाक राजा बनाओल गेल। एहि वंशकेँ ठाकुर वंश सेहो कहल गेल छैक। कामेश्वरक पश्चात् ओकर पुत्र भोगीश्वर राजा भेलैक [६३]। भोगीश्वर फीरोजक मित्र छलैक [६४]। ओकर

---

६२. Dr. Grierson's note on the mediæval poets and kings of Mithila, Indian Antiquary—Vol. XIV p. 192; Vol. XXVIII p. 57; JASB LXVIII Part I p. 96.

६३. विद्यापति—'राउभोगिसर गुणनागरारे पञ्चादेवि रमाना।'
( Vidyapati Padavali—N. N. Gupta-Verse no. 801 ).

६४. विद्यापति—'कीर्तिलता'

एहि लेखमे ठाकुर वंशक सम्बन्धमे जे किछुओ कहल गेल छैक ओ परम्परागत आधार पर। एहि लेखकेँ लिखबाक पश्चात् एहि विषयपर जे अनुसन्धान कएने छथि, ओहिसँ उपर्युक्त धारणा सबमे थोड़-बहुत परिवर्तनक सम्भावना छैक।

देखू—'The Oinwaras of Mithila' in the JBRS XL Part II 1953.

पश्चात् गणेश्वर राजा भेलाह। गणेश्वर कोनो लड़ाइमे लड़ैत काल मारल गेला। ओकर पश्चात् वीरसिंह राजा भेला आओर तकरा पश्चात् कीर्तिसिंह। विद्यापतिक शब्दमे ओ 'पिताक बैरी सबसँ अपन राज्यलक्ष्मीक रक्षा कएलन्हि'। कीर्तिलतामे ओहि राजाक कीर्ति गाओल गेल छैनि। कीर्तिसिंहक पश्चात् भवसिंह वा भवेश ओतएक राजा भेलाह। पुरुषपरीक्षामे कहल गेल छैक जे ओ बागमती नदीक कात अपन शरीर त्याग कएलनि। भवसिंहक पश्चात् देवसिंह 'गरुड़ नारायण' ओतुक्का राजा भेला आओर तत्पश्चात् शिवसिंह रूपनारायण तिरहुतक राजा भेला। शिवसिंह ओहि वंशक सबसँ प्रतापी राजा भेला आओर विद्यापति हुनक राजकवि छलाह। शिवसिंहपर किछु लिखबासँ पूर्व ओहि वंश कालमे जे मुसलमानक आक्रमण भेलैक, ओहि विषयमे किछु कहि देब आवश्यक होएत। अपने सब देखि आयल छी जे मुहम्मद तुगलक तिरहुतमे एक गोट टकसालक स्थापना कएलक, जेकर नाम छलैक तुगलगपुर। ओहि कालमे साम्राज्यक अनेक अंश स्वतन्त्र भऽ गेल छलैक। १३३९ ई० मे बंगालमे पुनि विद्रोह भेलैक। शमसुद्दीन इलिआस नामक एकगोट व्यक्ति (१३४६ ई०मे) लखनौतीकेँ दखल कए तिरहुतपर आक्रमण कएलक। इलिआस शाह तिरहुत, बिहार आओर बनारसपर अपन आधिपत्य जमौलक। इलिआस तिरहुत राज्यकेँ दुइ भागमे बाँटि देलक। गण्डक नदीक दक्षिणक भाग इलिआसक अधीन छलैक आओर उत्तरक भाग ओइनवार वंशक अधीन। गण्डक नदीक तटपर ओ शमसुद्दीनपुर नामक शहर बसौलक जे आइ-काल्हि समस्तीपुरक नामसँ प्रसिद्ध छैक। ओ नेपालपर सेहो आक्रमण कएलक। फिरोज तुगलक ओकर विरुद्ध आक्रमण कएलकैक। ओ (तुगलक) गोरखपुर आओर तिरहुत बाटे आगू बढ़ल। फिरोज तुगलक तिरहुतके दिल्लीक एकटा प्रान्त बनाए लेलकैक आओर ओतए कर ओसूल करबाक हेतु अपन अफसर नियुक्त कएलक। फिरोज तुगलक कोशी नदी पार कऽकेँ इलिआस शाहक विरुद्ध बंगाल दिशि बढ़ल, किन्तु ओ विजयी नहि भेल, एहि कारणेँ सन्धि कऽकेँ घुरि गेल।

विद्यापतिक लेख सबसँ ठाकुर वंशक विषयमे अनेक-किछु ज्ञात होइत छैक। भवसिंहेक आज्ञासँ विद्यापति 'भू-परिक्रमा' पुस्तक लिखलनि।

भवसिंहक समयमे हरिहर न्याय-विभागक अध्यक्ष छला। शिवसिंहक समयमे तिरहुत राज्य बड़ शक्तिशाली भेल। नेन्नेसँ शिवसिंह राज-काज दिशि ध्यान देबऽ लगलथिन। ओ परम विद्वान्, उदार, प्रतापी आओर दानी छलाह। प्रजाक नीकक हेतु ओ स्थान-स्थानपर पोखरि कोड़बौलनि। एहि प्रसंगमे हुनक सम्बन्धमे एकटा लोकोक्ति छैक :

*पोखरि रजोखरि आरो सब पोखरा, राजा शिवसिंह आरो सब छोकड़ा।*
*तालते भुपाल ताल आरो सभ तलैया। राजा ते शिवसिंह आरो सभ रजैया।*

हुनक समयमे सेहो मुसलमान सबहिक आक्रमण भेलैक। हुनक समयमे सोनाक सिक्का चलैत छलैक। शिवसिंहक संघर्ष पश्चिमक जौनपुरक शर्की राजा सबहिक सङ्ग भेल छलै। ओनातँ एहि लड़ाइअक पूर्ण विवरण ज्ञात नहि छैक कियैक तँ 'कीर्तिपताका' एखनहु पूर्णरूपेण उपलब्ध नहि छैक, पुनरपि शिवसिंहक सोनाक मुद्राक आधारपर ई कहल जा सकैत छैक जे ओ अपनाकें स्वतंत्र घोषित कएने छला आओर अपन नामसँ मुद्रा चलबौने छला। पश्चात् जखन मुसलमानक प्रकोप बढ़लैक तखन शिवसिंह लड़ैतकाल मारल गेला अथवा कतउ पड़ाए गेला। एहि सम्बन्धमे एखन निश्चित् रूपसँ किछु नहि कहल जाए सकैत छैक। हुनका कालमे धार्मिक सहिष्णुता छल। अमृतकर ओकर प्रधान मंत्री छला। कहल जाइत छैक जे एक बेरि शिवसिंहकें गिरफ्तार कऽके दिल्ली लऽ गेलनि तें विद्यापति हुनका ओतएसँ मुक्त करबाकऽ अनलनि। हुनकर राजधानी गजरथपुर वा शिवसिंहपुर छलनि[६५]। किछु दिनधरि विद्यापतिक मदतिसँ रानी लखिमा राज्य केलनि। शिवसिंह सोनाक मुद्रा चलबौलनि, एहि आधारपर ई कहल जाइत छैक जे ओ मिथिलाकें पूर्णरूपेण स्वतंत्र बनाए लेने छलाह[६६]। शिवसिंहक पश्चात् ओकर छोट भाइ पद्मसिंह राजा भेला[६७]। आओर

---

६५. 'महाराजाधिराज श्रीमत् शिवसिंहदेव संभुज्यमानतीरभुक्तौ श्रीगजरथपुर नगरे सत्प्रक्रियसदुपाध्याय श्रीविद्यापति नामाज्ञया खोआलसं—( Asiatic Society Bengal, Mss. Collections )—देखू शिवसिंहक मुद्रा पर डा० उपेन्द्र ठाकुरक निबन्ध—JNSI. ( 1958 )

आओर देखू शीघ्रे प्रकाशित होबऽबला हमर निबन्ध—Later Karnatas and Later Oinwaras.

६६. देखू Annual Report of the Archaeological Survey of India, 1913-1914. एवं S. N. Singh—History of Tirhut p. 73.

६७. विद्यापति : शैवसर्वस्वसार।

ओकर पश्चात् हरिसिंहदेव। विद्यापतिक 'विभासागर'मे ओकर उल्लेख छैक[६८]। हुनकर बाद नरसिंहदेव राजा भेलाह; जनिकर विरुद्ध छल दर्प-नारायण। कतहु-कतहु हुनका रत्नसिंह सेहो कहल गेल छन्हि[६९]। हुनक पश्चात् धीरसिंह कंस-नारायण राजा भेलाह आओर हुनक पश्चात् हुनक छोट भाई भैरवसिंह राजगद्दीपर बैसला। हुनक स्त्री जयाक अनुरोधे पर वाचस्पति मिश्र 'द्वैत-निर्णय' लिखने छलाह। वर्धमान ओहिकालमे धर्माधिकारक वा न्यायालयाध्यक्ष छलाह। कहल जाइत अछि जे धीरसिंहेक समयमे भैरव अपन बहादुरीसँ पंचगौड़क शासककें परास्त केलनि[७०]।

---

६८. देखू—वाचस्पति मिश्र : कृत्यमहार्णव

६९. परमेश्वर झा : मिथिलातत्वविमर्श पृ० १७०। मधेपुरा सबडिवीजनक कन्दाहा ग्राममे नरसिंह देवक एकटा शिलालेख पाओल गेल छैक। कन्दाहा शिलालेख-पृथ्वीपति द्विजवरो भव [ सिंह आ ] सीदाशी विषेन्द्र वपुरुज्वल कीर्तिराशि। तस्यात्मजः सकल कृत्य विचार धीरो वीरो ( ब ) भूव वि [···सिंहदेवः ॥१॥ ( दोः ? ) स्तम्भ द्वय–निर्जि–न्त्रा–हिततप–श्रेणी–किरीटोपल–ज्योत्सना वर्धितपाद–पल्लव नख–श्रेणी–मयुखा वलिः। दाता तत्र वयोमयोक्त विधिना भूमण्डलं पालयन धीरः श्री नरसिंह–भूप–तिलकः कान्तो धुना राजते ॥२॥ विदेशतोस्यायत नंखेरिदमचीकरत्। विल्व पंच कुलोद्भुतः श्रीमद्वंश धरे कृती ॥३॥ ज्येष्ठे मास शाकाब्दे श्वराश्वमदनांकितेस्य गिरा। बुध पाटकीय चन्द्रः कृतवानेतानि पद्यानि ॥४॥

७०. गौडेश्वर प्रतिसरीरमति प्रतापः केदाररायमवगच्छति दारतुल्यम्। ई केदार राय बंगाल सुलतानक प्रतिनिधि छलाह। ( Vardhman—Danda Viveka )

देखू—हमर निबंध : The Bhagirathpur Inscription of Kansanarayan—P. I. H. C. ( Calcutta 1955 )

एतए ई स्मरण रखबाक चाही जे इलिआस जे तिरहुत राज्यक विभाजन कएने छल ओ बहुत दिन धरि रहलैक। इलिआसक पुत्र सिकन्दरक अनेक मुद्रा मधेपुराक साहुगर ग्राममे प्राप्त भेल छैक। गण्डकक दक्षिण भागमे बंगाल सुल्तानक प्रभाव बनल छलै आओर उत्तरमे ओइनवार सबहिक। बंगाल सुलतानक प्रधान केन्द्र हाजीपुरमे छलै आओर केदार राय बंगालक प्रतिनिधि छल। हमर ई विश्वास अछि जे गण्डकक उत्तर ओइनवार सब अपन स्वतंत्रता बनौने छलाह कियैक तँ शिवसिंहक बादो भैरवसिंहक चाँदीक मुद्रा पाओल गेल छैक। एक गोट सिक्का तें : दरभंगा जिलासँ प्राप्त भेल छैक आओर दोसर कलकत्ताक Indian Museum मे छैक। एहि सम्बन्धमे देखू हमर लेख—A unique silver coin of Rāmbhadra in the JNSI ( 1956 ) आओर ओहीमे डा० अल्तेकर आओर पी० एल० गुप्त आओर डी० सी० सरकारक निबंध आओर Epigraphia Indica XXXII.

भैरव सेहो तुलापुरुष यज्ञ कएने छलाह। भैरवक पश्चात् रामभद्रदेव रूपनारायण राजा भेलाह। एखन हालहिमे भगीरथपुर ग्राममे प्रो० श्रीकृष्णकान्त मिश्रक नेतृत्वमे जे उत्खनन भेल अछि ओहिमे एकगोट शिलालेख ज्ञात भेल अछि जे ओइनवार वंशक अंतिम शासकक समयक छल। एकर पूर्ण विवरण विहार रिसर्च सोसाइटीक पत्रिका[७०अ] मे छपल छैक। एहि लेखक आधारपर ई सिद्ध होइत छैक जे मुसलमान सबहिक प्रकोपक एहि क्षेत्रमे वेश वृद्धि भेल छल। कंस-नारायण मुसलमान सबहिक विरोधी छलाह। एहि लेखसँ एकटा नव कवि सेहो ज्ञात भेला अछि। जनिक नाम माधव छलैन्ह। कर्णाट वंशक कोनो मुद्रा नहि पाओल गेल छैक आओर ने कोनो प्रामाणिक शिलालेखे। ओइनवार वंशक अनेक शिलालेख आओर तीनगोट मुद्रा पाओल गेल अछि—जेकर आधारपर अपना सब ई कहि सकैत छियैक जे ई सब बहुत दूरधरि अपना क्षेत्रमे स्वतंत्र छला। चारूकातसँ मुसलमानक प्रकोप बढ़लाक पश्चाते ई सब परास्त भेला आओर हिनक शाखा मालदह (बंगाल) गेलैन्ह। मालदहमे ई सब एखनहु विद्यमान छथि आओर हुनक प्रतिनिधि छथिन श्रीअतुलचन्द्र कुमरक परिवार। भैरवक पश्चात् रामभद्रदेव रूपनारायणक समयमे रामभट्ट नामक एकगोट विद्वान् यात्री गयाजी जा रहल छला। हुनका ई ज्ञात भेलनि जे मिथिलाक राजा विद्या-प्रेमी छला, ताहिसँ रामभट्ट हुनका ओहिठाम अएला आओर तीरभुक्तिक विद्वत्-समाजसँ एते प्रभावित भेला जे ओ ओकर उल्लेख अपन पुस्तकमे सेहो केलनि अछि[७१]। हुनका उपरान्त लक्ष्मीनाथदेव कंस-नारायण ओहिठामक शासक भेलाह। लक्ष्मीनाथक दिल्लीक सिकन्दरलोदीस संघर्ष भेल। ओहि समय बंगालमे अलाउद्दीन हुसेन शाहक शासन छलनि। १४९६ ई०मे हुसेनशाह आओर सिकन्दरलोदी मध्य सन्धि भेल। ओहि संधिक अनुसार बिहार आओर तिरहुत सिकन्दर लोदीक बखरामे पड़लैक। सिकन्दर तिरहुतकें अपन कब्जामे कऽ लेलक[७२]।

---

७०अ देखू : प्रो० श्रीकृष्णकान्तमिश्रक निबन्ध JBRS, 1954 Vol. XL Pt.4.

७१. cf. विद्वत् प्रबोधिनी।

७२. Al Badaoni.

महामहोपाध्याय विभाकर प्रणीत द्वैतविवेक ग्रन्थसँ ई ज्ञात होइत अछि जे

एम्हर चम्पारणमे एकगोट नव वंशक स्थापना भऽ गेल छलैक। ओकर तेसर पीढ़ीमे राजा मदनसिंह दैत्यनारायण भेला। हुनक राज्य गोरखपुर धरि छलनि। हुनक मुद्रा हिमालयक तराइक सङ्गहि तिरहुतसँ दिल्ली धरि पाओल गेल छनि। हुसेन शाह शर्की अपन पूबक हिन्दू राज्य सबकेँ दबएबाक हेतु बहलोल लोदीसँ चारि वर्षक हेतु संधि कए तिरहुत पर आक्रमण कएलक आओर पुनि ओतएसँ उड़ीसापर। चम्पारणक एहि वंशक विषयमे कोनो विशेष सामग्री प्राप्त नहि भऽ सकल अछि। जे किछु हो, ठाकुर-वंश मिथिलाक इतिहास मध्य बड्ड महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कएने अछि। एहि वंशक तत्वावधानमे साहित्य, कला, व्याकरण, स्मृति, निबंध, दर्शन इत्यादिक पूर्ण विकास भेल; वेदान्त दर्शनक शंकराचार्य कृत भाष्यपर वाचस्पति मिश्र अपन टीका 'भामती' लिखलनि [७३]। श्रीराहुल सांकृत्यायनक अनुसार शंकराचार्यकेँ उत्तर भारतक पंडित-मण्डलीमे सर्वप्रिय बनएबाक श्रेय वाचस्पति मिश्रक एहि 'भामती' टीकाकेँ सएह छैक। एही वंशक समयमे महाकवि विद्यापति भेलाह, जे देवसिंहक समयसँ भैरवेन्द्रक समय धरि रचना कएलनि। हुनक स्थान विश्वक सर्वश्रेष्ठ कवि सबमे छन्हि। ओ संस्कृतक विद्वान् छलाह, किन्तु मातृभाषा मैथिलीक सेवा करब नहि बिसरलाह। एहो वंशक समयमे प्रसिद्ध गोनूझा जीवित छलाह। स्थानाभावक कारण एहि सबहिक विशद विश्लेषण एहिठाम नहि कएल जाइत अछि।

एहि वंशक पश्चात् मुसलमान सबहिक प्रभाव तिरहुतपर बढ़िते गेल। मुसलमानी साधन सबसँ ई ज्ञात होइत अछि जे १३९६ ई० मे तिरहुतमे

---

रूपनारायण सिकन्दर लोदीक मित्र छला।—'सिकन्दर पुरन्दरो गुरुदुरोदरक्रीड़या दिनं गमयति ध्रुवं विविध नागरी विभ्रमैः।

प्रचण्ड रिपु मण्डली मुकुट कोटि कोटि प्रभा समाजित पदाम्बुजं यमिह मित्रभावंवयन्॥'

७३. 'भामती'क लेखक एहि कालक वाचस्पति मिश्रसँ भिन्न छथि। ठाकुर कालीन वाचस्पतिकेँ 'अभिनव वाचस्पति' कहल गेल छन्हि।

ख्वाजा जहान्क प्रभाव छल [७४]। १३६८ ई० मे तिरहुत मलिक बीर अफगानक जागीर छलैक [७५]। अपना सब देखि गेल छी जे तुगलक वंशक समये सँ मुसलमान सबहिक प्रभाव एहि क्षेत्रमे बढ़ए लगलैक। वारनीक लेखसँ ई ज्ञात होइत छैक जे फिरोजशाह तुगलक सेहो तिरहुत आएल छल [७६]। मुजफ्फरपुर जिलाक हाजीपुरकेँ बसाबैवाला बंगालक हाजी इलिआस छल। कामेश्वर वंश [७७] दिल्ली सम्राटकेँ मात्र कर सएहटा देल करैत छल, किन्तु चारूकात मुसलमान सबहिक प्रभाव जमि गेलाक कारण आब तिरहुतक पूर्णरूपेण स्वतंत्र रहब असम्भवे भऽ गेल छल। १४९६ ई०क पश्चात् जखन सिकन्दर लोदीक तिरहुत पर आक्रमण भेल छलै, तहिआसँ तिरहुतपर मुसलमान सबहिक प्रभाव प्रत्यक्ष होबऽ लगलै[७८]। तहिआसँ दिल्ली अथवा बंगालक अधिकार कोनो-ने-कोनो रूपमे तिरहुतपर रहऽ लगलै। १५२६ ई० मे पानिपतक पहिल लड़ाइमे इब्राहिम लोदी परास्त कऽ देल गेल। बाबरक लेख सबमे सेहो तिरहुतक राजा रूपनारायणक उल्लेख पाओल जाइत छैक। ओ बाबरकेँ कर दैत छल। ओ एहि प्रकार कर दऽ केँ तिरहुतक स्वतन्त्रताकेँ सुरक्षित रखलक [७९]। बाबरक लेख सबमे चम्पारणक सेहो उल्लेख छैक।

---

७४. Elliot, Vol. 4 p. 29.

७५. Ibid Vol. 4 p. 13.

७६. Ibid, Vol. 3 p. 292-94.

७७. एकरा ओइनवार वंश सेहो कहल जाइत छैक, कियैक तँ एहि वंशक प्रथम पुरुष 'ओइन' ठाकुर छलाह। देखू लेखकक History of Bihar, डा० उपेन्द्र ठाकुरक History of Mithila आओर देखू लेखकक History of Muslim Rule in Tirhut ( 1200-1765 ).

७८. Badaoni Vol. I p. 415-417 ; Chronicles of the Pathan Kings of Delhi ( Thomas ) p. 391.

७९. JASB Vol. XI ( N. S. ) p. 430-31 ; Erksine, Babar and Humayun, Vol. I p. 541 ; Thomas, Pathan Kings, p. 390 ; Elliot, Vol. 4 p. 262.

बाबरसँ पूर्व तिरहुतमे मुसलमान सब बहुत बेरि आक्रमण केलकै। पहिनहि लिखि गेल छो जे हाजीपुरक महत्व मुसलमान सब नीकेनाँ बुझलक आओर तेँ दुआरे ओतऽ एकटा नवनगर (हाजीपुर) बसौलक। हाजी इलिआस अनेक किला बनबौलकै, विशेषकए तिरहुतमे, जेकरा काफिर (?) सब नष्ट कऽ देलकै। मुसलमान कालमे हाजीपुर तिरहुतक एक बड्ड महत्त्वपूर्ण स्थान छलैक। ओतऽ एकटा बहुत मजबूत किला सेहो बनबाओल गेल छल। बंगालक राजा नशरतशाह तिरहुतक राजाकेँ परास्त केलक आओर तिरहुतक शासनक हेतु अलाउद्दीन नामक एकटा गवर्नर सेहो नियुक्त केलक। नशरतक समयमे सम्पूर्ण तिरहुत ओकरा अधीनमे छलैक कियैकतँ एकरे बाद ओ उत्तर प्रदेश दिशि गेल छल[८०]। ओ अपन जमाय मकदूम आलमकेँ हाजीपुर किलाक प्रधान बनौलक। मकदूमशाह नशरतकेँ मरबाक पश्चात् विद्रोह केलक आओर ससरामक अफगान नेता शेरशाह सङ्ग मित्रता केलक[८१]। शेरशाह चम्पारनसँ चटगाँवधरि जितबाक प्रयास केलक, किन्तु ओकरा कते सफलता भेटलै कहब कठिन छैक। हाजीपुरपर शेरशाहक प्रभाव छलै, एहिमे सन्देह नहि। १५४७ ई०मे हुमायूँ मिरजा हिन्दालकेँ हाजीपुरपर कब्जा करबाक आदेश देलकै। १४८९ आओर १५१७क मध्य मियाँ हुसेन फरमुली सारन आओर चम्पारनक जागीरदार छल। एहि प्रकार तिरहुतपर मुसलमान सबहिक प्रभाव जमलै मुगल-साम्राज्यक समयमे तिरहुतक हेतु दिल्ली दिशिसँ गवर्नर नियुक्त कएल जाइत छलैक। ठाकुरवंश १३२४सँ लऽकए १४९६ धरि राज्य केलनि। किन्तु हुनक शासनक अवशेष १५३० ई० छल आओर नशरत शाहक समयमे ओहो समाप्त भऽ गेलै। १५३०सँ १५४५ ई०धरि मिथिलामे अराजकता छल आओर तकर बाद किछु दिनक हेतु केशव कायस्थक राज्य भेलैक। दिल्लीएसँ ई राज्य ओकरा भेटल छलै[८२]।

---

८०. बेगूसरायक मटिहानी ग्राममे ओकर एकटा शिलालेख पाओल गेल छैक—एहिसँ बेगूसरायमे सेहो ओकर राज्यक होएब सिद्ध होइत छैक।

८१. Riyaz-us-Salatin ( Tran. Abdus Salam ) p. 133–46.

८२. रासबिहारीदास—मिथिला-दर्पण पृ० ६२.

मुगलकालमे मिथिला अफगान सबहिक प्रधान केन्द्र छलै। तेघड़ाक क्षेत्रमे मुगल आओर अफगान सबहिक मध्य कतेकबेर संघर्ष भेलैक।

ठाकुरवंशक पश्चात् मिथिलामे महामहोपाध्याय महेश ठाकुरक वंशक राज्य आरम्भ भेलैन्ह। वर्तमान दरभंगा महाराज हुनकहि वंशज छथि। राज्य-वंशावलीक अनुसार महेश ठाकुरक वंशक राज्य १५५६ ई०मे आरम्भ भेलैन्हि मिथिलामे एहि विषयमे अनेक किम्वदन्ती सब एखनहु छैक, जेकर उल्लेख एहिठाम स्थानाभावक कारण नहि कएल जाए सकैछ। एकगोट शिलालेखक सेहो प्रमाण देल जाइत अछि[८३]। महेश ठाकुरक पश्चात् गोपाल ठाकुर राजा भेलाह। भौरक परमार रजिपूत सबहिक सङ्ग हुनक संघर्ष भेलन्हि आओर रजिपूत सब भौरकें रिक्त कऽ देलनि। हुनके कालमे अनेक पठान वंशीय मुसलमान तिरहुतमे आबिकए बसि गेला। १५७५ ई०मे जखन दाउदखाँ पठान मुगल सम्राट्क विरुद्ध विद्रोह केलनि, तखन तिरहुतक पठानसब ओकर सङ्ग देलकै। दाउदकें दबेबाक हेतु अकबर बिहार, तिरहुत आओर हाजीपुरसँ वेश सेना लेने छल[८४]। १५८०मे टोडरमल बिहार, बंगाल आओर उड़ीसाक बन्दोबस्त केलनि[८५]। एकर पूर्व किछु दिनधरि मानसिंह बिहार, हाजीपुर आओर पटनाक गवर्नर छला[८६]। सैनिक दृष्टिकोणसँ मुगल-कालमे हाजीपुर बड़े महत्वपूर्ण भऽ गेल छलै। सम्राट खान-ए-आजमकें बंगाल आओर तिरहुतक गवर्नर बनौलकै। अकबर हाजीपुरकें बराबर सुरक्षित राखऽ चाहैत छल। एकबेर बंगाल आओर बिहारक जागीरदार काकसिंह सम्राटक विरोध केलकै आओर अकबर टोडरमलकें ओकरा परास्त करबाक हेतु पठौलकै। मुजफ्फरखाँ चम्पारणक राजा उदीकरणक सङ्ग मिलिकए विद्रोही सबकें दबौलकै। तिरहुतक राजा सम्राट्कें कर नियमितरूपें पठाओल करैत छलै। आइन-ए-अकबरीक अनुसार हाजीपुर

---

८३. Inscription on a piece of Stone in the Dhanuskupa Janakpur in the Nepal territory.

८४. Riyaz-us-Salatin, p. 122.

८५. Ibid, p. 50.

८६. Al Badaoni, Vol. 2 ( Lowie's Translation ) p. 375.

कटहर आओर बड़हरक हेतु बड़ प्रसिद्ध छलैक। १५८० ई०क पश्चात् परमानन्दठाकुर मिथिलाक राजा भेलाह। ओ किछुए दिनमे मरि गेला आओर शुभंकरठाकुर राजा भेला। हुनकहि समयमे भँवाराह (मधुबनी निकट-भौर) मिथिलाक राजधानी भेलै। ओ बड़ प्रतापी राजा छला आओर ओ शुभंकरपुर नगर स्थापित केलनि।

शुभंकर ठाकुरक समयमे ( प्राय: १६००मे ) अकबर काबुल दिशि गेल छल। एम्हर तिरहुतमे बदक्सीक पुत्र बहादुरशाह साम्राज्यक विरुद्ध विद्रोह केलक। ओ अपन नामपर 'खुतबा' पढाएब आरम्भ केलक आओर तिरहुतमे अपन नामक मुद्रा चलाएब सेहो आरम्भ केलक। किन्तु पश्चात् ओकरा आजमखाँक नौकरसब द्वारा मरबा देल गेलै। अकबरक समयमे सम्पूर्ण तिरहुत तीन सरकारमे विभाजित कऽ देल गेल छलै—हाजीपुर, चम्पारण आओर तिरहुत[८७]। टोडरमले एहि सबहिक बन्दोबस्त कएने छल। शाहजहाँक समयमे सम्पूर्ण विहारक राजस्वकर एकहिठाम ओसूल होइत छलै। शुभंकर ठाकुरक पश्चात् पुरुषोत्तमठाकुर राजा भेलाह। मैथिल परम्पराक अनुसार ई कहल जाइत छैक जे राजस्वकर देबाक हेतु हुनका किलाघाट ( दरभंगा )मे बजाओल गेलैन आओर धोखासँ मारि देल गेलैन। ओकर पश्चात् हुनक पत्नी दिल्ली जाए जहाँगीरक दरबारमे हिनक शिकाएत केलनि, जेकर कारण पुरुषोत्तमक हत्यारा सबकें मृत्युक दण्ड भेलैक। तेकर पश्चात् नारायण ठाकुर आओर तखन सुन्दरठाकुर राजा भेला। सुन्दर ठाकुरक बाद ओकर बालक महिनाथठाकुर राजा भेला। सिमराँवक राजा गजसिंह सङ्ग महिनाथक संघर्ष भेलनि। ओ ( महिनाथ ) पूर्णियाक उत्तर-पूर्व इलाकामे मोरंगवला सबके दबौलक। हुनकहि समयमे मिथिलामे तिरहुलिगीतिक प्रचार भेल छलै। ओहि समय दिल्लीमे औरंगजेबक राज्य छलै। नेपाल तराइवला सब अनेक प्रकारक खटपट कएल करैत छलै। मोरंगक जमीन्दार सबकें दबेबाक हेतु औरंगजेब गोरखपुरक फौजदार अलाहवर्दीखाँ आओर मिथिला ( तिरहुत )क फौजदार मिरजाखाँकें पठौलकै[८८]। मिरजा

८७. Aini-Akbari ( Jarret ) Vol. 2 pp. 43, 88, 149 to 156.

८८. JBRS, Vol. 32, Pt. 1, p. 59 ( Askari—Bihar during the time of Aurangzeb ).

खाँक पश्चात् मासूमखाँ, नुसेरीखाँ आओर आन-आन लोक फौजदार भेल। १६६३ ई०क पश्चात् शाहनवाजखाँ आओर हादीखाँ ओहिठामक फौजदार छलाह। १६६६मे तिरहुतक फौजदारी बिहार सुबेदार फिदाय खाँकें द' देल गेलै[८९]। १६९६मे तिरहुतमे बंजरसब एकगोट जबर्दस्त आन्दोलन उठौलक। मुगल सम्राट् ओकरा दबेबाक नीक प्रबन्ध केलक। १७०१मे शमशेरखाँ तिरहुतक फौजदार नियुक्त भेल। औरंगजेबक समयमे नवाब जाफरखाँ परगना धरमपुरक राजा दुरजनसिंहकें गद्दीसँ उतारि देने छलै[९०]।

महिनाथक पश्चात् नरपति ठाकुर आओर हुनक बाद राघवसिंह[९१] मिथिलाक राजा भेला। ओ १७३९ ई०धरि राज्य केलनि आओर 'ठाकुर'क

---

८९. Ibid Vol. 32.

९०. Riyaz-us-Salatin, p. 36, O' malley—Purneah Gazetteer.

९१. राघवसिंहक समयक एकगोट शिलालेख सेहो छैक। 'मधुरवाणीश्वर' (हाटी परगना—जि० दरभङ्गा):

ॐ नमः शिवाय।

आसीन्नासीरदासी भवदरिनिवह (:) क्ष्माभृतांकोऽपिधन्यः।

पुण्य(:) श्रीशालिखण्डोरय (मल)कव रसमाहुति वंशाग्रगण्यः॥

समस्तोयावदात स्फुरदमलयशोरा सिरस्वती कृतान्य—

स्त्रीकः श्रीकण्ठभक्तिस्फुट घटितमतिस्तीरभुक्तिश्वरोयः॥१॥

तस्य श्रीमन्नरपतिसिंहस्यासन् सुताः फलतपसः।

श्रीमद्राघवसिंहो येषां ज्यायान्महाराजः॥२॥

श्रीनन्दनन्दन इति प्रथितः पृथिव्यां। सर्वस्वदोऽस्य नृपतेरभवतकनीयन्।

श्रीभानुदग्रगुणठाकुरसिंहनामा। कामारिसक्त हृदयोऽवरजस्तदीयः॥३॥

एतेषान्तुविशेषज्ञाप्रज्ञाप्रज्ञावज्ञात धीरधीः। स्वसामधुरवाणीति

नामतोऽप्यर्थतोऽप्यभूतः॥४॥

नखनवंशकवीर श्रीमद्धरिजीवशर्मणः कृतिनः।

कल्पमहीरु हदान प्रभृति महादान दायिनी दयिता॥५॥

शाके लोचनवाण (१६५२) भूपतिमिते मास शुभे माघवे,

पक्षे स्वच्छतरेऽधिपंचमि तिथौ वाचस्पतेर्वासरे।

स्थान 'सिंह'क पदवी लगौलनि, बेतिआक राजा ध्रुवसिंह सङ्ग हुनक लड़ाइ भेल। अठारहम शताब्दमे सम्पूर्ण विहार जेकाँ तिरहुत सेहो बंगाल सूबाक एकटा भाग भऽ गेल। १७२०मे अलीवर्दी (डिप्टी नवाब) राघवसिंहकेँ राजाक पदवी देलकनि। राघवसिंह एक लाख सालाना पट्टाक आधार पर सम्पूर्ण तिरहुतक ठीका लेलनि। एकर अतिरिक्त ओ उप-नवाबक दीवान राजा धरणीधरकेँ सेहो ५० हजार रुपैया सालाना नजराना देबाक वचन देलखिन। किन्तु हुनक सम्बन्धीसब उप-नवाब लग शिकायत केलक आओर अन्तमे राजा राघवसिंहकेँ आत्म-समर्पण करए पड़लनि। राजा राघवसिंहक पंचमहला (नेपाल तराइ)क राजा भूपसिंह सँ लड़ाइ भेलनि आओर भूपसिंह ओहि लड़ाइमे मारल गेला। हुनकहि कालमे प्रसिद्ध लालकवि भेल छलाह।

अठारहम शताब्दमे सम्पूर्ण पूर्वी हिन्दुस्तानमे अराजकता पसरि गेल छल। प्रत्येक जमीन्दार अपनाकेँ स्वतंत्र करऽ चाहैत छल। केन्द्रीय सत्ता कमजोर भऽ गेल आओर प्रान्तीय नवाब सेहो अपन स्वार्थक हेतु अपन कार्य बनाब चाहैत छलाह। ओम्हर दरभंगामे तिरहुतक राजा सेहो अपन सत्ता पूर्णरूपेण स्थापित करऽ चाहैत छला, जकर फलस्वरूप राजा माधवसिंहकेँ वीरू कुर्मीक विरुद्ध संघर्ष करै पड़लनि। एम्हर बेगूसराय सबडिविजनक चक्वार सब अपनाकेँ स्वतंत्र घोषित कऽ देने छलाह आओर कर देब बन्द कऽ देने छलथिन। बख्तौरसिंह[१२] चकवार सबहिक राजा छलाह। चकवार

उन्मीलन्मदगण्डमण्डलवलद्वेतण्डवृन्देश्वरे
श्रीमद्राघवसिंह नाम्नि मिथिलानाथे महींशासति ॥६॥

राघवसिंहक राज्यकालक दोसर शिलालेख लोहना गाममे छैक :

ॐ स्वस्ति। श्रीमद्राघवसिंहवाहु विलंसज्जे त्रास्त विद्रोभित्त—
प्रोधद्वैर महीप संभवयशः शुभ्रीभवद्भुतले। प्राज्ञ श्रीबलभद्र वलितो यत्नेन शम्योरिदं गर्भागारमकारयद् दृढतरं निर्वाण संप्राप्तये ॥१॥

शाके वारणवेदराज कमिते राकेश्वरे भास्वरे।
पौषे मासि विलासि मोद रचिते कामान्वितायान्तिथौ ॥
शाके १६४८

१२. Wiloon—Early Annals of English in Bengal Vol. III p. 371.

सब खूब नीकजेकाँ अपनाकें संगठित कऽ नेने छलाह। ओ सब मात्र मुसलमान नवाब सबहिक विरुद्धे नहि अपितु अंग्रेज सबहिक विरुद्ध सेहो लड़ैत छलाह। अंग्रेज सबसँ ओ सब वेश कर ओसूल करैत छलाह आओर कर नहि देलापर हुनक जहाज रोकि लेल जाइत छलैक[९३]। कहल जाइत छैक जे ओ सब नवाबक सेनाकें पराजित कएने छलाह। चकवार सब लग अनेक घोड़सवार आओर संगठित सेना छलैक। हिनक अधीन एकटा खूब पैघ राज्य छलैन। फरकिआ परगनाक राजा कुंजलसिंहकें ई सब १७३०मे परास्त कऽ देलथिन[९४]। एहि लड़ाइक नेतृत्व रूकोसिंह चकवार कएने छलाह। अंग्रेजसब चकवारसँ बड़ु डरैत छल। १७३०मे चकवार कवीर राजा मारल गेला आओर हनक पश्चात् हुनक १७ वर्षक नाबालिग पुत्र राजा भेला। अलीवर्दी डराए-धमकाएकें हुनका अपना अधीन केलनि। ओ नवाबकें सालाना कर देबाक वचन देलक आओर एहिहेतु एकटा स्थान निश्चित् भेल, जतए नवाबक आदमी आबिकए चकवारसँ कर लेल करथि। १७३०मे अलीवर्दी बेतिआक राजाकें दबौलनि। हुनका दबेबाक हेतु ओ दरभंगाक अफगान नेता करीमखाँकें अपना अधीन केलनि। सबसँ पहिने ओसब बंजर सबकें दबौलनि आओर तखन बेतिआ आओर भौराक राजाकें परास्त केलनि। तिरहुतमे राजा राघवसिंहक पश्चात् विष्णुसिंह आओर पुनि हुनक पश्चात् नरेन्द्रसिंह राजा भेला। हुनके समयमे पुनि अलीवर्दी तिरहुतक बन्दोबस्त केलनि[९५]। १७४५मे मुस्तफा खाँक नेतृत्वमे तिरहुतक अफगान

---

९३. Holwell—Interesting Historical Events, pp. 68-70. देखू हमरहि History of Begusarai in रामचरित्र-अभिनन्दन-ग्रंथ।

९४. Monghyr Gazetteer. चकवारक वंशज एखनहु बेगूसरायमे छथि—बख्तौरसिंहक वंशज सेहो विद्यमान छथि आओर हुनक वंशावली सुरक्षित छनि।

९५. Siyar-ul-Mutekharin, Vol. 2; Riyaz-us-Salatin p. 296. तथा देखू: डा० उपेन्द्र ठाकुरक निबन्ध–PIHC XX एवं K. K. Datta–Alivardi and his Times.

सब विद्रोह केलनि। ओसब अलीवर्दीक जमाए हैवतजंगकें विहारक गवर्नर बनौलनि। अफगानसब मराठा सबसङ्ग षड़यंत्र करऽ लगलाह। अलीवर्दी अफगान सबकें परास्त कऽ देलनि। पटनाक राजा रामनारायण आओर नरेन्द्रसिंह मध्य कन्दरपीघाट (वलान नदीक तटपर) लड़ाइ भेल। एकर वर्णन मैथिल लालकविक पद्य सबमे पाओल जाइत अछि[९६]। राजा रामनारायण तिरहुतपर कब्जा करबाक हेतु संघर्ष केलनि किन्तु एहिमे नरेन्द्रसिंहक विजय भेलनि, १७६०धरि अबैत-अबैत बेतिआ आओर

---

९६. लालकविक ई वर्णन ऐतिहासिक दृष्टिकोणसँ बड्ड महत्वपूर्ण छैक, ताहिसँ एकरा एहिठाम देल जाइत अछि।

सियारुलमुतखरिनसँ ज्ञात होइत छैक जे अलीवर्दी तिरहुतपर सेहो कब्जा केलक। राजा नरेन्द्रसिंहक कालमे लगान देबामे किछु विलम्ब भेलैक तैं अलावर्दीक सिपाहीसब अन्य राज्य जेकाँ मिथिलापर सेहो आक्रमण केलक। रियाजुसालातिनमे सेहो एहि बातक उल्लेख छैक जे भँवारा (भौंरा)पर अलीवर्दी आक्रमण केलक। बिहारक सूबेदार राजा रामनारायणक समयमे सेहो नरेन्द्रसिंह आओर बंगालक नवाब मध्य संघर्ष भेल, जाहिमे राजा रामनारायणक नेतृत्वमे भिखारीमहथा, सलाबतराय आओर बख्तसिंह पाँच हजार सेना सङ्ग मिथिलाक राजा नरेन्द्रसिंहपर आक्रमण केलक आओर एकर उल्लेख लालकविं अपन कविता 'कन्दर्पीघाटक युद्ध'मे कएलैन अछि। ओकर किछु अंश निम्नस्थ अछि :

(क) रामनारायण भूपतें, कहो मुखालिफ जाय।
हाकिम को मिथिलेश ने दिन्हो अदल उठाय॥
सीर करो तिरीहुत कर ताके रचो उपाय।
फौजदार महथा भये सङ्ग सलावत राय॥
वखतसिंह कुल उद्धरण रोडमल्ल दिल पूर।
चौभान भानु भानू सुकुल एक-एक तंसूर॥

(ख) पड़े उठाय धाय - धाय एक - एक सैं लड़ैं।
मनो गजेन्द्र सो गजेन्द्र जंगजोर को धरैं॥
महीप मित्रजीत राव बखतसिंह को धरैं।

हमर विचारसँ ई बखतसिंह चकवार सबहिंक बख्तौरसिंह छल आओर मित्रजीत टेकारीक राजा छला। विशेष गीत सबहिक हेतु देखू मिथिला-दर्पण।

हाजीपुरपर अंग्रेज सबहिक कब्जा भऽ गेलनि। १७६५मे कम्पनीकें दिवानी भेटलैक आओर सूबा बंगालमे अंग्रेज सबहिक आधिपत्य जमि गेल। १७७२मे पाँच वर्षक हेतु तिरहुतक रेवेन्यू निश्चित् भेल[९७]। १७७४मे तिरहुतकें पटनाक अधीन कएल गेल आओर स्थानीय अमला नियुक्त कएल गेल। १७८२मे ग्रान्ड तिरहुतक पहिल कलक्टर भेल। इएह तिरहुतमे सर्वप्रथम नील खेतीक बन्दोबस्त कएने छला। १७९०-९३ ई०क बीच 'परमानेन्ट सेटलमेन्ड'क अनुसार सम्पूर्ण तिरहुत अंग्रेज सबहिक अधीन आबि गेलैक। तहिआसँ तिरहुतक राजासब जमीन्दारक रूपमे रहि गेला। तिरहुतमे दरभंगाक अतिरिक्त नरहन राज्यक इतिहास सेहो बड़ पुरान छैक। द्रोणवार वंशक उल्लेख विद्यापतिक लेख सबमे पाओल जाइत अछि। शिवसिंहक नापत्ता भऽ जेबाक पश्चात् विद्यापति लखिमा रानीकें लऽके द्रोणवार राजा पुरादित्यक ओहिठाम सप्तरी परगनामे शरण लेने छला। नरहनवला सब सेहो द्रोणवार छथि आओर मध्ययुगमे ईसब अनेक संस्कृत-पंडित आओर विद्वान् सबकें अपन ओहिठाम प्रश्रय देलथिन। हुनक कागजपत्र एखनधरि प्रगट नहि भेल छैन। ताहिसँ एहि वंशक सम्बन्धमे विशेष किछु नहि कहल जाए सकैत छैक। एम्हर के० पी० जयसवाल संस्थानक श्रीजटाशंकरझा राजदरभंगापर अनेक किछु अनुसंधान कएलैन अछि जाहिसँ ई ज्ञात होइत अछि जे एहि राज्यक स्थापनाक समयेसँ हिनक शासक सब शिक्षापर विशेष खर्च कएलैन अछि। एहि कागजपत्रसँ ई ज्ञात होइत अछि जे मिथिलाक विभिन्न क्षेत्रक अतिरिक्त बनारसमे सेहो संस्कृत शिक्षाक हेतु राज्यदिशिसँ खर्च देल जाइत छलैक। ईसब स्वयं सेहो संस्कृतक महान् पंडित छलाह आओर महाराजा सबहिक रचनासब एखनहु राजपुस्तकालयमे सुरक्षित छैक। मिथिलामे एखन संस्कृत-संस्थान आओर संस्कृत-विश्वविद्यालय स्थापित भेल अछि ओकरहु श्रेय महाराजाधिराजेकें छन्हि। दरभंगाराजक इतिहासो तखनहि लिखल जाए सकैत अछि जखन एकर सचिवालयक सब कागत-पत्र इतिहासकारक समक्ष राखल जाय।

९७. Para. 98, p. 34 of the Final Report on Survey Settlement Operation in the Muzaffarpore.

परिशिष्ट—क

# मिथिला ओ नेपाल

*नेपाल विहारसँ आन्तरिक रूपसँ सम्बन्धित अछि[1]—जायसवाल।*

## भूमिका

आरम्भमे नेपाल घाटीमे 'नागबास' नामक झील सम्मिलित छल एकरा 'कालीह्रद' सेहो कहल जाइत छलैक जे 'नागक कौंटक'क वास-स्थान छल[2]। ई चौदह माइल लम्बा ओ चारि माइल चाकर छलैक। एहि झीलकें मंजूश्री, जे महाचीनक पंचशीर्ष पर्वतसँ आएल छल, दक्षिण दिशिक पहाड़कें काटिके भोथबा देलकै आओर स्वयंभूनाथक मन्दिरक निर्माण ओहि सुखाएल झीलक ऊपर केलक। यद्यपि अनेक दँतकथा एवं किम्वदन्ति सब पौराणिक साहित्यमे पाओल जाइछ तथापि 'नेपाल' शब्दक उद्गम एखनधरि रहस्यमये अछि, कोनो ठोस प्रमाण कतहु नहि पाओल गेल अछि यद्यपि नेपालक इतिहासपर किछु ग्रन्थ लिखल गेल अछि अवश्य किन्तु एहन प्रमुख देशक विस्तृत ओ प्रामाणिक इतिहासक अभाव सदिखन खटकैत रहैत अछि। अति प्राचीनेकालसँ नेपालक इतिहास मिथिलाक इतिहास सङ्ग निकटतमरूपें सम्बन्धित अछि। मिथिला—एहन स्थान रहल अछि जाहिठाम नानाप्रकारक धार्मिक आन्दोलन एवं दर्शनक उत्पत्ति भेलै, एवं नेपाल ओहि आन्दोलन सबकें एहन उर्वरा-शक्ति देलकै जाहिसँ ओ आन्दोलन सब पुष्पित ओ फल-दायक भेल। नेपालमे आर्यत्वक विकास मिथिलाक भूमिए बाटे भेलैक। एहिसब बातकें ध्यानमे राखि, एहि दूहू देशक राजनैतिक सम्बन्धक अध्ययन करबाक प्रयास निम्नलिखित पंक्तिमे कएल गेल अछि।

---

१. K. P. Jayaswal—Chronology and History of Nepal, Patna, 1937 p. VII.

२. Cf. Svayambhu Purana ; Chapter 3, 1, 5, 7
Varahapurana ; Chapter 145, 215.

## प्राचीन सामग्री

नेपालक इतिहासक अध्ययन करबाक हेतु प्राचीन-सामग्री सबहिक अभावे-अभाव अछि। जे किछु प्राप्तो अछि से अति विरोधात्मक। वंशावली, संभवतः इतिहासक अध्ययनक हेतु प्रमुख स्रोत्र थिक, किन्तु ओहिमे एते अधिक विरोधात्मक एवं अयथार्थ तथ्य जे ओहि सबकें उपयोग करबाकाल अत्यधिक सतर्कता आवश्यक। शिलालेखक अध्ययन जे इतिहासक ठोस आधार थिक, नेपालमे एखन शैशवावस्थेमे अछि। पुरातत्व-सम्बन्धी सामग्री सब सेहो अल्पे अछि। एहि दशामे यथार्थ ओ वैज्ञानिक इतिहासक हेतु कोनो ठोस ओ निश्चयात्मक प्रमाण नहि भऽ सकैत अछि। करपातृक, राइट, बेन्डॉल, लेन्डॉन, लेभी ओ अन्य अधिकारी विद्वान् सब अयथार्थ तथ्यक प्रयोग कएलासँ बहुत पैघ-पैघ त्रुटि कऽ गेल छथि। एतऽधरि जे निष्ठाह पश्चात्क देशवासी लेखक जेना D. R. Regmi आदियो पैघ-पैघ त्रुटिसँ नहिं बाँचि सकलाह अछि। भगवान् लाल इन्द्रजीक नेपालक इतिहास ओ पुरातत्वक अध्ययन सम्बन्धी अग्रसर कार्य हुनक बादक विद्वान् सब द्वारा ओतबहि उत्साहसँ नहि कएल गेल, परिणामस्वरूप अपना सब आइ ओहिसँ नीक ठोस कदम नहिं राखि सकै छी। एच० पी० शास्त्रीक मार्गदर्शक अन्वेषण एतऽ उल्लेखनीय कहल जा सकैत अछि। राहुल सांकृत्यायनक 'नेपाल' सेहो प्रकाशनेक पथपर अछि। जयसवालक कृतिमे कालक्रमक समस्याक समाधानक प्रयास कएल गेल अछि। एखनहु नेपाल पुरातत्ववेत्ता सबहिकें आह्वान कऽ रहल अछि तथा भाषाविज्ञ सबहिक समालोचना पूर्ण दृष्टिक प्रतीक्षा कऽ रहल अछि, जेकर सबहिक बिना वैज्ञानिक इतिहासक निर्माण आओर किछु नइ तँ असंभव अवश्ये कहाओत। विहारक इतिहासक अनेक रहस्यक उद्घाटन भेलासँ नेपालक इतिहासक विभिन्न समस्याक समाधान संभव थिक।

## किरातवंश

भूतकालक कुहेस मध्य नेपालक प्रारम्भिक इतिहासक विषयमे किछु विशेष ज्ञात नहि अछि। उत्तर भारतक विभिन्न भाग जेकाँ नेपाल सेहो अनार्य-सभ्यताक मुख्य केन्द्र छल, जेकर अपन विशेष प्रकारक संस्कृति

छलैक । ईस्वी पूर्व ५६० ओ ईस्वी सन् ११०क मध्य नेपाल किरात-संस्कृतिक प्रधान केन्द्र छल[३] । किरातक वर्णन शुक्ल यजुर्वेदमे आएल छैक[४] । इहो कहल जाइत छैक जे किरात सब पूर्वी नेपालमे अवस्थित छलाह[५] । 'किरात' पद जंगली, अनार्य जाति कें सूचित करैछ जे पहाड़पर ओ भारतक उत्तर-पूर्व भागमे रहैत छला । जनिक उद्गम मोंगोलसँ भेल छलैन्ह[६] । सर्वप्रथम सिल्विअन लेभी किरात ओ मोंगोलमे साम्य देखौलनि[७] महाभारतसँ ज्ञात होइत अछि जे महादेव किरातक भेषमे अर्जुनक परीक्षा केलनि तखन अर्जुन हिमालयमे तपस्या करैत छला[८] ।

एहिमे कोनो सन्देहे नहि जे उत्तर-पूर्वी भारत किरात संस्कृतिसँ सम्बन्धित छल । महाभारत एकर समर्थन करैत अछि । ओ सब पूर्वी हिमालयक वासी छलाह । दिग्विजय करैत काल भीमकेँ पूर्वमे किरात सबस भेंट भेल छलनि जखन ओ विदेहक देशकें छोड़ने छला[९] । ओ सब पीअर रङ्गक होइत छलाह । लेभीक कथन छनि जे किरातक सम्पर्क म्लेच्छ ओ चीना सबसँ छलनि । रामायण सेहो प्रमाणित करैछ जे ओ सब पीअर रङ्गक होइत छला[१०] । विष्णुपुराण ओ मार्कण्डेय-पुराणमे ई वर्णित अछि जे ओ सब पूर्वी भागमे रहै छलाह । ओ सब हिमालयक दक्षिणी मार्ग पर, सम्पूर्ण उत्तर-पूर्व भारतमे, नेपालसँ सटले उत्तरी बिहारमे आओर गंगाक उत्तरी भागमे बसि गेल छला । ई ओएह प्रदेश छल जाहि मध्यसँ चीनक व्यापार भारतक गंगावर्त्ती धरातलसँ होइत छलैक । नेपालक इतिहासमे हिनक मुख्य स्थान छैन्ह तथा नेपाली संस्कृतिक विकासमे प्रमुख स्थान ।

---

३. Jayaswal—Op. Cit. 101

४. Vaysenayi Samhitā—XXX 16 ; Taittireya Brāhmaṇa-III, 4, 12, 1 ; Atharvaveda X, 4, 14.

५. I. A. S. B. XVI ( letters, 1950 ); p. 162

६. Ibid.

७. Nepal—II, 75ff.

८. The Kirātaparvan section of the Vānaparva ; cf. The Satrudriya section of the white Yajurveda XVI, 7 for a similar tone.

९. Sabhāparva—26, 32

१०. N. N. Vasu—Social History of Kamrupa ; p. 92 cf. Kishikindhākānd—40, 27, 28.

एहि प्रकार ई कहल जा सकैत अछि जे किरात सब नेपालक स्थानीय राजवंशी छलाह। ओ सब बहुत दिन धरि राज्य केलैन। एहि वंशक प्रारम्भ ई० पू० ६०० वर्षसँ छल हेतैक।

वंशावलीक आधारें २६ वा २९ किरात राजा भेल छथि [११]। हुनक राजधानी नेपाल घाटीक उत्तरमे गोकर्णमे छलैन। हिन्दू संस्कृतिक विकास ओ नेपालमे भारतीय मंगोलिअनक प्रमुखताक हेतु ओ सब आधार भूमि बनौलनि। कहल जाइत छैक जे बुद्धदेव नेपाल भ्रमण कएने छलाह। प्रायः ई० पू० ३१२ वर्षमे जखन संभूत विजय मरि गेला जैन धर्मावलम्बीमे विभाजन भऽ गेलै। तकर पश्चाते उत्तरी भारतमे अकाल पड़ि गेलैक जे बारह वर्ष धरि रहलै। भद्र ब्राह्मण नामक एक जैन साधु अकाल भेलापर दक्षिण दिशि पड़एलाह आओर जखन अकाल समाप्त भेल तखनहि घुरला। ओ जैन धर्मावलम्बीक प्रधानक पदसँ त्यागपत्र दऽ कै अपन शेष जीवन व्यतीत करबाक हेतु नेपाल चलि गेला। जैनी सबहिक जुटान पटनामे भेल छल जतऽ ई निर्णय भेलैक जे हुनका घुराय अनबाक चाही। तखन हुनका ताकबाक हेतु स्थुलभद्र नेपाल गेला, ओतऽ हुनकासँ चौदह पर्व पओलनि। ई अशोकक प्रयासे छल जाहिसँ नेपालमे बौद्ध-धर्म पसरलैक। अशोकक समयमे नेपालमे छला स्थूमिको। कौटिल्य नेपालसँ नीकेनाँ परिचित छला। ऊनक हेतु नेपाल प्रसिद्ध छल। कौटिल्यक अर्थशास्त्रमे नेपालक (नैपालिकम्) भेड़ी ऊनसँ निर्म्मित कम्मलक वर्णन छैक [१२]। अशोक रुमिनिदेइ गेल छला आओर ओतए अठतालिस गोट स्तूपक निर्माण करबौलैन। प्रायः स्थूमिकोक शासनकालमे ओ नेपाल गेल छला। आओर बुद्ध धर्मकेँ ओतए प्रचारित कएलैन। नेपाल क्रॉनिकलमे उल्लेख छैक जे अशोकक समयमे नेपालक शासन किरातक हाथमे छलनि। अशोकक जमाय देवपाल आओर पुत्री ओतऽ बसैत छली। नेपालपर दशरथक शासन किछु अंशमे छलैक।

नेपाल ओ मिथिलाक सम्पर्क मौर्य-शासनक ह्रासक समय धरि बनल छलै। शुंग कालक मुद्रा पश्चिमी नेपालसँ प्राप्त भेल अछि। एहिसँ ई ज्ञात

---

११. Levi—I, 78-79 ; cf. Jayaswal Op. Cit, 105.
१२. R. G. Basak--History of north eastern India, p. 239.

होइछ जे शुंग सबहिक एक प्रकारक दुर्वल नियन्त्रण नेपाल राज्यपर छलैक[१३]। किरातक शासन कालमे प्रायः कुशान सब चम्पारण होइत नेपालमे प्रवेश कएलनि। मुद्रा सबसँ सिद्ध होइछ जे कुशान सबहिक शासन चम्पारण धरि छल। 'रधिया' नामक गामसँ साठि टा ताम्बाक मुद्रा पाओल गेल अछि : अशोकक स्तम्भसँ सेहो ई प्रत्यक्ष छैक। कुशान मुद्राक दोसर खजाना काठमांडू लग भेटल छैक। मुद्रा सब वैम कदफिसेस ओ कनिष्कक शासन कालक छियैक। जँ एहि एकमात्र प्रमाणपर किछुओ विश्वास कएल जाय ते ई कहल जा सकैत अछि जे कुशान सब नेपालपर सेहो शासन कैलनि[१४]।

शताब्द धरि नेपालपर शासन करैत काल किरात सबकें जखन-तखन अनायास बिड़रो सबसं संघर्ष करए पड़लनि। राजनैतिक अस्थायित्वकें रहितो ओ सब सांस्कृतिक जीवन ओ राजनैतिक नियमक स्थापनामे बहुत किछु कएलैन। एकगोट निपुण विद्वान्‌क कहब छैन्ह जे इन्डो-मंगोल्वाइड सब सर्वप्रथम भारतमे शासन कायम केलनि तखन नेपालमे अएलाह। नेवारो सबहिक उल्लेख वाग्मती नदीक छोर परहिक अति सुसंस्कृत इन्डो-मंगोल्वाइडक रूपने भेल छैक[१५]। नेवार सब प्रायः इ० पू० तेसर शताब्दमे अएला जखन अशोक पाटनमे अनेक बौद्ध-चैत्यक निर्माण केलनि। पश्चात्‌क नेपालक बुद्ध-धर्मक महायान शाखाक पद्धति ओ विचार बिहारेसं लेल गेल छल। शैव, शाक्त ओ वैष्णव धर्म सम्प्रदायक सम्बन्धमे सेहो इएह कहल जाए सकैत छैक। ई सब आंशिक रूपमे उत्तरी बिहारक आरम्भक मंगोल्वाइडक प्रतिक्रिया स्वरूप छलैक। आर्यत्वीकरणक पूर्व मिथिला किरात संस्कृतिक प्रधान केन्द्र छल। इन्डोमंगोल्वाइड एकटा सामूहिक संस्कृतिक विकासमे योगदान देलथिन।

ईस्वी सन् ११० (किरात राजवंशक समाप्ति) ओ ईस्वी सन् २०५ (लिच्छिवी वंशक प्रारम्भ)क मध्य नेपालक इतिहास अंधकारपूर्ण अछि।

---

१३. JBORS--XX. 301
१४. E. H. Walsh—JRAS (1908), 677.
१५. JASB, 1950, 170.

कियक त एहि बीच कोनो लिखित प्रमाण नहि भेटैत अछि। कुषाण मुद्राक आधारपर ई कहल जाइत छैक जे एहि बीच कुषाण सब अधिष्ठित छल। गुणाढ्यक 'बृहत्कथा'मे नेपाल देशक शिव नामक नगरमे राजा यशकेतुक शासन करबाक उल्लेख छैक[१६]। कखन आ कोन प्रकारें किरात सबहिक शासनक अन्त भेल ई हमरा सबकें ज्ञात नहि अछि। ई कहल जाइत छैक जे निमिष नामक एक गोट भारतीय राजा नेपाल विजय केलनि। जायसवाल साहेबक अनुसार निमिषक राजवंश नेपाल ५२ ई० सन् २०५सँ ३५० धरि प्रायः १४५ वर्ष राज्य केलनि। एहि वंशमे पाँचगोट राजा भेलाह—निमिष, मनाक्ष, काकवर्मन, पशुपरेक्षदेव, ओ भास्करवर्मण। इएह राजवंश आर्य सबकें नेपालमे शरण देलथिन। पशुपरेक्षदेव पशुपतिनाथ मन्दिरक निर्माण केलनि आ ओर हिन्दुस्तानसँ आर्य सबकें अनलनि।

नेपालक इतिहासमे एहि वंशक तिथि ओ कालक्रमक विषयमे पैघ मतान्तर छैक। हमरा सबहिक समक्ष कोनो निश्चयात्मक प्रमाण नहि अछि जाहिसँ वर्तमान विभिन्न विचारमे सँ ककरो काटू वा ककरो समर्थन करू। हमरा सबकें मात्र एतबहि ज्ञात अछि जे लिच्छिवी सब हुनका उखाड़िकें अपन शासन स्थापित कएलनि। निमिष राजवंश कोनो प्रकारें लिच्छवीसँ सम्बन्धित छल वा नहि इहो मतान्तरक गप्प थिक। करपातृक अपन स्थानीय सामग्रीक तथ्यकें तोड़ि-मोड़िकें एहन परिणाम निकाललैन अछि जे विषमय भऽ गेल अछि। निमिष राजवंशक अन्तिम राजा भास्करवर्मन, भूमिवर्मनकें पुत्रवत् ग्रहण केलनि जे अपन वंशकें 'सोमवंशी' नामसँ प्रचार केलक। बादक वंशावली भूमिवर्मन सँ आरम्भ होइत छैक जेंकर पौत्र जयदेव प्रथम (जयदेव द्वितीयक शिलालेखमे उल्लिखित) छलैक। करपातृक दूनूकें समावेश कऽकें एक्के राजवंश 'निवेसित', (निमिष ?) कहि दैत छथि। जायसवाल साहेबकें एहिमे सन्देह छैन्ह। ओ कहैत छथि जे मौलिक अधिकारी विद्वान् सब पाँचो शासकक सोमवंशकें पृथक् वंश नहि कहैत छथि[१७]।

---

१६. Somadeva—Kathasaritasagar; V. 3; XII, 22. Kshemendra–Brhat-kathamanjari IX, V, 728. Cf. Bharata's Natyasastra, XIII, 32.

१७. Jayaswal Op. Cit. p. 102.

## लिच्छिवी-संघ

इतिहासमे वैशालीक लिच्छिवीकें नेपालसँ घनिष्ठ सम्पर्क उल्लिखित छैक। एहि वक्तव्यमे किछु सत्यता भऽ सकैछै जे पूर्वी लोकसब जेकाँ लिच्छिवित्रो मंगोल्वाइड उद्गमक छलाह आओर बादमे आर्य सबसँ सम्मिश्रित भऽ गेलाह। वैशालीक लिच्छिवीक मनु द्वारा कएल वर्णन अपन सबहिक धारणाकें सत्य घोषित करैत अछि[१८]।

लिच्छिवीकें नेपालक मल्ल ओ खसक कोटिमे राखल गेल छैन आओर मनु हुनका सबकें वात्य घोषित कएने छथि। लेभीक कथन छैक जे लिच्छिवीक शक्ति ओ प्रासद्धिक प्रभाव मनुक ब्राह्मणक कट्टरताकें प्रभावित नहि कऽ सकलै अछि[१९]। लिच्छिवी सब मिथिलाक अत्यधिक विकसित लोक छलाह। हुनक संगठन ओ शक्ति हुनका क्षत्रियक कोटिमे आनिके ठाढ कऽ देने छलैन।

वंशावली ओ आन सामग्रीक आधारपर ई प्रत्यक्ष छैक जे किरात शासनक पश्चात् सोमवंशी ओ सूर्यवंशी शासक भेलाह। जेकरा जायसवाल

---

१८. Manu, X, 22.

> द्विजातयः सवर्णासु जनयन्त्य व्रतांस्तुयान्।
> तान्सावित्री परिभ्रष्टान् वात्यानिति विनिर्दिशेत् ॥२०॥
> व्रात्यातु जायते विप्रात्पापात्मा भूजकण्टकः।
> आवन्त्यवाट धानौच पुष्पधः शैरव एवचः ॥२१॥
> झल्लोमल्लश्च राजन्याद् व्रात्यान्निच्छि विरेव च।
> नरश्य करणश्चैव खसोद्र विड एवच ॥२२॥

Cf. II. 39-40; for Vratya see J. C. Hauer, XI, 62-63; 'Der Vratyas; Dr. B. C. Law says : Lichchavis were looked upon as Kshatriyas of Vratya Variety; Cf. Tribes in Ancient India; p. 301 Cf. I. A. XXXVII, 79.

१९. Levi—I. 87-88.

निमिष वंश कहैत छथि तेकरा आन विद्वान् सब सोमवंशी कहैत छथि[२०]। ई बुझना जाइछ जे ओ ज्ञात सामग्री सबहिक प्रकृतिपर स्पष्टरूपें विचार नहि केलनि जे अत्यधिक द्वन्द्व उत्पन्न करऽबला ओ भ्रमात्मक अछि। ई भऽ सकै छै जे सोमवंशो शासकक परिवारक पदवी 'निमिष' रहल होइक। ओहि सोमवंशी शासकक संख्या पाँच वा सात छलैन। सूर्यवंशी राज्यक पूर्व ई पाँच वा सात शासक प्रायः वैशालीमे वा ओतहि शासक हेताह। हुनक राज्यारोहणक यथार्थ तिथि ज्ञात नहि छैक।

तथाकथित निमिष वंशकें लिच्छवी सब उखाड़ि फेकलनि आओर प्रायः ४०० वा ५०० वर्ष धरि राज्य केलैन। नेपाली सम्वत् जे ई० सन् १११ सँ आरम्भ होइत छैक प्रायः लिच्छवी सबहिक राज्यारोहणेकें प्रदर्शित करैत छैक। ई मानि लेल जाइए जे लिच्छवी सब नेपालमे ईस्वी सन् प्रथम शताब्दक निकट अपन साम्राज्य स्थापित कएलनि आओर अपन सम्वत् प्रारम्भ कएलनि। प्रारम्भिक लिच्छवी नेपालक माटिपर अपन पैर स्थिर कै निर्बाधरूपें पाँच शताब्द धरि शासन कएलैन। सूर्यवंशी शासनक स्थापनाक पश्चाते नेपालमे यथार्थ ऐतिहासिक काल प्रारम्भ होइत अछि। ई दुइ राजवंश मिथिलासँ आएल छल आर प्रायः पाँच शताब्द धरि नेपाल ओ मिथिलामे नियमितरूपें राजनैतिक ओ सांस्कृतिक सम्पर्क बनल रहलै[२१]। प्रथम ऐतिहासिक राजा भेला जयदेव प्रथम। हुनका ओ जयदेव द्वितीयक (जे अन्तिम राजा छला) मध्यमे तेंतीसटा राजा भेलाह[२२]।

---

२०. JASB (1950), 184. The Somvansis are said to have annexed Nepal near about 200 AD and continued their rule till 350 AD. The adopted son Bhumivarman seems to have shifted to Nepal after the emergence of the Gupta imperialism.

२१. I. A. IX—Inscription of Jayadev II, where descent is traced from Surya.

२२. I A IX 163 ff; XV, 342-351; 97-98; Cambridge History of India, I, 134-35.
Upendra Thakur—History of Mithila (Abbreviated TM) pp. 157-59.

एहिमे कनेको सन्देह नहि जे नेपाल गुप्त-साम्राज्यक चाङ्कुरमे पड़ि गेल। समुद्रगुप्तक इलाहाबादक स्तम्भ-शिलालेख एहि विषयकें स्पष्ट कऽ दैत अछि। ओ 'नेपालक सीमान्त शासक'क[२३] सेवा प्राप्त कएने छल', बहुत संभावना छलैक जे ओ सूर्यवंशी छल—लिच्छिवी गोत्रक जेकर राज्य मिथिलासँ नेपाल धरि पसरल छलैक। नेपालक सूर्यवंशी शासकक वंशावलीमे बड़ अशुद्धि छैक। करपात्रक एहि वंशमे पाँचटा नाम आओर जोड़ि देलथिन अछि। वंशावलीमे एकटाकेँ छाड़ि जेकरा करपात्रक 'सोमवंशी' शासकक नाममे वर्णन कएने छथि, पृथक-पृथक पाँचो नाम देल गेल छन्हि। सूर्यवंशी शासकक नाम विभिन्न शिलालेखसँ पाओल जाइछ[२४]। जयदेव द्वितीयक शिलालेखमे २३टा राजाक नामक उल्लेख छैक :

१. भूमिवर्मण ( उपर वर्णित )। २. चन्द्रवर्मण। ३. जयदेव प्रथम ( वंशावलीक जयवर्मा, जतए १सँ १४क नाम वर्मनमे समाप्त होइत छैक )। ४. वर्षवर्मन ( करपात्रकक अनुसार वृष )। ५. सर्व वर्मन। ६. पृथ्वी वर्मन। ७. ज्येष्ठ वर्मन। ८. हरि वर्मन। ९. कुवेर वर्मन। १०. सिद्धि वर्मन। ११. हरदत्त ( ओ चारिटा नारायण मन्दिरक निर्माण केलनि। एहिमे एकटा ओहो सम्मिलित छैक जे चंगुनारायण ओ जलशयन. गुप्त शैलीमे विष्णुक सुतल मूर्ति छैक )। १२. वसुदत्त। १३. श्रीपति। १४. वसन्तदेव प्रथम। १५. शिवदेव प्रथम। १६. रुद्रदेव प्रथम ( करपात्रक एकरा त्यागि देने छथि तथा लेभी एकरा शिवदेव बुझैत छथि आर मल्लक लिस्टसँ आएल बुझैत छथि[२५]। १७. वृषदेव द्वितीय ( प्रमुख बौद्ध )। १८. शंकरदेव ( एकरे शासनकालमे 'शैववाद'क उद्धार भेल। धातुक पैघ नदी ओ पशुपतिक त्रिशूल बनबौलक )। १९. धर्मदेव। २०. मानदेव। २१. महिदेव। २२. वसन्तदेव द्वितीय नम्बर १-३; ४-१६ धरि जयदेव द्वितीयक शिलालेखमे त्यागि देल गेल अछि[२६]। एहि शिलालेखमे नेपालवंशक स्थापक जयदेव प्रथमकें कहल गेल छन्हि। ओ 'विजयी' कहबैत छला[२७]।

---

२३. प्रत्यन्त नेपाल नृपति।
२४. I. A. XIII 412; Levi, II 91-92; 122.
२५. Levi II 92, 95-96.
२६. I. A, IX 178
२७. Ibid XIV, 97 ( For Bendall's View ); IX 168 ( For Bhagwanlal Indraji's view ); Levi, III, 61, 69; Fleet-Gupta inscriptions. I; 180 for details cf. Jayaswal, Op. Cit. 43.

एहि अवधिमे वैष्णववाद नेपालमे प्रविष्ट भेल। चंगुनारायण ओ जलशयनक धर्मोपदेश ३२ ई० क अंशुवर्मनक हरिगान शिलालेखमे पाओल जाइछ ( पंक्ति १४-१५ ) ई सब ठेठ गुप्त कालक कलाक सुन्दरतम उदाहरण थिक। हुनक शिलालेख ओ मुद्रा सबसँ नेपालक लिच्छिवी राजा सबहिक ज्ञान होइत छैक। मानदेवक चंगुनारायण मन्दिरक शिलालेखमे प्राचीन राजाक विषयमे उल्लेख छैक। ई राजा सब विभिन्न धर्म-सम्प्रदायक अवलम्बी छलाह जेना—बौद्ध धर्म, शैववाद, ब्राह्मणवाद, वैष्णव, शाक्त आदि। लिच्छिवी राजा नरेन्द्रदेवक शासन कालमे मत्स्येन्द्रनाथक सम्प्रदाय नेपालमे चलय लागल। लिच्छिवी सबहिक छत्रछायामे बुद्धधर्मक महायान शाखा अपन आकार ग्रहण करए लागल। अंशुवर्मन ओ जिश्नुगुप्तक शासन कालकेँ छाड़ि लिच्छिवी पुनः नेपालक शासक भेलाह [२८]।

आधुनिक ज्ञानक आलोकमे रेग्मीक अपन विजय-पताका फहराइ बला दिनमे नेपाल सून कोशी ओ गण्डकक मध्य वाला भूभागकेँ हथिऔने छला [२९]। एहि कथनसँ एकमत होएब असम्भवे छैक। ई सत्य छैक जे प्राक् ऐतिहासिक कालसँ विदेह आओर नेपालक सम्बन्ध रहलैक अछि आओर लिच्छिवीक शासनकालमे ई नितान्त सत्य छलैक। कोनो निश्चित सीमाक अभावमे बिना सोचने-विचारने कोनो परिणाम बहार कऽ लेब अपरिपक्वता होएत जेना श्री रेग्मी साहेब अनेक ठाम कएलैन अछि। हुनक दोसर अनुमान जे 'वैशाली समुद्रगुप्तक मृत्यु धरि नेपालक अङ्ग छल' सेहो आधार रहित ओ असंगत गप्प थिक [३०]। इतिहासक कोनो जिज्ञासु पाठक

---

२८. For the origin of the Lichchavis and other details see—B. C. Law—Op. Cit. 26-29. Modern Review. 1919 p. 50. Watters—II, 83; Mrs. Rhvs Davids—Samyutta Nikaya 259-89 Rockhille—Life of Buddha, 62-63; I. A. 1908, Smith's article; V. A. Smith—Early History of India ( 3rd edn. ) p. 150; Beal—Romantic Legends of the Sakya-muni, ( 158-60 ) Manu X, 22; 43, 44.

२९. D. R. Regmi—Ancient and Mediæval Nepal p. 43.

३०. Ibid, p. 45.

श्री रेग्मी द्वारा कएल गेल अनुमानपर कतबो तर्क कएला उत्तर विश्वास नहि कए सकैत अछि। गुप्त साम्राज्यमे वैशालीक सम्मिलित होएब एकटा प्रामाणिक तथ्य थिक। नेपालमे गुप्त-साम्राज्यक हस्तक्षेप एकाधिक स्रोतसँ प्रमाणित छैक[३१]। नेपालमे गुप्त-साम्राज्यक प्रभाव वंशावलीमे उल्लिखित छैक आओर से मंजू श्री मूल कल्पसँ अनुमोदित छैक। इतिहासक दृष्टिकोणसँ लिच्छवी ई० सन् ३५० सँ ८९९ धरि शासन कएलैन। एकरा केओ ने काटि सकैत अछि जे लिच्छवी शासन नेपालमे अवश्ये भेल छल। वंशावली सूचीक ३३म संख्यक शिवदेव, कहल जाइत छैक जे गुप्त वंशक शासक सबकेँ पराजित केलक आओर लिच्छवी वंश वा सूर्य वंशक शासनकेँ पुनः स्थापित केलक (करपातृक)।

## अंशु वर्मन

लिच्छवी शासन कालमे एकटा महासामन्त, अंशु वर्मन, जे ठाकुरी राजवंशक छला सातम शताब्दक पूर्वार्द्धमे नेपालक खूब प्रसिद्ध शासक भेला। ओ बेश शक्तिशाली शासक छला। ओ तराइ क्षेत्रक पैघ भागकेँ अपन राज्यमे मिला कए अपन राज्यक विस्तार बेतिया धरि कए लेने छला जतए ओकर सीमा हर्षवर्द्धनक सीमासँ मिलैत छलैक[३२]। नालन्दा विश्व-विद्यालयक प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य चन्द्र वर्मन ओकर दरवारक एक गोट शोभा छलथिन। अंशुवर्मन नेपाल राज्यक स्थापना कएलनि आर ई परम्परा जिश्नुगुप्त नामक दोसर शासक रखलैन। अंशु वर्मनक मृत्युक पश्चात् ईस्वी सन् ६४३ मे नरेन्द्रदेवक अधीन नेपालमे लिच्छवी शासनक पुनर्जन्म भेलै।

---

३१. Allahabad Pillar Inscription of Samudragupta, cf. Arya Manjusrimula Kalpa ( abbreviated MMK ) edited by K. P. Jayaswal and Rahul Sankrityayana, pp. 20, 21, 22 ; for quotation and other details see the following pages.

३२. Regmi, Op. Cit. p. 96.

लिच्छिवी शासन नेपालमे किछु अवधि धरि रहलै ई मंजुश्रीमूल-कल्पोसँ ज्ञात होइत अछि[33]। मानदेव लिच्छवीक राजवंशमे जन्म लेने छला। ओ अस्सी वर्ष धरि शासन कएलनि। मंजुश्रीमूलकल्पमे बादक राजवंशोक विशद् वर्णन छैक जेकर एहिठाम उल्लेख करब अप्रासंगिक होएत। गुप्त वंशक शासकक मध्य जयगुप्त प्रथम ओ द्वितीयक मध्य आठ टा

---

३३. मंजुश्रीमूलकल्प ( मूल राहुल सांकृत्यायन द्वारा सम्पादित ) पृ० ४०

नेपाल :

भविष्यति तदा काले उत्तरां दिशिमाश्रतः।
नेपाल मंडले ख्याते हिमाद्रे कुक्षिमाश्रिते ॥५४६॥
राजा मानवेन्द्रस्तु लिच्छवीनां कुलोद्भवः।
सोऽपि मन्त्रार्थ सिद्धस्तु महाभोगी भविष्यति ॥५५०॥
विद्या भोगवती नाम तस्य सिद्धा नराधिपे।
अशीति वर्षाणि कृत्वासौ राज्यं तस्कर वर्जितम् ॥५५१॥
वतः प्राणात्यये नृपतौ स्वर्गलोके जजग्मसु।
तत्र मन्त्राणु सिध्यन्ति शीतला शान्तिक पौष्टिका ॥५५२॥

इत्येवमादयो प्रोक्ता बहुधा नृपतयोस्तदा।"
अनेकधा बहुधाश्चैव नानारुप विवर्णिताः ॥५५४॥
शास्तु पूजकास्तेऽपि म्लेच्छ राजा न हैं।
वविषः सुवृषश्चैव भावसु शुभषुस्तथा ॥५५५॥
भाक्रमः पदक्रमश्चैव कमलश्चैव कीर्त्यते।
भागुप्तः वत्सकश्चैव पश्चिमः ॥५५६॥

नेपालक पतन :

उदयः जिह्नुनोह्यन्ते म्लेच्छानां विविधास्तथा।
अभ्योधे भ्रष्ट मर्यादा बहिः प्राज्ञोपभोजिनः ॥५५७॥
शस्त्र सम्पात विध्वस्ता नेपालाधिपतिस्तदा।
विद्या लुप्ता लुप्त राजानो म्लेच्छ तस्कर सेविनः ॥५५८॥

टा शासक भऽ गेल छल[३४]। करपात्रकक वंशावलीक अनुसार जयगुप्त द्वितीय जनकपुर तराइ लग बसला। जयगुप्त द्वितीयक एकटा मुद्रा नालन्दाक उत्खननमे पाओल गेल छैक[३५]। तेजस्वी गुप्त-वंशक दोषसँ मिथिलासँ एक शाखा नेपालमे चल गेल।

## मानदेव प्रथम

(४०३–४४७)[३६] अपन स्वतंत्रताकें चिन्हलक आओर लिच्छिवी शासनकें पुनर्जन्म देलनि। ओहि मार्गपर चलताह गुणकामदेव। नेपालक पशुपति परिपाटीक लिच्छिवी मुद्रापर सूर्यक चिन्ह मात्र सूर्यवंशक राज्य दिशि इङ्गित करैछ। द्वितीय शिवदेवक शिलालेखमे ओकरा प्रख्यात लिच्छिवी कहल गेल अछि[३७]। युवानच्वाँग कहैत छथि—'राजा क्षत्रिय जातिक अछि ओ लिच्छिवी मूलक थिक'[३८]। अंशुवर्मन नामक प्रारम्भमे 'महासामन्त' नामक पदवो ईस्वी सन् ६३३ धरि चलैत रहल एहिसँ ज्ञात होइत अछि जे ओ लिच्छिवी राजाक प्रभुत्व ओहिकाल धरि स्वीकार करैत छल[३९]। बिहारसँ हुनक सम्पर्क ईस्वी सन् सातम ओ आठम शताब्दक किछु वैवाहिक सम्बन्धसँ सूचित होइत अछि। आठम शताब्दक प्रथम चतुर्थांशमे सोमदेवक ब्याह मंखारी राजा भोगवर्मनक पुत्री ओ मगधक गुप्तवंशक राजा आदित्य-सेन (ई० सन् ६१२–७२)क प्रपुत्री वत्सदेवीसँ भेल।

---

३४. Levi, II, 72 ; I. A., VII, 89.

३५. Jayaswal—Nepal, 59. He connects the Gupta dynasty of Nepal with the Imperial Gupta (p. 61) Jaya-Gupta II's coins were current in Magadha (p. 67).

३६. Regmi, Op. Cit., 72. Jayaswal (Nepal) puts the date at 576 A.D.—Vamsavali records are confusing in matters of chronology.

३७. Levi, III, 105.

३८. Beal II, 81 ; Watters. II, 84.

३९. Regmi, Op. Cit. 92. Amsuvardhan died in 637 A.D.

## अहीर

मानदेव द्वितीयक पश्चात् राजविप्लवक वर्णन मंजूश्रीमूलकल्पमे मुख्य छैक एहिसँ एहि गप्पक सम्भावना दिशि बढ़ल जाए सकै अछि जे प्रायः नेपालक घाटीमे अहीरक चढ़ाइ भेल हेतैक। डा० जायसवाल एकरा गुप्तवंशक एक शाखा बुझैत छथि[४०]। लेभी आओर दोसर विद्वान् एकर राज्यकाल गणनामे दोष बूझि एहि राजवंशक कोनो ध्यान नहि देलनि अछि। मंजूश्रीमूलकल्पसँ ज्ञात होइत अछि जे ओ सब नेपालसँ सम्बन्धित छलाह। तथाकथित गुप्तवंशो अहीरक किछु शिलालेखक उल्लेख सेहो छैक[४१]। वंशावलीक अनुसारें ओ सब भारतक समतलसँ आएल अहीर छला। करपात्रिक कहैछथि प्राचीनतम अधिकारी विद्वान्क निश्चित मत छैन्ह जे ओ सब महीप गोपालक वंशज रजिपूत छलाह तथा युद्धक हेतु ओ सब सिमराँवगढ़ ओ जनकपुर तराइक बीचमे अपन सेना एकत्रित कएने छलाह। ओ सब नेपालपर विजय कैलनि[४२]। ई० सन् ५०० ओ ५६० मध्य एहि वंशक पाँचटा शासक भेलाह जाहिमे परमगुप्त (ई० सन् ५००) मंजुश्रीमूलकल्पक वर्णित पराक्रमसं साम्य रखैछ। ओ लिच्छिवीसँ शासनकें छीनि लेलनि। हुनक एकटा पौत्र सिमराँवगढ़मे शासन केलनि[४३]। ओही राजवंशक दोसर शाखा तराइमे शासन केलनि। प्रायः ई पृथक्त्व जिश्नुगुप्तक समयमे भेल हेतै। जयगुप्त द्वितीयक मुद्रा चम्पारण ओ मगधसँ पाओल गेल अछि।

---

४०. For their identification with the Imperial Guptas, cf. IBORS, 1936, Part III-244. This has been done on the basis of the coinage.

४१. I. A. IX p. 16 ff.

४२. Kirpatrik—Account of the kingdom of Nepal (1811), 255-257, Cf. Jayaswal—Nepal, 62.

४३. Regmi, Op. Cit. 74—Matatirtha, on the north-west ridge of the valley was capital of the Ahir Guptas.

प्राय: ईस्वी सन ६४३ वा ६४४ मे जिश्नुगुप्तक मृत्युक पश्चात् नरेन्द्रदेव क अधीन लिच्छिवीक आगमनमे सुविधा भेलैक। तांगक वार्षिक वृतान्त जे ओहि कालक अध्ययनक एकमात्र सामग्री अछि, समसामायिक इतिहासपर नीक प्रकाश दैत अछि। मंजु श्रीमूलकल्प नव ओ सत्य तथ्य सूचित करैत अछि जखन ओहिमे नेपाल राज्यक अन्तिम राजाक सम्बन्धमे लिखल छैक जे नेपाल राज्यक अन्तिम राजा उदय ओ जिश्नु छला। आओर हुनक पश्चात् नेपालक शासन ककरो सम्पत्तिपर अधिकार करऽबला अन्यायी म्लेच्छपर निर्भर रहऽ लागल तथा राज्यक प्रथा समाप्त भऽ गेलैक। एहिसँ ज्ञात होइत अछि जे नेपाल तिब्बतमे मिलि गेल। स्ट्रोंगत्सान गम्पो अंशुवर्मनक बेटोसँ ब्याह केलनि। मध्य एशियामे तिब्बतक राजा शक्तिशाली राजा छला। ओ तिब्बतमे बुद्ध-धर्मक प्रचार केलनि आओर हिन्दू सब द्वारा तिब्बती लिपिपर चिन्तन करबौलनि। एहि तिब्बती साम्राज्यक अधीन नेपाल तिब्बतक नियन्त्रणमे आबि गेल ४४।

---

४४. Jayaswal and Sankrityayna--Imperial History of India, pp. 22-23.

For details--p. 21.

—The Lichchavi dynasty and Thakuri dynasty ruled together from the same place. The Thakuris ruled over western province. Cf. Gupta Inscriptions (Fleet) p. 80.

| 'Lichchavis rulers | | Thakuri dynasty | |
|---|---|---|---|
| AMMK | Inscriptions | AMMK | Inscriptions |
| Mandevendra | Missing | Bhagupta | Ansuvarman |
| Vrisha | Vrishadeva (c. 630 A.D.) | Jishnu | Jishnugupta |
| Bhavasu | Sankardev | Udaya | Udayadev' |
| Bhakrama | Dharmadeva (Son of Shankar) | | |

Pp. 22. 'The Buddhist faith of the Nepal Lichchavis is attested by Yuanchwang, and of the family of Ansuvarman by the conversion of the great Tibetan Emperor through his chief queen, who was Ansuvarman's daughter.'

ईस्वी सन् ६४६मे हर्षवर्धनक ओतऽ चीनी राजदूत नेपाल होइत अएलाह। तावत हर्षवर्धन मरि गेल छला। तिरहुतक राज्य अर्जुन जे प्रायः गुप्तवंशी राजकुमार छला, हड़पि लेने छला। थानेश्वर वंशक गवर्नर जेकाँ ओ तिरहुत पर राज्य करैत छला। ओ चीनी राजदूतकें कष्ट पहुँचलनि। चीनक राजदूतक सहायताक हेतु अर्जुनक विरुद्ध ७००० सेना सङ्ग नेपाल अर्जुनपर आक्रमण केलनि। अर्जुन पराजित भ' गेला ओ बन्दी बनाओल गेला[४५]। एकर पश्चात् तिब्बतक अधिकार नेपाल ओ तिरहुत पर भेल। तिब्बतक राज्य ७०३ धरि बिना कोनो ह्रासक लगातार रहल। तखन नेपाल विदेशी शासनसँ मुक्ति पएबाक हेतु माथ उठौलक। युद्धमे तिब्बतक राजा मारल गेला। धर्मदेवक स्थान (शंकरदेवक पुत्र ओ लिच्छिवी शासक) महान् बुझना जाइत अछि। चंगुनारायणक शिलालेखसँ ज्ञात होइछ जे धर्मदेवक पुत्र मानदेव तृतीय विजयक चारिटा स्तम्भ निर्मित कएलनि। चीनी स्रोत एहि तथ्यकें मानने जाइत अछि आर तथ्य ई छैक जे नेपालक राजा द्वारा तिब्बतक राजा मारल गेलाह[४६]।

एहि प्रकार ई प्रत्यक्ष अछि जे लिच्छिवी सबहिक पुनरागमनसँ सब दिशि विकास भेलैक। मानदेव तृतीयक चंगुनारायण शिलालेख (ई० सन् ७८५, G. E. 386)सँ ई ज्ञात होइत अछि जे ओ मल्ल सबहिक सङ्ग युद्ध कएने छला आओर गण्डक धरि पहुँचल छला[४७]। हुनक शासनक अग्रिम घटना सबसँ ई ज्ञात होइत अछि जे ओ अपन सर्वोच्चताक पद कायम नहि राखि सकला जेना कि ओ स्वयं नृपति कहबैत छलाह जखन कि हुनका

---

४५. JASB, VI, 69-70; cf. V. A. Smith—Early History of India, pp. 366-7; IRAS 1867-70:pp. 55-60; I. A. IX 20; IASB (letters), XI, Jayaswal—Nepal; 74. Imperial History 22; Manchester Journal of Oriental Society (1911), p 129-52. Missionary Journal (China) 1904; Asiatic Quarterly review, 1910.

४६. JRAS, 1880, 438.

४७. Levi III, 14.

समसामयिक, शिवदेव द्वितीय महाराजाधिराज कहबैत छथि[४८]। डा० जायसवालक विश्वास छैन्ह जे दुइ तरहक सार्वभौमिकताक उत्पत्ति नेपालमे लिच्छवीक दुइ प्रकारक संविधानक परम्परामे पड़ैत छैक (राजा ओ उपराजा)[४९]। स्वयंभूनाथ शिलालेखमे संविधानक एहि दिशाक उल्लेख छैक[५०]।

तिब्बतपर नेपालक विजयसँ नेपालक सैन्य-शक्तिक बहुत प्रशंसा भेलैक जेकर परिणाम बहुत दिन धरि दृष्टिगोचर होइत रहल। नेपाल ओहि दशामे छल जे ओ शक्तिशाली अध्यक्ष सबसँ लोहा लऽ सकै छल। जौं कल्हणक 'राज तरंगिणी' पर विश्वास कएल जाइक तँ ई कहल जा सकैछ जे नेपालक राजा कश्मीरक राजाकेँ पराजित कएने छला। लिच्छिवी शासक, जयदेव द्वितीयकेँ एहि विजयक पूरा श्रेय छैनि। ई नेपालक हेतु कोनो छोट उपलब्धि नहि छल[५१]। जयदेव द्वितीयकेँ गौड़क राजा ओतए सासुरक सम्बन्ध छलैन। ओ अपन राज्यक विस्तार कमसँ कम तराइ क्षेत्र

४८. I. A. IX, 167 and 174.

४९. Jayaswal—Nepal, 89.

५०. JBORS, XXI, 81. एहिठाम ई स्मरणीय थिक जे नेपालक लिच्छिवी शासक बिहारसँ सम्पर्क बनौने रहलाह। नरेन्द्रदेवक पुत्र, शिवदेवक ब्याह आदित्यसेनक पौत्री सङ्ग भेलैक। शिवदेवक पश्चात् जयदेव गद्दीपर बैसलाह जे 'परचक्रकाम' पदवी रखने छलाह। पशुपति मन्दिरक शिलालेखमे जे द्वि-अर्थवाला उपाधि देल छैक ताहिसँ ई विचार करबाक हेतु बाध्य होमय पड़ैत अछि जे ओ किंवा अङ्ग, कामरुप काँची ओ सौराष्ट्रकेँ जीति लेने छल वा ओहिपर ओकर कोनो रूपें प्रभुत्व छलैक। (R. G. Basak—Op. cit. 301) Levik विश्वास छैक जे पद कवितामे छैक (II, 170).

भगवान लाल इन्द्रजी एहि विषयकेँ कोनो मुख्यता नहि दैत छथि। शिवदेवक शिलालेखमे उपाधि एहि प्रकार देल छैक :

*'भट्टारक महाराज लिच्छिवी कुलकेतु'* (Regmi, Op. Cit. 88)

५१. राज तरंगिणी (R. S. Pandit क अनुवाद) Pp. 142-44. Verse 531-33, cf. JBORS, 1936 Pp. 251-53.

धरि अवश्ये कएलनि जौं पूरा उत्तरी भारतकें हुनक अधीन नहि मानल जा सकैछ। हुनक शासन-कालमे नेपाल सङ्ग गौड़ ओ पाटलिपुत्रक घनिष्ठ सम्पर्क छल। जयदेव द्वितीयक पश्चात्क शासक लोकनि नेपाल घाटीक शासन कैलनि। ई नहि ज्ञात भ सकल अछि जे जयदेव द्वितीय ओ राघव-देवमे कोन सम्बन्ध छल। राघवदेव नेपालक सम्वत् चलबौलनि जे ई० सन् ८७६-८० मे आरम्भ होइछ [५२]।

## पालवंश

नेपालक ठाकुरी-राजवंशकें विहारसँ किछु प्रकारक सांस्कृतिक सम्पर्क छलैक। बौद्धधर्मक महायानशाखा नेपालमे नीक जेकाँ ग्रहण कएल गेल। नेपाली विद्वान् सबहिक झूंड नालन्दा ओ विक्रमशिलामे उच्च शिक्षा प्राप्तक हेतु आएल। विहार ओ बङ्गालक पालवंशक किछु प्रकारक प्रभुत्व नेपालपर छल। जायसवाल साहेबक कथन छैन्ह जे पालवंशक राजा सबकें हिमालय-वासी कम्बोज सबसँ एक भिड़न्त भेल छलैन्ह। कम्बोज सब समयक हेतु पालवंशी सबकें हराए दिनाजपुरमे बसलाह। जतए नेपालसँ नीचा अएबाक एक गोट मार्ग छैक। पालवंशमे ई ग्रहण लागि जाइत छैक। ई० सन् ८८० ई० मे, जखन अगना सब देखैत छी जे नेपाल अपन सम्वत् आरम्भ करैत

---

५२. Kirpatric, p. 261; For detail cf., Bendall JASG 1903, p. 21; D. W. Wright-History of Nepal, p. 153; For the Nepali Era, consult Wright Op. Cit. 167; I. A. XIII, 412; Levi, II, 175-79; H. C. Ray, Dynastic History of Northern India, I, 1230-32; Fleet : Gupta Inscriptions—C. I. I, II, 74; JASB, (1888), p. 246 ff. G. S. Ojha, Prachin Lipimala, p. 38; I. A, XV, 38; JBORS. 1936, 166; I. A. IX, 183; Regmi, Op. Cit. p. 133-37. He says: 'But after Ansuvarman the thakuris lost power and it was not until 879 A. D. that they could regain it. That year marks the end of the Lichchavi rnle as well as restoration of the Thakuri dynasty'. —Pp. 137

अछि। महिपाल प्रथमक अधीन पाल साम्राज्य पुनस्संगठित भेल। हुनक शासन-कालमे तिब्बतमे बौद्धधर्मक प्रचार बिहारसँ नव-नव बौद्ध-भिक्षुक दल गेलासँ अत्यधिक भेल। एहन बुझना जाइछ जे नेपाल एहिसँ बाँचल नहि होएत '......रामपाल नेपालोक अधिपति भेल।'

जयसवालक निरीक्षण 'कुब्जिका-मतम्' नामक पांडुलिपि पर मूलतः आधारित छैन्ह, जे सन्देहास्पद नहि हो ई नहि भऽ सकैत अछि।[५३] जायसवाल एकरा नेपालमे पालशासनक निश्चयात्मक प्रमाण बुझैत छथि[५४], जखन कि रामपालक दरबारक कवि एहि विषयमे निश्चितरूपेँ किछु नहि कहैत अछि। सिल्विअन लेभी आओर गम्भीर विचार रखैत छथि: 'ई नहि असम्भव अछि जे पालवंशक आधिपत्य एहि समय धरि किछुओ अंशमे नेपालपर अवश्ये लादल गेल होएत [ई० सन् ११म शताब्द आरम्भमे] ई एहि बात के उघारि के राखि दैत अछि जे पालवंशक शासन कालमे विशेष कऽ कें महिपाल ओ नागपालक कालमे पांडुलिपि सबहिक नकल कऽ नेपाली संग्रहमे उपस्थिति छल। नेपाल ओ पालवंशक राज्यमे धर्मक आदान-प्रदान अधिक घनिष्ठ ओ बारम्बार भेल होएत।[५५] डा० आर० सी० मजुमदारक विचार छैन्ह जे महिपालक इमादपुरक मूर्तिक शिलालेखक तिथिकें ४८ सम्वत्क अपेक्षा नेवारी सम्वत् १४८ ( =१०२८ ई० सन् ) पढ़ल जाए सकैत छैक। ओ इहो मानैत छथि जे मूर्तिक समर्पित कएनिहार अवश्य नेपालक वासी छल होएत तैं नेवारी सम्वत् व्यवहृत भेल अछि।[५६]

बिहार ओ बङ्गालक पालवंशो सबहिक नेपालक सङ्ग नियमित सम्बन्ध छल एकर प्रमाण भेटैत छैक। सन् १०३८ मे तिब्बती सब नेपाल

---

५३. H. P. Sastri. Catalogue, 54; Cf. Bendall's Introductions therein, p. 22.

५४. Jayaswal—Nepal, 100.

५५. Levi, II, 188.

५६. JASB. (1950 Letters), p. 248; also consult Dr. D. C. Sircar's rejoinder to Dr. Mazumdar, published in the Indian Historical Quarterly.

होइत विक्रमशिला विश्वविद्यालयसँ अतीश दिपंकर सुज्ञानकें पकड़ि आनबाक हेतु गेल छलाह। तारानाथक अनुसार ई० सन् १०४० मे अतीशकें घाटीमे एकटा स्थानीय शासकसँ भेंट भेलैक[५७]। बौद्ध-धर्मक महायान शाखामे नवीन रूपकें स्थान देबाक हेतु अतीशकें श्रेय छैक। ओकर नेपाल गेलाक बादे प्रायः महायानमे तांत्रिक रूप देखल जाइत छैक। नेपाले ओ प्रमुख प्रवाह छल जाहि बाटे पालवंशी राजा अपन 'वज्रायन' दर्शनकें प्रसारित कएलैन[५८]। पालवंशक शासनक प्रारम्भेसँ ई सांस्कृतिक बन्धन दूनू शक्तिक मध्य दुर्लभ राजनैतिक सम्बन्ध स्थापित केलकै। तांत्रिक रामायण पांडुलिपिक कोलोफोन (Colophon) 'कुब्जिमातम्' मे लिखल छैक—'परमेश्वर परमभट्टारक महाराजाधिराज श्रीमद् रामपाल देवस्य विजयर्जये।' यदि एकरा निश्चित प्रमाण मानल जाए तँ ई कहल जाए सकैत छैक जे रामपाल (१०८४-११३० ई० सन्) नेपालपर शासन कैलन्हि। एहि मतकें प्रमाणित करबाक हेतु कोनो अन्य सामग्री उपलब्ध नहि अछि। ई सत्य थिक जे एगारहम शताब्द मे नेपाल आन्तरिक रूपमे विभाजित भऽ गेल छल आओर कोनो शक्तिशाली केन्द्रीय शासकक अभाव छल। पाटन, काठमांडू आओर भटगाँव—तीन गोट मुख्य सामन्तवादी प्रदेश छल। तैं वर्तमान समयक सामग्रीक आधारपर इएह कहल जाए सकैत अछि जे पालवंशक शासनक ओहि क्षेत्रमे प्रसारक सम्भावनाकें असत्य नहि मानि कहल जाए सकैत अछि। किछु बेशी अवधिक पश्चात् पालवंशीकें मिथिलाक कर्नाट् वंश सब पराजित कैलनि।

---

५७. Life of Atisha, Translated by Saratchandra Das in the Journal of the Buddhist Text Society, I, pp. 25-30; cf. Levi, I, 167.

५८. A. Coomarswami - History of India and Indonesian Art, p. 144. For contemporary Nepalese history, also cf. Historical Records Commission, XIII, p 62.

## चालुक्यक नेपालपर चढ़ाइ

चालुक्यक सम्राट् सोमेश्वर ( प्रथम ) उत्तरी भारत दिशि आक्रमण करबाक हेतु बढ़ला। ओकर पुत्र विक्रमादित्य षष्ठम अपनाकें एहि रूपमे वर्णन करैत छथि जे हमर पैर आन्ध्र, द्राबिड़, मगध आओर नेपालक राजा सबहिक माथपर अछि[५९]। ११६२ ई० सन्‌क पट्टादुकल शिलालेखक अनुसार नेपाल चालुक्य सम्राट् सोमेश्वर तृतीयक परतन्त्र राज्य सबहिक श्रेणीमे राखल गेल अछि। प्रारम्भमे ई सोमेश्वर ओ विक्रमादित्य षष्ठम द्वारा विजित भेल छल[६०]। १२०० ई० सन्‌क एकटा शिलालेखमे कालचुरी वज्जलक प्रशंसा नेपालक स्वतन्त्रता नष्ट करबाक हेतु कएल गेल छैक[६१]। मंगलीक शिलालेखक अनुसार कहल जाए सकैछ जे यादव जैतुङ्गी ( ११९१-१२१० ) नेपाल सेनापति सबकें पराजित कएने छला। ईस्वी सन् ११म शताब्दक प्रारम्भेसँ नेपालपर ई बेर-बेरक विदेशी आक्रमणसँ अनुमान लगैछ जे ओहिठामक राजनैतिक स्थिति सदिखन अस्थिर रहलै। ओहि अवधिमे नयाकोट ओ पाटनक ठाकुरी वंशक बीच किछु हेरफेर भेल छलै। इहो कहल जाइत छैक जे नयाकोटक ठाकुरीक पुनस्संगठन तिरहुतमे उत्पन्न भेलै जतऽ कर्नाट् वंशी अपन राज्य स्थापित कऽ लेने छलाह[६२]।

## मिथिलामे कर्नाट-वंश

मिथिलाक कर्नाट् वंशी सब नेपालक दुर्व्यवस्थासँ लाभ उठाए नान्यदेवक समयमे नेपालक घाटीमे प्रवेश कैलनि। ठाकुरीक कथन छन्हि, नान्यक पूर्वज तिरहुतमे नेपालक सीमापर जागीरदार सबहिक सरदार भऽ कै स्थापित

---

५९. JBRAS, XI, 268 ; IHQ , VII, 683.
६०. IHQ , VII, 682 ; Quarterly Journal of the Mythic Society XLIV, p. I ff. IHQ XXX 208–8 ; TM, 233.
६१. TM, 233
६२. Cf. my article 'The Karnatas of Mithila' in the ABORI, XXXXV, 97 ( abbreviated Annals. )

छकाइ, कियैक तँ महान् चालुक्य राजकुमारक चढाइ हिमालयक पहाड़ीक तराइमे बेरि-बेरि होइत छलैक......शक्तिशाली चालुक्य सेनाक पाछाँ हँटि लेबाक पश्चात्......कर्नाट् वंशी अपन शक्ति एकत्रित कए तिरहुतक शासक बनि गेलाह[६३]। नेपालक अस्थिर राजनैतिक स्थिति नान्यदेवकें सम्पूर्ण देशकें पराजित करबामे सफलीभूत केलक। ओ राज करैत शासक सबकें पदच्युत कऽ कै अपन राजधानी भटगाँवमे बनौलनि। जौं नेपाली परम्परा पर विश्वास कएल जाए तँ ई कहल जा सकैछ जे नान्यदेव काठमाण्डूक जगदेवमल्ल पाटन ओ भटगाँवक आनन्दमल्लक दुइ राजकुमारकें बन्दी बनौलक। लेभीक अनुसार एहि कालमे मल्ल राजाकें नेपालमे प्रवेश कराएब इतिहासकारक भारी भ्रम थिकैन्ह[६४]। नेपालक मल्ल सब अपन उत्पत्तिक वर्णनमे नान्यदेव दिशि इंगित करैत छथि[६५]। दोसर मत इहो छैक जे नान्यदेव ओहि स्थानीय शासककें किछु नइ कहलथिन जे तिरहुतक कर्नाट-वंशीक प्रभुत्वमे शासन-व्यवस्था करब स्वीकार कैलक।

संभवतः कर्नाटवंशी पालसबकें हरा कै नेपाल मे अपन आधिपत्य केलक। बेन्डॉल नान्यदेव केँ त्यागिए देने छथि तथा राइट ओ भगवानलाल हुनका बहुत बादक समयमे घीचि अनने छथि[६६]। एहिमे किछुओ आशंका नहि जे नान्यदेव सम्पूर्ण नेपाल घाटीक स्वामी बनला। डॉ० डब्ल्यू० राइट नान्यदेव ओ नेपालक मल्लक आपसी संघर्षक उल्लेख कएने छथि। नान्यदेवकेँ नेपालमे चैनसँ निन्न नहि भेलनि कियैक तँ एकटा सिंह-

---

६३. TM—233. For Nanya and origin of the Karnatas, cf. my article in the Jaipur Session of PIHC.

६४. Levi, II, 199 ff H. C. Ray Op. Cit. 203-4.

६५. Annals (Silver Jubilee Volume), P. 299; Cf. Pratapa-maua's inscription ; cf. Annals XXXV, 97.

६६. E. I., I, 305 ; JASB, V, 407 ; Ibid XI, 411 ; R. D. Banerjee—Banglar Itihas, I, 318 ; H. C. Ray, Op. Cit. II, 358 ; JBORS, IX, 302 ; XXII, 256, I. A., IX, 188 ; XIII, 418 ; Annals (1942), p. 299 ff. ; Levi, II, 199 ff ; TM, Op. Cit. 233 ff.

देब नामक, ठाकुरी राजकुमारसँ जनिका खूब पैघ पदवी छलनि राजाधिराज परमेश्वर, हुनका संघर्ष भेलनि। ई० सन् १११९ ओ ११२०क मध्य नान्यदेव नेपाल पर चढ़ाइ कैलनि। स्थानीय शासक-गण अपन पैघ - पैघ उपाधि धारण करैत रहलाह यद्यपि ओ एक सहकारी वा अधीन पद पर काज करैत छला[६७]। श्रीरेग्मीक विचार छैन्ह जे नान्यदेव नेपाल घाटीकेँ दोसर बेर ई० सन् ११४१मे पराजित केलनि[६८]। ई० सन् १११८ ओ ११४१ क मध्य नेपालमे नान्यदेवक हेतु किछु गड़बड़ी भऽ गेल हेतैक जाहि कारण ओहि घाटी पर ११४१ ई० मे दोसर बेर चढ़ाइ करए पड़ल हेतै। हुनक सार्वभौमिकताक स्पष्ट रूप नहि ज्ञात छैक।

नेपाल राज्यपर नान्यदेवक दोसर बेरक विजय सिद्ध करैत अछि जे ई० सन् ११४७ धरि हुनक राज्य ओतय निर्बाध रूपमे चलैत रहल। हुनक उत्तराधिकारी सब शासनकेँ स्थिर रखलनि कि नहि ई स्पष्ट शब्दमे नहि कहल जाए सकैछ। मिथिलामे ई दन्तकथा अछि कि जे नान्यदेवक एकटा पुत्र नेपाल पर शासन कैलनि[६९]। कियैक तँ गंगदेवक शासन मिथिलामे छलैन्ह एहि सँ प्रकट होइत अछि जे मल्लदेव नेपालक शासक छलाह। इहो कहल जाइछ जे मिथिलाक तेसर कर्णाट शासक, नरसिंहदेवकें नेपालक अपन सम्बन्धीसँ मतभेद छलैन्ह। जकर परिणाम ई भेल जे मिथिला ओ नेपाल पृथक् - पृथक् भऽ गेल। नान्यदेवक चढ़ाइक सम्भावना कें बिसरल नहि जाए सकैछ अछि। प्रायः मल्लदेव नेपाल ओ मिथिलाक पूर्वभाग पर शासन करैत छला तथा हुनका अपन भाइ गंगदेवसँ वैमनस्य रहै छल। संभवतः नरसिंहदेवक समयमे (ई० सन् ११८८-१२२७) नेपालक राज्य पृथक् भेल छल[७०]। नान्यक पश्चात कर्णाटक शासन नेपालमे दुर्बल भऽ गेल छलैक। पाँच गोट पाँडुलिपिक[७१] आधार पर ई कहल जा सकैछ जे नेपालमे कर्णाट-शासनकें

---

६७. Annals, XXXV, 98 ; cf. Rai Op. Cit. 7, 282.
६८. Regmi, Op. Cit. 145.
६९. S. N. Sinha, History of Tirhut p. 62.
७०. Annals XXXV pp. 98-102.
७१. Nepal Catalogue, p. 23. (Bendall's introduction) Cf. Regmi, Op. Cit. 145–47.

ठाकुरी राजा उखाड़ि फेकलक। ओहि कालमे नेपालक इतिहासक हेतु पाण्डु- लिपिएटा एकटा स मग्री रहि जाइछ। नान्यक पश्चात् स्थानीय सरदार सब अपन स्वतंत्रता स्थापित कएने हेताह किन्तु एहिमे सन्देह छैक जे नान्यदेवक उत्तराधिकारी सबहिक अन्तर्गत ओ सब स्वीकार कैएने हेथिन।

## मल्ल-शासन

कर्नाट सबहिक विस्तृत वर्णन करबाक पूर्व एहिठाम पढ़िनेके नेपालमे मल्ल शासनक मल्ल सब प्रमुखता रखैत छथि। मौर्य साम्राज्यक पश्चात् पर्वतीय शृंखलाकें छाड़ि ओ सब गण्डक नदीक समतल दिशि बढ़ला। इतिहास इंगित करैत अछि जे मिथिलामे नान्यक पूर्व ओ पश्चात् मल्ल परि- वारक शासन छलैक। लेभिक धारणा छैनि जे मिथिलामे एहन राजवंशक अस्तित्व पूर्णतः असम्भव नहि छैक[७२]। नेपालक अस्थिर राजनैतिक परि- स्थिति देखि ओ सब नेपाल घाटीमे पैसलाह ओ ओतुक्का स्वामी भऽ गेलाह। मल्ल सबहक नव राजवंश अरिदेव मल्लक राजकालसँ आरम्भ होइत छैक। नीलग्रीव स्तम्भ शिलालेखसँ ज्ञात होइत छैक जे धर्ममल्ल सबहेक नव राजवंश अरिदेव मल्लक राजकालसँ आरम्भ होइत छैक[७३]। नीलग्रीव स्तम्भ शिला- लेखसँ ज्ञात होइत छैक जे धर्ममल्ल ओ रूपमल्ल नेपालक मल्ल सबहक पूर्वज छलाह[७४]। एहि राजवंशक प्रमुख शासक भेला अरि मल्लदेव जकर ज्ञात तिथि ई० सन् १२०१ सँ १२१६ धरिक मध्यमे पड़ैत छैक। ई नहि ज्ञात अछि जे ओ मिथिला पर शासन कैलनि। यथा सम्भव ओ नेपालक स्थानीय मल्ल राजवंशक छला[७५]।

---

७२. Levi, II, 210-13.

७३. Ibid, II, 213.

७४. Archæological report of the Terai Excavations (P. C. Mukherjee), 1901. Report, p. 634.

७५. Vide Dr. R. C. Mazumdar's reply to my letter dated 22nd April 1950 relating to the identification of Arumalla- deva, mentioned in the History of Bengal, Vol. II, p. 22, described as the King of Mithila by Dr. K. R. Qanungo.

## कर्नाटक पुनस्संगठन

जखन नेपालमे मल्ल सबहक शासन छल, मिथिलाक एकटा मंत्री नेपाल पर एक प्रकारक आक्रमण कऽ देलनि। चन्डेश्वर अपन दानरत्नाकरमे गर्वपूर्ण कहै छथि जे नेपालक सब राजाकें ओ पराजित कऽ देने छला[७६]। चौदहम शताब्दक प्रथम चतुर्थांशमे नेपालक राजनैतिक परिस्थिति स्थायित्व प्रमाण कएने नहि छल। चण्डेश्वर द्वारा नेपाल-विजयक कथा नाटकक रूपमे ओ अपन 'कृत्य रत्नाकरमे' कैने छथि आर ओहि मेहसिंह देवक वर्णन वाग्मती नदीक तटपर बलिदान समारोह होइत देखाओल गेल छैक[७७]। बेर-बेरक मुसलमान आक्रमणसँ हरिसिंहदेवक नेपालपर आधिपत्य अस्थिर बुझना जाइत अछि आर मल्ल सब द्वारा उपयुक्त प्रतिरोध करब बुझना जाइछ। नेपालक इतिहासमे ई० सन् १३१४ मे नेपालपर दक्षिणसँ चढ़ाइ भेलैक एकर उल्लेख विद्यमान छैक। ई० सन् १३१४ क पूर्व धरि हरिसिंहदेव तिरहुतक एकमात्र शासक नहि भऽ सकल छला जेना कि ई० सन् १३१८ क पांडुलिपिमे एकटा ठाकुरी राजकुमारक शासन करबाक उल्लेख छैक।

बाहरी भयक कारण, इच्छा रहितो हरिसिंहदेव नेपालमे अपन शासनकें दृढ़ नहि बना सकला। तुगलकक सेनाक दबावसँ विवश भऽ के हुनका नेपाल राज्यक हेतु घोषणा करै पड़लन्हि। जखन ओ तुगलक सेना द्वारा पराजित भऽ गेल। (ईस्वी सन् १३२४-२६) त पहाड़ दिशि कष्ट अपन शक्तिकें अपन पदकें ठांस बनेबाक हेतु लगाए देलन्हि[७८]। नेपालमे

७६. Eggelling—India Office Catalogue, p. 412.

७७. JASB (1915) p. 410. It was during this expedition that Katmandu was stormed.

For Quotations from the Krtyaratnakar regarding Nepal and the Karnatas, see my paper. 'The Karnatas of Mithila and Nepal' submitted to AIOC, Delhi Session 1957.

७८. Levi II, 220, For Muslim invasion of Tirhut of JBORS XXII 86 ; Biggs; Feristha I. 406 ; my unpublished book 'History of Muslim rule in Tirhut' (1200-1765) T. M, last chapter.

तखन जयरुद्रमल्लक शासन छलैक जे बिना प्रतिरोध कै नहि आत्म-समर्पण कऽ देलनि। कहल जाइछ जे हरिसिंहदेव भटगाँवमे सूर्यबंशी राजवंशक परिपाटीक स्थापित केलनि[७९]। ओ अपन शक्तिकें नेपालमे पुनस्संगठित केलनि आ र कर्नाट् प्रभुताकें पुनि संस्थापित केलनि। ओ बेशी काल धरि भटगाँवसँ शासन केलनि जतऽ तुलजादेवीक मन्दिर ओकर कीर्तिकें सूचित करैछ[८०]। ओ मिथिलासँ आएल अनेक विद्वानक सम्मान करै छला। किछु कालक हेतु हरिसिंहदेवक आक्रमणक कारणें ठाकुरी-शासनमे ग्रहण लागि गेलै। जयस्थितिक समयक नेपाली इतिहासमे हुनक आक्रमणक बर्णन नहि अछि कारण समसामयिक इतिहासकार हुनका बिदेशी बुझैत छल। हुनक उत्तराधिकारी १७६५ धरि शासन केलनि, एहि तथ्यकें बिभिन्न स्रोत सब प्रमाणित करैछ। एकटा शिलालेखसँ नेपालमे हुनक सार्वभौमिकता सिद्ध होइत अछि[८१]। हरिसिंहदेवक प्रख्यात् आक्रमणक अतिरिक्त आनो वैदेशिक शक्ति सब सेहो आक्रमण कैलक जाहिमे एकटा छल पश्चिमी नेपालसँ आदित्यमल्लक आक्रमण[८२]। कहल जाइछ जे तिरहुतिआ

७९. I. A. XIII. 414.

८०. Cf. IASB LXII, p. 250 ; IASB, 1903, p. 12 ( Bendall disbelieves the story of this invasion. ) JBORS ( 1936 ) p. 615--The Thakuri prince Jayrajdeva was ruling in Khatmandu in 1346 A. D., Cf. D. W. Writ—History of Nepal, p. 174-5 narrates the mythical story of Tuljadevi.

८१. I. A. (1880), p. 189, Inscription No. 19, Verse 10.

जातः श्री हरिसिंहदेव नृपति प्रौढ़ प्रतापोदयः
तद्वंशे विमले महारिपु हरे गाम्भीर्य रत्नाकरः
कर्त्तायः सरसामुपेत्य मिथिलां संलद्य लक्ष्मप्रियो
नेपाले पुनराद्य वैभवयुते स्थैर्यं विधते चिरम् ॥

८२. Bendall Op. Cit. p. 10.

जगतसिंह किछु दिनक हेतु विशेष सार्वभौमिकताक उपभोग कएल[८३]।

हरिसिंहदेवक परिवार नेपालमे बरोबरि शासन करैत छलै[८४]। Wright क अनुसार हरिसिंहदेवक उत्तराधिकारी सब छलाह :

(a) मतिसिंह (१३१५-६६)—सिवराँवक गद्दी पर १५ वर्ष धरि राज्य कैलनि। चीनी सब सिवराँवक शासककें मान्यता दैत छलथिन। कहल जाइछ जे, सिवराँवक गद्दी समरुद्दीन इतियास द्वारा नष्ट कऽ देल गेलै।

(b) शक्तिसिंह— अपन पुत्रक हेतु गद्दीकें २२, २७ वा ३३ वर्ष धरि त्यागि देलक।

(c) श्यामसिंहदेव—हिनका कोनो पुत्र नहि भेल। हुनक पुत्री मल्लवंशक राजकुमारसँ विवाहित भेल।

ई स्मरण राखक चाही जे चीनक सम्राट, हांग-वू नेपालक ओतऽ दुइटा दूत पठौलकै जाहिमे एकटाक नाम छल मा-ता-ना (मतिसिंह)[८५] चीनी दूत एकटा सरकारी मोहर अनने छल जाहिसँ प्रमाणित होइछ जे राजकीय कार्यालयमे मतिसिंह अछि। बदलामे, नेपालक राजा सोना, उपदेश ओ धार्मिक ग्रन्थक उपहार पेकिङ्ग पठौलकै। शक्तिसिंह चीनक सम्राटक ओतऽसँ एकटा मोहरक सङ्ग एकटा पत्र पौलक। मोहरपर लेख

---

८३. Ibid, p. 11, Bendall at one place, (Ibid p. 9) observes : In the reign of Anant malla (N. S. 408, V. S. 1344-1280 A. D.) A considerable number of Tirhut families also planted themselves there. (Cf. Kirpatric, p. 264) There are evidences to show that during the Karnat period, there was a regular intercourse between Mithila and Nepal. The family of Harisimhadeva had a preponderant role in the contemporary history of Nepal, Cf. Regmi, Op. Cit. p. 155.

८४. Wright, Op. Cit. p. 180.

८५. Penceval London Nepal, Vol. I. pp. 37-39.

छलैक 'शक्तिसिंहा राम'। ई घटना ५३५ चीनी बर्षमे भेल छलै[८६]। एहि प्रकार चीन श्रो नेपालक मध्य दूतक आवागमन ई० १३३०, ३९९, १४१४ श्रो १४१८ इत्यादि वर्षमे भेल। श्यामसिंह एकटा मोहर पश्रोलक जाहिमे ओकर राज्यारोहण अनुमोदित छलैक। एहि तथ्य सबसँ ई प्रत्यक्ष छैक जे चीनी सम्राट् एहि कर्नाट्वंशी शासक सबकें नेपालक राजकीय सार्वभौम बुझैत छलैक।

रज्जलदेवीक पति जयार्जुनक शासन कालमे जयस्थितिमल्ल द्वारा राज्य शासनमे नियम विरुद्ध विप्लव ( Coup deta't ) कैल गेल। कहल जाइछ जे जयस्थिति सिमराँवक हरिसिंहदेवक वंशज छलैक[८७]। श्रो रज्जलदेवीसँ जे नायकदेवी श्रो जगतसिंहक पुत्री छली, विबाह कैलनि। बेन्डाल साहेबक कथन छैन्हि जे जयस्थिति जयार्जुनकें पराजित कऽ के नेपालक राजा भेला। श्रो सूर्यवंशी कर्नाट श्रो मल्लक योग्य प्रतिनिधि भेला। हुनक सन्तान देशक शासन ओहि समय धरि करैत रहल जखन धरि पृथ्वीनारायण आबि कें पदच्युत नहि कऽ देल वा नेपाल पर गोरखा सबहिक विजय नहि भेल[८८]। जयस्थितिमल्ल सङ्ग रज्जलदेवीक विबाह भेलास तीनटा शक्तिशाली शासक परिवार—ठाकुरी, कर्नाट् श्रो मल्ल संयुक्त भऽ गेल[८९]।

जयस्थितिमल्लक एक अति शक्तिवान शासक छला। यक्षमल्ल हुनक उत्तराधिकारी बनला जे अपन अधिकार मिथिला धरि बढौलनि। श्रो अपन प्रतिद्वन्द्वीकें हराए कें अपन राज्यकें चारि भागमे विभक्त कैलनि।

(a) भटगाँव—अपन ज्येष्ठतम पुत्र राज्यमल्लकेँ।

(b) बनेपा—रणमल्लकें।

---

८६. I. A. XIII, 414; T. M., 285, ff. Annals, XXXV, pp. 118-19.

८७. Bendall Op. Cit. 12-14; cf. Mitra : Mazumdar Edition of Vidyapati, p. 38.

८८. Oldfield—Sketches from Nepal, Vol. I.

८९. Regmi—Op. Cit. p. 156; for details about Jayasthiti see pp. 156 ff.

(c) खटमण्डू—रत्नमल्लकें।

(d) पाटन—अपन पुत्रीकें[१०]।

ई सबसँ पैघ भ्रम छल जकर परिणाम नेपालक सर्वनाश भेलैक। सत्रहम शताब्दक आरम्भमे नेपाल अनेक 'जागीर' मे बाँटि देल गेल[११]। सबसँ पूवमे किरात प्रदेश छल जाहिमे दूधकोशीक समतल, ओकर शाखा तथा सूनकोशीक पूर्वमे तराइक किछु भाग छलैक।

## मुसलमान आक्रमण

ऐतिहासिक सम्पर्क पकड़बाक हेतु ईस्वी सन् १४म शताब्दसँ पुनचर्चा करै पड़ैछ। कर्नाट् द्वारा नेपाल विजय पश्चातो अनेक स्थानीय राज वंश छल जे सार्वभौमिकता उपभोग करिते छल। ईस्वी सन् १३४६-४७ क प्राय: नेपालक राज्य अनेक छोट-छोट प्रदेशमे विभक्त भऽ गेल। हरिसिंह देवक उत्तराधिकारी सब भटगाँवमे शासन करैत छलाह—आओर ठाकुरी राजवंशी सब खाटमाँडूमे शासन करैत छलाह। हुनक स्वतन्त्रतामे सन्देह करबाक कोनो विषय नहि अछि। बङ्गालक हाजी इलिआस नेपाल पर ई० सन् १३४६ मे पूर्णियाक बाटे आक्रमण कएने छलैक। वेन्डॉल के छाड़ि आओर सब वंशावलीमे मुसलमानक एहि आक्रमणक उल्लेख नहि अछि। स्वयं-भूनाथक शिलालेख एहि विषयमे स्पष्ट छैक[१२]। एहि शिलालेखक अनुसार हाजी इलिआस खाटमांडूकें घेर लेलक, शहरमे आगि लगा देलक, लूटपाट मचौलक एवं मूर्ति सबकें ध्वस्त कऽ देलक। शिलालेखक तिथि छियक नेवारी सम्वत् ४९२ = १३७१-७२ ई०, मन्दिर पुनः निर्मित भेलैक स्तूपक पुन: संस्थापित समारोह मनाओल जाइत काल। स्तूपकें नवम्बर-दिसम्बर सन् १३४६ ई० मे बङ्गालक समसुदीन तहस-नहस क देने छलैक।

---

९०. London, Op. Cit. p. 39.

९१. Cf. Oldfield Op. Cit. I, 23–25 ; Kirpatrik, 283.

९२. JBORS (1936), Part II, H. P. Shastri Catalogue XXXVII says—One Yuthasingh...helped the rise of the Sharquis. No other source is there to support Sharquis connection with Nepal-

## जयस्थितिमल्ल आ ओर तदनन्तर

चौदहम शताब्दमे तीन गोट शक्तिशाली शासक परिवारक संयुक्त होएबाक उल्लेख कैल जा चुकल अछि। कर्णाट सब भटगाँवसँ राज्य करैत छल[१३]। १४१३ ई० क पाटन शिलालेखसँ ज्ञात होइछ जे जयस्थितिमल्लक पुत्र भटगाँवमे कर्णाटक सङ्गे हिस्सेदार छलथिन। जयस्थितिमल्ल अपन पदकें अधिक शक्तिशाली बनौलक आ ओर नेपालकें स्थायित्व देलक। जगज्योतिर्मल्ल ओकर उत्तराधिकारी भेल तकर उत्तराधिकारी ज्योतिर्मल्ल आ ओर तकर उत्तराधिकारी भेल यक्षमल्ल (सन् १४२७-१४७० ई०) यक्ष-मल्ल अपन अधिकारकें समतल मैदान दिशि पसारलक। ओ अपना समयक सबसँ अधिक शक्तिमान शासक भेल आ ओर हुनक मृत्युक पश्चात् नेपाल पुनः छोट-छोट प्रदेशमे बँटि गेल। यक्षमल्लक तृतीय पुत्र रत्नमल्ल मैथिल ब्राह्मणक प्रभावक अधीन छल। रत्नमल्लक उत्तराधिकारी भेलैक अमरमल्ल आ ओर तकर उत्तराधिकारी भेलैक महेन्द्रमल्ल। ओ चानीक मुद्राक व्यव-हार केलनि। ओ चान्दी तिरहुतसँ मंगवैत छल[१४]।

## पश्चात्क सम्बन्ध

पछाति तिरहुत ओ नेपालक बीचक सम्बन्ध नहि रहल। इहो स्मरण राखक चाही जे दरभंगाक राजा महिनाथ ठाकुरकें सिमराँवक राजा गज-सिंहसँ एक बेरि संघर्ष भेल छल आ ओर इहो कहल जाइछ जे ओ मोरंग-

---

९३. I. A., 183, Vol. 16.

९४. Mithila influenced Nepal through different sources. There was a close collaboration between the two states and we know that after the flight of Siva Singh, Vidyapati (1414-16 A.D.) went to Drouwar king Puraditya of Saptari district (Nepal) for protections. He composed his 'Likhanavali' and copied the Bhagwat thera. We further learn that Jagajyotimalla in collaboration with one Maithil, Vangaman, composed a treatise on muslc cslled 'Sangeet Bhaskar'.

वासीक जीवि लेने छलाह[९५]। मैकमनी ( मकमनपुर ) तराइ ओ घाटीक उप-हिमालय मार्गक सटले दक्षिण ओ दक्षिण पश्चिममे छैक। सत्रहम-अठारहम शताब्दमे एहि क्षेत्रक प्रमुख शासकमे सँ एकटा राजा हरिहर छला। दरभंगाक राय राघव सहक युद्ध नेपाल तराइक पंचमा लालाक राजा भूपसिंहसँ भेलैक। भूपसिंह मारल गेला[९६]। सत्रहम शताब्दमे नेपालमे वंशमणि नामक एकटा प्रसिद्ध मैथिल पण्डित छला[९७]। मोरङ्गक राजा त्रिविक्रम नारायणक ओतए मुरारी मिश्र छला[९८]। १७५४ ई० मे नेपालक राजाक दरबारमे पं० दीनबन्धु झा छला। नेपाल दरबार दिशिसँ हुनका किछु जमीन्दारी सेहो प्राप्त भेल छलनि। अठारहम शताब्दमे आबिकें बंजरस तराइ क्षेत्रमे आबि कै शरण लेने छलाह आओर अलीवर्दीकें हुनका सबहिक विरुद्ध उचित कारवाइ लेमए पड़ल छलनि। बंजरस मकवानीपुरक सीमा धरि चलि गेल छल[९९]।

## नेपालक गोरखा

जखन अंग्रेजक इस्ट इन्डिआ कम्पनीक स्थापना बिहार ओ बंगालमे होमए लागल। १७६५ ई० मे नेपालक घाटीमे गोरखा सब शक्तिशाली भ' कें नेपालक राज्य चलबैत छला। राजाक नाम छलैक राजा पृथ्वी नारायण। ई नव शक्ति जे गोरखा सब द्वारा हिमालयक कोरामे स्थापित भेल तकर भविष्य मनन करब योग्य छैक। १७६२ ई० मे बङ्गालक नवाब मीरकासिम एकमात्र हुनक प्रगतिमे गम्भीर प्रयासक सङ्ग बाधक भेल। हुनक सेना बड़ अधलाह जेकाँ मकबरपुरक भीत लग पराजित कैल गेलैक[१००]। मीर

९५. S. N. Singh—History of Tirhut, p. 218.
९६. Ibid 219.
९७. Ibid 152.
९८. Ibid 127.
९९. For details see my work 'History of Muslim Rule'.
१००. Cambridge History of India, V. 377 ; For Mirkasim see my 'History of Muslim Rule'.

कासिमक लक्ष्य महत्वाकांक्षा ओ साम्राज्यवादक नीतिसँ बनल छलैक। ओकर पराजय गोरखा सबकें संगठित हेबाक बाध्य केलक आओर ओ सब नेपाल तराइक सन् १७६८ ई० मे जीतिकें चैन भेल।

## नेपाल ओ अंग्रेज

बङ्गालक नबाब आर इस्ट इन्डिआ कम्पनीक अधिकारीगण नेपालक सङ्ग व्यवसायक सम्बन्ध जोड़बाक अनेक चेष्टा कएलनि परन्तु सबटा व्यथ भेलैक। सन् १८०२ ई०मे नेपालक किछु निम्न अधिकारी (Deputy) ईस्ट इन्डिया कम्पनीक प्रतिनिधि सँ भट करबाक हेतु पटना अएलाह। १८०० ई० मे जखन वेलेसली भारतक गवर्नर-जेनरल छल नेपाल ओ अङ्गरेज मध्य व्यावसायिक संधिक पश्चाते घटना घटए लागल। नेपालक डिप्टी सबहिक साक्षात्कारसँ कोनो स्पष्ट प्रभाव ज्ञात नहि भेल आ ओतुक्का ब्रिटिश अधिकारी Captain Knox वापस बजा लेल गेला[१०१]। नेपाल ओ ईस्ट इण्डिया कम्पनीक मध्यक मतभेद गोरखा सबहिक जागरणसँ विशेष होइत गेल। थौर्नटनक अनुसार नेपाली सरकारक कार्यसब गवर्नर-जेनरलकें कौन्सिलमे मारक्विस वेलेसलीक शासनकालमे संधि विच्छेद सम्बन्धी घोषणा करबाक हेतु बाध्य कऽ देलक[१०२]।

झंझटक समाप्ति एतबहिपर नहि भेल। १८१४ मे गोरखा सबहिक सीमाना ७०० मीलक दूरीपर छलैक[१०३]। परिणामस्वरुप जे युद्ध भेलैक ओ बिहारक भूमिमे। अंग्रेज सबहिक पराजय पेशवा सबकें उत्साहित केलक सारणमे किछु गम्भीर दुर्घटना घटि चुकल छल। एक गोट नेपाली सूबेदार किछु गामक चारूकात घेरा दऽ देलकै, लूट-पाट मचौलक, आर आगि लगा देलक जखन एहि विषयमे जिज्ञासा ओ सूचना होएबा पर छलैक कि तावत् तप्पाक अवशिष्ट गामपर नेपाली सबहिक अधिकार भऽ गेलैक—

---

१०१. K. K. Datta—A survey of Recent Studies on Modern Indian History, p. 92 ff. cf. Champaran Gagetter, p. 26, 31.

१०२. Thornton 'History of British India' IV, 253.

१०३. CHI, V 378.

अधिकारमे लेल गेल गामक संख्या बाइस धरि पहुँचि गेल। कर्नल ब्रैडशॉकें सारण दिशि बढ़बाक आज्ञा भेटलैक[१०४]। लार्ड मिन्टो नेपालक राजाकें एकटा चिट्ठी देलकै। ओहि पत्रक जवाब असंतोषजनक छलैक जाहिसँ ब्रैडशॉ कें आज्ञाक तामिल करबाक हेतु प्रस्थान करए पड़लै[१०५]। तराइ क्षेत्रक पुनः प्राप्तिक हेतु आवश्यक व्यवस्था कैल गेलैक तथा कोशी नदीक पूबमे कैप्टेन बैरेर लेटर के ब्रिटिश सीमाक सुरक्षाक हेतु नियुक्त कएल गेल[१०६]।

युद्ध छाड़ि कें आओर दोसर कोनो अवगति नहि रहि गेल। सेनाक एक टुकड़ी मकवानी होइत सोझ नेपालक राजधानी दिशि बढ़ल। गवर्नर-जेनरल अपन दृढ़ आशा व्यक्त कैने छलाह। एडवार्ड रफेज अपन दल संग तराइ वा तिरहुत कें छोड़ेबाक हेतु चलल, दोसर दिशि ब्रैडशॉ बरहरवा कें जितवाक हेतु प्रस्थान केलक जे तखन तराइक नेपाली सूबेदार परशुराम थप्पाक अधीन छलैक। थप्पा करड़बन्ना गढ़ी दिशि पड़ाएल। हुनका बागमतीकें पार कऽ के खिहारल गेल आर २५ नवम्बर १८१४ कें हुनका मारि देल गेल। सारणक तराइ सुरक्षित छलैक तिरहुतक तराइकें रफेज बिना कोनो प्रतिरोधकें जीति लेलक। दोसर भिड़न्त परसाओमे ६ जनवरी १८१५ कें भेलैक। जेनरल मर्वी डिपोकें जितबाक हेतु बेतिआमे रहि गेला। शान्तिक वार्त्तालाप गजराज मिश्र द्वारा होमए लागल। वार्तालापक अभ्यन्तरमे छल। कपट ओ द्विविधा भाव नेपाली कूटनीतिक विशेषता छल। संधिक अनुसार ई निश्चित भेल छलैक (१८१५ मे) जे नेपालकें ओहि भूमि सबपर दावा कएनाइ छोड़ि देबाक चाही जाहिपर ब्रिटिश सरकारक कब्जा भऽ गेल छलैक। एहि संधिसँ कोनो सन्तोषजनक परिणाम नहि बहरेलैक[१०७]। दूनू राज्यक बीचक बिरोधकें संधिक लोभ शमन नहि कऽ सकलै। ६ फरबरी १८१६ कें डेभिड ओकटरलॉनी मकवानीपुरक तराइक मार्ग दिशि घन घोर शालक जंगल होइत बढ़ल। ओ मकवानीपुरक निकट कैम्प खसोलक। भारी संघर्ष भेलैक। कर्नल केल्ली शत्रुसँ हरिहरपुर पहाड़ीक अधिपत्यकें छीनि लेलकै ब्रिटिश सेनाक मार्च करब तखनहि रुकलै जखन संधिपर दृढ़ीकरणक आश्वा-

---

१०४. Thornton, Op. Cit. IV, 257.
१०५. Ibid 260.
१०६. Ibid, 265, 266.
१०७. Ibid, pp. 297, 298, 301, 302, 324, 332.

सन भेटलै, जे संधि पूर्वहि कएल गेल छलैक। थौर्नटनक अनुसार एकमात्र घृणा करब सएह नेपाली लड़ाइक सम्बन्धमे लॉर्ड मोइरल (मिन्टो) क कएल सब गलतीक मौलिक कारण छलक[१०८] २८ फरबरी १८१६ कें गोरखा सब मकवानीपुरमे पराजित भेल। सुगौलीक संधिपर शोघ्रतासँ अड़ि जाइत गेलैक आओर तखनसँ शान्ति सदाक हेतु स्थापित भेलैक।

## सुगौली-संधिक कारण

आब सुगौली संधिपर विचार करब आवश्यक उपर कहल जा चुकल अछि जे ब्रिटेन आर नेपालक सम्पर्क मात्र व्यवसायपर अवस्थित छल। हिमालयक तलहटी ोे एक शक्तिशाली स्वतंत्र राज्यक अस्तित्व अंग्रेज सब हिक आँखिमे काँट जेकाँ गड़ैत छलन्हि। गोरखा शासक सबहिक नेपालमे बसि गेला पर ओ सब मकबानीपुरक पहाड़ीकें अपना आधिपत्यमे केलक तथा ओतुक्का राजा द्वारा देल गेल कर जेकाँ ब्रिटिश सरकार द्वारा सेहो तलहट्टीक उपजाऊ भूमिक कर ओतबहि मात्रामे दाबा कएल गेल। दाबा स्वोकार कऽ लेल गेल आओर तीस वर्ष धरि गोरखा लोकनि कर नियमित रूपसँ दैत रहलखिन जखन कि १८०१ क संधि सातम धाराक अनुसार एकर अंत भेल। ओनातँ १७९३ ई० मे करपातृक ( Kirpatrjck ) क नेतृत्वमे एकटा मिशन नेपाल पठाओल गेल छला मुदा ओहिसँ कोनो फल तातूकाल नहि बहराएल। १८०१ ई० मे कप्तान नौक्स नेपालमे प्रथम रेजिडेन्ट नियुक्त भेल छलाह। १८०४ ओ १८१२ क मध्य ब्रिटेन ओ नेपालक सम्बन्ध नीक नहि रहल। १८०८ ई० मे मोरङ्ग जिलाक गोरखा गवर्नर सहर्सा जिलान्तर्गत भीमनगर थानापर अपन आधिपत्य स्थापित कऽ लेलक[१०९]। गोरखा गवर्नरक एहि कार्यसँ ब्रिटिश अधिकारी क्षुब्ध भेला आओर नेपालसँ संघर्ष करबाक हेतु तत्पर सेहो। नेपाल ओ ब्रिटिश सरकारक बीच संघर्षक ई एक गोट मूल कारण भेल। तलवारक नोकपर पुनः अपन अधिकारक आपसीक हेतु ब्रिटिश सरकारक अपन सेना पठौलक। १८१० मे गोरखा लोकनि ओ स्थान धरि रिक्त कऽ देलनि मुदा एमहर बेतिआक सीमापर किछु स्थानपर जबर्दस्ती अपन अधिकार जमौलक। अंग्रेज लोकनि एकरो विरोध केलनि आओर बेतिआक जन साधारणो नेपालक एहि आक्रमणाक विरोध केलनि। तखनस लऽ कें १८१४ ई० धरि नेपाल ओ अंग्रेजक बीच संघर्ष चलल आर १८१४ ई० क २८ नवम्बरकें सुगौलीक संधि द्वारा ई संघर्ष समाप्त भेल।

---

१०८. Ibid Pp 337-44; C H I, V, 378.

१०९. तात्कालिक रेकर्डसँ एहि बात पर विशेष प्रकाश पड़ैत अछि।

# मिथिलाक इतिहासपर प्रकाशित प्रो० श्रीराधाकृष्णचौधरीक लेख सबहिक नामावली

| | | |
|---|---|---|
| 1 | Early History of Mithila– | JBRS—XXXVIII—Part 2 |
| 2 | A Peep into the early history of Vaishali— | Journal of the Oriental Studies—Pardi-1950 |
| 3 | Political history of Mithila from 7th Century A.D. to 12th Century A.D. | Journal of Indian History Vol. XXXVI |
| 4 | Some aspects of Socio-economic history of North-eastern India on the basis of epigraphic evidence— | PIHC ( Waltair Session 1953 ) |
| 5 | The Bhars of North Bihar— | SPARK ( 24-2-1952 ) |
| 6 | Karnatas of Mithila— | ABORI—XXXV |
| 7 | The Later Karnats— | To be published shortly |
| 8 | Nanyadeva and his Contemporaries— | PIHC ( 1951 ) |
| 9 | Naulagarh Inscription— | G. D. College Bulletin Series Nos. 1, 2, 3 and 4 for details |
| 10 | Naulagarh Ins. No. 2 – | Do. |
| 11 | Some important colophons and their bearings on the history and chronology of Mithila (1097-1324 ) | Journal of Indian History (1957) |
| 12 | Nepal and the Karnatas of Mithila (1097-1324)– | Journal of Indian History (1958 |

| | | |
|---|---|---|
| 13 | Some recent Discoveries in North Bihar— | JBRS—XLIII-Parts 3 & 4 |
| 14 | Sanskrit Drama in Mithila. | JBRS—XLIII-Parts 1 & 2 |
| 15 | Kusan rule in North Bihar— | Journal of the Oriental Institute (Baroda) 1959-60 |
| 16 | Govindagupta— | Journal of the Oriental Institute (Baroda 1960-61) |
| 17 | The Oinwaras of Mithila | JBRS (1954) |
| 18 | The Bhagirathpur inscription— | PIHC (1955) |
| 19 | *Vidyapati's Purusapariksa*—an important source of India's political history— | Journal of the Oriental Thought (Nasik) |
| 20 | Vidyapati's Faith— | Prabuddha Bharat |
| 21 | A rare Arabic Inscrip- of Ruknuddin Kaikaus from Maheswara— | ABORI—XXXVI |
| 22 | A rare coin of King Rambhadra of Mithila— | JNSI (1958) |
| 23 | Traces of slavery in Mediaval Mithila— | SPARK (1955) |
| 24 | Ajatasatru and Lichchavis of Vaishali – | IHQ (Calcutta) 1960-61 |
| 25 | Prakritpainglam—an important source of Mithila's history— | To be published shortly in the JBRS |
| 26 | Saka-Murunda of North Bihar— | L. S. College Souvenir (1959) |
| 27 | History of Begusarai— | Ramcharitra Abhinandan Granth (1957) |
| 28 | मिथिला का संक्षिप्त राजनीतिक इतिहास— | Do |

29 Niddhanpur Copperplate — PICH (1959)
30 Panchobh Copperplate— PICH (1960)
31 Kirtilata and Jaunpur— Journal of the U. P. Historical Society (1957-58)
32 Gangeyadeva of Tirhut- Journal of the Ganganath Jha Research Institute—(1957)
33 King Harisimha of Mithila ( a replp to Dr. R. C. Mazumdar ) To be published shortly in the ABORI
34 The Chakwars of Begusarai — G. D. College Bulletin No. 3
35. Bihar & Nepal— Do No. 4

—एकर अतिरिक्त History of Muslim Rule in Tirhut प्रकाशित भए रहल अछि। हमर History of Bihar मे मिथिलाक इतिहास पर वेश प्रकाश देल गेल अछि। मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहासक पाण्डुलिपि तैयार अछि। हमर Select Inscriptions of Bihar मे मिथिलास प्राप्त शिलालेख सभहिक संग्रह एकठाँ भेटत।

—पटना स्थित काशीप्रसाद जायसवाल शोध संस्थानसँ प्रकाशित होमऽवला "बिहारक बृहत् इतिहास' मे हम निम्नलिखित तीनटा अध्याय मिथिलाक इतिहास पर लिखने छी :

प्रथम भाग—

अध्याय २२ Political History of North Bihar from 200 B. C. to 300 A. D.

अध्याय ३५ Political History of North Bihar from 550 D. C. to 1206 A. D.

द्वितीय भाग—

अध्याय ४—Political History of Mithila from 1206 to 1324 A. D.

# वैदेही-समिति

दरभंगाक

एवं सर्वथा नवीनतम प्रकाशन

मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता [ दू भाग ] म० म० डा० श्रीउमेशमिश्र २)

●

मैट्रिकसँ एम. ए. धरिक मैथिली पोथीक जिज्ञासा एतैसँ करू

●

| | | |
|---|---|---|
| चयनिका | —श्रीकृष्णकान्तमिश्र | १) |
| गप्पक फोड़न | —श्रीहरिमोहनझा | ।) |
| चानो दाइ | —श्रीसोमदेव | ३) |
| मिथिलाक राजनीतिक इतिहास | —प्रोफेसरश्रीराधाकृष्णचौधरी | १॥) |
| मिथिलाका इतिहास | —प्रोफेसरश्रीकृष्णकान्तमिश्र | १॥) |
| मैथिली साहित्यक इतिहास | —प्रोफेसरश्रीकृष्णकान्तमिश्र | ५) |
| राली ( हिन्दी ) | —श्रीप्रेमशंकरखरे | १॥) |
| नवतुरिआ | —श्रीयात्री | १) |
| रेखाचित्र | —प्रोफेसर श्रीउमानाथझा | २) |
| हर्षनाथ-ग्रन्थावली | —श्रीऋद्धिनाथझा | १) |
| श्रीकृष्णजन्म | —म० म० डा० श्रीउमेशमिश्र | १॥) |
| चित्रा | —श्रीयात्री | २) |
| विश्वभूषण | —श्रीऋद्धिनाथझा | १) |